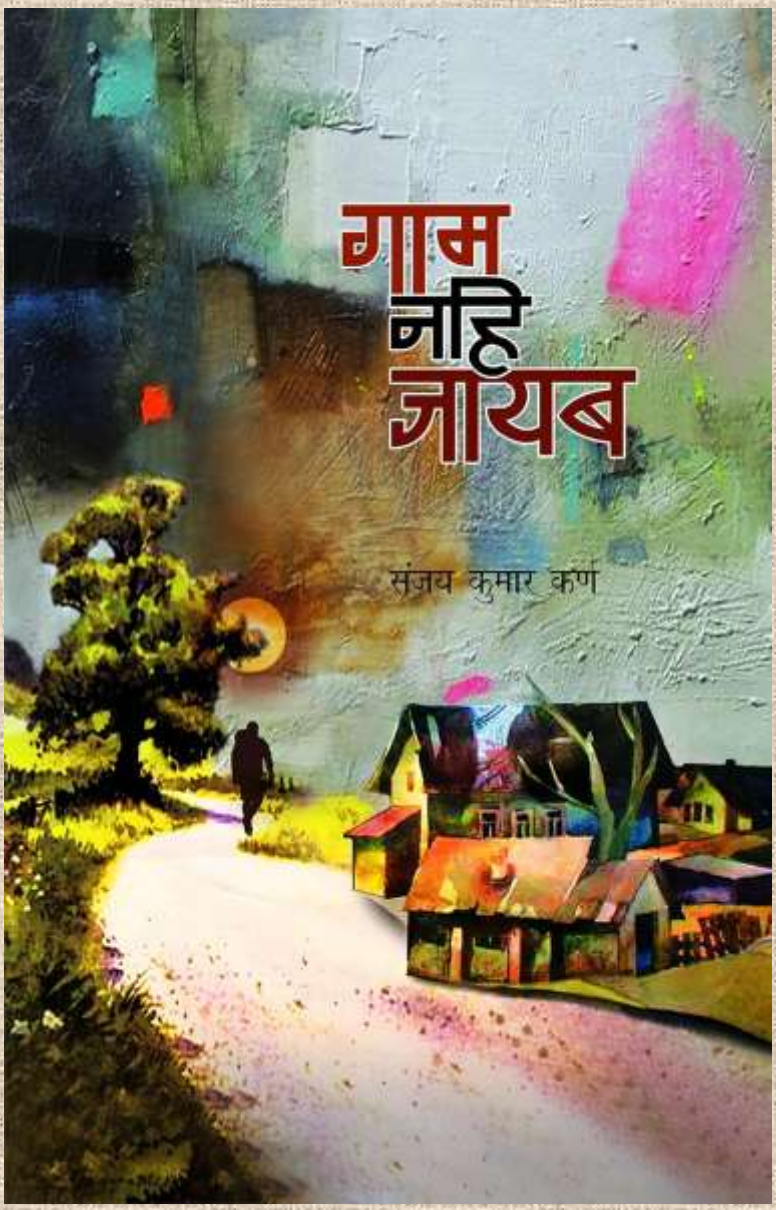
गाम
नहि
जायब
संजय कुमार कर्ण

[illegible]

[illegible]

[illegible]

गाम नहि जायब

[illegible]

समय केर चक्र कनेक आओर बलिष्ट भेल, ओ बालक आब गृहस्थ जीवन मे प्रवेश कयलक। विवाहोपरान्त पिता केर दर्जा प्राप्त भेलनि। ओकर सब ध्यान अपन एहि नवनिर्मित परिवार तक सीमित भऽ गेल। 'स्व' तत्व आब "स्वार्थ" मे परिवर्तित भेल। जे परिवार हुनका अपन निज परिवार तक पहुँचौलनि ओ आब बांतर लागऽ लागलनि। ओ येन-केन-प्रकारेण सबटा सुःख आ सम्पत्ति अपन एहि नवनिर्मित परिवार तक सीमित राखऽ चाहैत छथि। एतबा नहि, ओ आब एहि तरफ ध्यान देलनि जे पुरान परिवारक सदस्य हिनक निज नवनिर्मित परिवार सँऽ बेसी तरक्की तऽ नहि कऽ रहल अछि। अपन कमायल के कहत, ओ तऽ माता-पिता द्वारा अर्जित सम्पत्ति तक हड़पि लेब' चाहैत अछि। पुरान सदस्य अगर कष्ट मे छथि तऽ एहि सँऽ ओकर मन आनंदित होमऽ लागल। वाह रे! धरती पर सब सँऽ बुद्धिमान प्राणी। तो एतेक निष्कृष्ट कोना भऽ सकैत छह! की समय केऽ एतेक शक्ति अछि जे मानव हृदय पर लिखल अमिट छाप मेटा कऽ नया अक्षर लिखल संभव होय। की एना नहि भऽ सकैत छल जे ओहि अक्षर संगे नव अक्षरक रचना कयल जा सकैछ? की मानव हृदय एतेक छोट अछि जाहि मे नव निर्माण हेतु पुरान तत्वक सर्वनाश आवश्यक अछि? यदि नहि, तऽ मनुष्य एतेक काठ हृदय किएक भऽ गेलाह? अपन भाय-बहिन, माँ-बाप संगे परिवारक नव सदस्यक स्वागत, मनुष्य किएक नहि कऽ सकत?

...एही पुस्तक सँऽ

संजय कुमार कर्ण

मूल रूप सँ लदहो (बिरौल), दरभंगा निवासी। अत्यंत सामान्य ओ सीमित संसाधन मध्य विद्यार्थी जीवन यापन। ल.ना.मिथिला विश्वविद्यालय सँ विज्ञान स्नातक डिग्री उपरांत रक्षा मंत्रालय अधीनस्थ सशस्त्र सेना मुख्यालय, दिल्ली मे सेवा प्रारंभ। सम्प्रति उप-निदेशक पद पर कार्यरत। सामान्य न्याय आओर मानवीय मूल्य प्रति उद्विग्नता द्वारा कानूनक अध्ययन हेतु प्रेरित भऽ दिल्ली विश्वविद्यालय सँ ली मे डिग्री प्राप्त।

समकालीन सामाजिक विसंगति पर अपन लेखनी सँ पाठकगणक ध्यान आकर्षित करऽ के प्रयास प्रथम ध्येय। अत्याधुनिकता केर सर्वाधिक प्रकोप मनुष्य मे संवेदना केर ह्रास अछि। प्रकति ओ मनुष्य के अन्नयोन्याश्रय संबंध तक कुप्रभावित भेल अछि। भौतिकतावादक एहि दौर मे सामाज सुधार आंदोलन के पुर्नस्थापना मे विश्वास। उपन्यास लेखन मे पदार्पण करैत मैथिल समाज मे व्याप्त स्वार्थ, ईर्ष्या आओर अंधविश्वास केर परिणामस्वरूप पारिवारिक विघटन पर वर्त्तमान उपन्यास मे मार्मिकता सँ चिंतन।

वर्त्तमान मे मैथिली ओ हिंदी उपन्यास लेखन मे तल्लीन ।

संपर्क : 9868739967 • ई-मेल : karnsk301@gmail.com

अनुराधा प्रकाशन
1193, पंखा रोड, नांगल राया, निकट डी2ए
जनकपुरी, नई दिल्ली-110046
फोन : 011-28520555, 9213135921, 9873080170
www.anuradhaprakashan.com

ISBN 978-93-85083-42-6
₹ 250.00

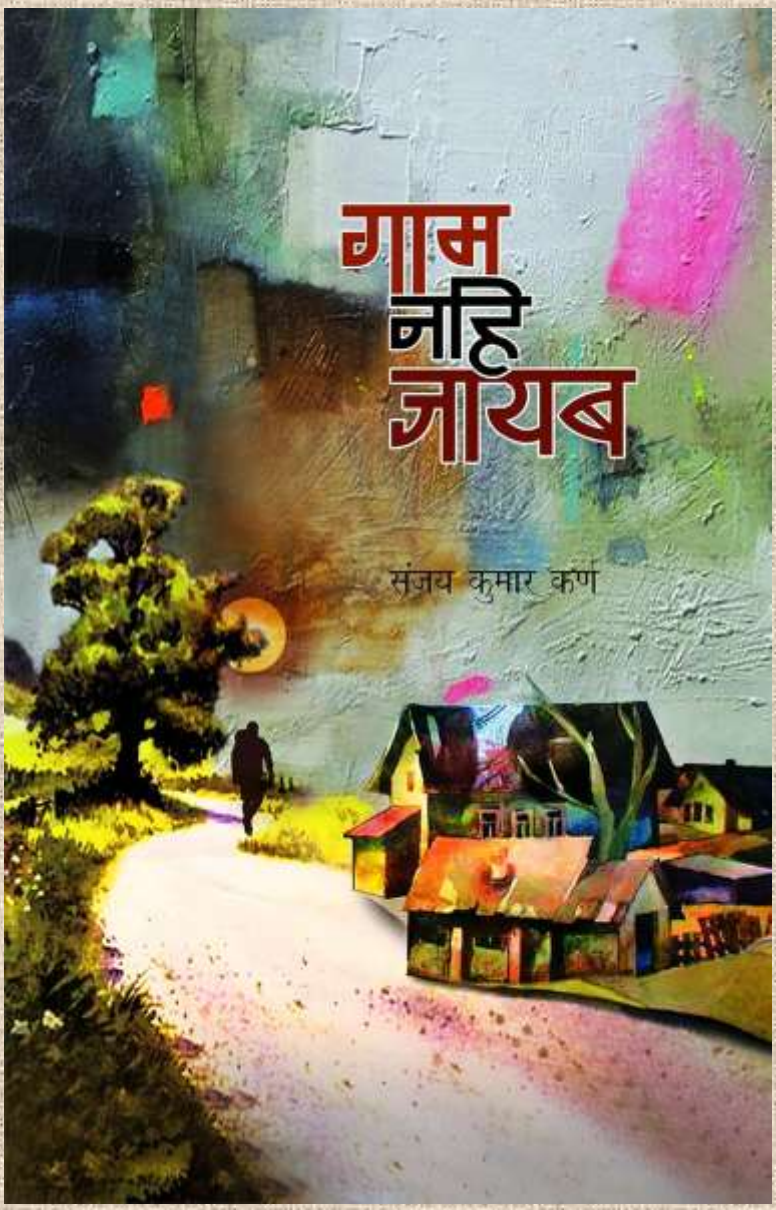
गाम
नहि
जायब
संजय कुमार कर्ण

गाम नहि जायब

मैथिली उपन्यास

संजय कुमार कर्ण

२०१६

निःस्वार्थ निष्कपट और सादगी केर प्रतिमूर्ति भ्राताद्वय स्व श्री रामानन्द लाल कर्ण ओ कक्का स्व श्री ब्रह्मानन्द लाल कर्ण एवं अखण्ड परिवार मे हुनक अटूट आस्था के समर्पित···

लेखकक' अंतर्मन सँ

कहल जायत अछि साहित्य समाजक दर्पण थिक । एहि उपन्यासक निर्माणकाल मे हम उक्त कथन केऽ अक्षरशः सत्य अनुभव कयलहुँ । मैथिल समाज मे व्याप्त कुरीति, स्वार्थ, ईर्श्या, आपसी फूट आओर खास कऽ अंधविश्वास कोढ़ बनि चुकल अछि । समाजक निम्न स्तरक' व्यक्तिक' संगहि एहि चक्रव्यूह मे पढ़ल–लिखल एवं उच्च वर्गक व्यक्ति सेहो फंसि जायत छथि । जोग–टोन, झाड़–फूँक, डायन–जोगिन केर अस्तित्व पर विश्वास–अंधविश्वास एक अवांछनीय सत्य अछि । एकर सत्यता केर अन्वेषण पाठक पर छोड़ि रहल छी, मुदा एकर कुप्रभावक एहसास, वर्त्तमान उपन्यास अवश्य कराओत ।

समाज मध्य व्याप्त कुरीति, कुप्रथा पर व्यंगात्मक कुठाराघात करि संदेश देब कालजयी उपन्यास ''कन्यादान'' सिखाबैत अछि । ''गाम नहि जायब'' एहि कड़ी मे एक प्रयास थिक, से तऽ असंभव, मुदा ''कन्यादान'' आ स्व. हरिमोहन झा केर प्रति श्रद्धांजलि अवश्य सिद्ध होयत । पारिवारिक एकता वर्त्तमान समाज मे प्रतिक्षण खंडित भऽ रहल अछि । ऐशोआरामक जिंदगी बिताबऽ हेतु लोक क्षुद्रता केर पराकाष्ठा तक जा रहल छथि । तखन प्रश्न उठैत अछि – ''कि बिना स्वार्थ ओ ईर्ष्या केर व्यक्ति आगाँ बढ़ि सम्मानित जीवन, आजुक समाज मे नहि बिता सकैत अछि'' ? एहि तरहक संदर्भित प्रश्नक

हल ताकि रहल अछि ‘‘गाम नहि जायब’’ ।

अहां के एहि सारगर्भित प्रश्नक उत्तर ताकऽ मे अगर प्रस्तुत उपन्यास सहायक सिद्ध भेल तऽ हमर प्रयास सार्थक होयत ।

.....

आभार

कोनो व्यक्ति जखन पहिल बेरि गंभीर लेखन केर विचार सॅऽ उपन्यास लिखऽ हेतु तत्पर भेलाह तऽ सर्वप्रथम जाहि चीजक आवश्यकता होइछ ओ थिक – ''आत्मविश्वास'' । एहि आत्मविश्वास केऽ बरकरार राखऽ मे उत्प्रेरक केर कार्य कयलक अछि हमर धर्मपत्नी श्रीमति लता कर्ण द्वारा हमर सक्षमता पर अटूट विश्वास । ओ सदिखन हमर कार्यक्षमता के प्रशंसक रहल छथि। एहि विश्वास के निर्वाह करैत–करैत कखन ई उपन्यास पूर्ण भेल ज्ञात नहि । अतएव हम प्रथमतः हिनक आभारी छी।

हम सदिखन आभारी छी ओ सभ मूर्त्त आओर अमूर्त्त पात्र सभहक जिनक क्रिया–प्रतिक्रिया सॅऽ प्रेरणा ग्रहण कऽ ई उपन्यास अपन कथावस्तु ग्रहण कयलक ।

जाहि लगन ओ तन्मयता सॅऽ पांडुलिपि के टंकण ओ परिशोधन मे बनगॉव, सहरसा निवासी
श्री अजय कुमारजी योगदान देलनि ओ अलग सॅऽ धन्यवादक पात्र छथि। श्री अजय कुमार सौम्य, शांत ओ मृदुभाषी व्यक्तित्वक प्रतिरूप होयबाक संगे हमर सहकर्मी सेहो छथि। हिनक निःस्वार्थ सहयोग हेतु हम अत्यंत आभारी छी।

अंततः ..... के सहयोग ओ क्रियाशीलता के बिना पुस्तकक प्रकाशन असंभव छल। अतः ..... के हम हृदय सॅऽ आभारी छी ।
पाठकगणक निस्वा

पारिवारिक स्नेह ओ एकता केऽ समर्पित

गाम नहि जायब

१

आई थुथमा साहेब ऑफिस नहि जेताह । काल्हि तऽ गेले छलाह । रोज–रोज एके तरहक कार्यक्रम तऽ बोर भेनाई स्वाभाविक अछि । ओनाहुँ एक बेरि ऑफिस पहुँच जाऊ तऽ सार जा धरि सांझ कऽ सात नहि बाजि जाय वापस कदम नहि खींचऽ दैत अछि । कऽ लेथु जे करबाक छनि – बेसी सँऽ बेसी एक दिनक पाईए ने काटताह, काटि लेथु । ककरा परवाह अछि । ताहि दुआरे कि हम अपन शरीर केऽ रूई जेकाँ धुनवा ली । आओर फेरि ई बात ककरो पता कोना चलत जे पाई कटल अछि । कहि देबनि जे आई बॉस के पटा नेने छी । से सब विचारैत ओ अखबार मे मग्न छलाह । अखबार मे कोनो विशेष खबर पर हिनक ध्यान नहि रहैत छलनि । ओ तऽ कोनो एहन मौका केर तलाश मे रहैत छथि जे जादुई चिराग सिद्ध भऽ सकय । पाई तऽ विशेष भेटय मुदा काम कम हो । मन होईन जे एहन तरहक कोनो संजोग भेटय जे मुँह धऽ मारी ऐहन नौकरी के । जेल बना कऽ राखि देने अछि, बैल जकाँ जोताईत रहि – ने नीक सँऽ खाइ–पीबैक समय, ने कोनो गऽप–सरक्काक' हेतु मनमर्जी, की एकरे नाम जीनाई थिक ?

अंग्रेजी अखबार सँऽ थुथमा साहेब के विशेष स्नेह छनि । एहि मे विज्ञापनक' भरमार रहैत अछि । सब तरहक लोक हेतु सैकड़ों अवसरक पॉति बनल रहैत अछि । फेरि अंग्रेजी अखबार पढ़ैत किओ देखत तऽ शान मे बढ़ोतरी से होईत अछि । महीना केऽ आखिर मे बेचि लिअ तऽ बिल चुकता कऽ के दू पैसा जेब मे बॉचि जायत । ईएह उधेरबुन मे छलाह कि श्रीमति योगमाया के कर्णभेदन आवाज

सॅऽ अवचॅक भेलाह – कतऽ सूतल छी ? आई ऑफिस नहि जेबाक अछि ? जा धरि चारि गोटा मिलकऽ हिलाऊ नहि –की मजाल टस–सॅ–मस भऽ जेताह । मुदा, नहिं–नहि : हिनका काहिल के कहि सकैत अछि ? अखन दू थार भरि कऽ राखि दिऔन तऽ ऐना सोखि लेताह जेना पियासल हाथी बाल्टिक–बाल्टी अछिंजल सोखैत अछि । एहि तरहक अग्निबाण सॅऽ अभ्यस्त थुथमा साहेब आस्ते सॅऽ बजलाह – आई छुट्टी अछि । एँ ! आई कथीलेल पुनः छुट्टी भऽ गेल । पिछलो सप्ताह एहिना अहींक लेल छुट्टीक घोषणा भेल छल । श्रीमतीक ई प्रतिवाद केऽ सम्हारैत पुनः चुप्पी तोरैत छथि – नहि, बॉस सॅऽ बात भऽ गेल अछि – सॉझ खनि फोन सॅऽ रिपोर्ट द देबनि । आब माया प्रतिवाद उचित नहि बूझलनि । सोचऽ लगलीह जे चलू घर मे रहताह तऽ काज मे किछु हाथ बॅटौताह । अहॉक ई बॉस बड़ नीक लोक बुझना जाईत अछि । माया केऽ द्वारा बॉसक प्रशंसा पर अपन विरोध दर्ज करैत बजलाह – अरे की खाक नीक लोक अछि ? जखन अहॉक मन होयत तऽ मना कऽ देत आ दसटा काज गिना देत । अहॉक मन पर की प्रभाव पड़त ताहि सॅऽ ओकरा कोनो लेब–देब नहिं छैक । ई तऽ बूझू हमर काजे एहन अछि जे हमरा सॅऽ दाएँ–बायें बेसी नहि कऽ सकैत छथि जे किछु सॉस लऽ पाबैत छी ।

त.... अहॉक मन पर ओ चलऽ लागल तऽ की ऑफिस चलि सकत ? अहॉ कहिया कहबैक जे आई हम ऑफिस आबि रहल छी । एहि कंटक मे बेसी नहि पड़ि थुथमा साहेब पुनः शांत भऽ गेलाह । एतबा मे माईक फोन बाजऽ लागलनि । ओ बेचारे फोन लऽ बाहर भगलाह । आध घंटाक उपरांत वापस अयला पर माया पूछलनि – आब की शगूफा छूटल । तऽ आबऽ बला बिहारि कऽ

थामऽक शक्ति बटोरि कऽ कहैत छथि – ''बाबूजीक तबियत ठीक नहि छैक । डाक्टर सॅऽ देखौबाक लेल बीस हजारक खर्च होयत से भेजबाक आग्रह कयलनि अछि'' । एतबा सुनतहि महारानीक धैर्यक बॉध टूटि गेलनि, मुखमुद्रा लाल भऽ गेलनि आ प्रश्नवाचक मुद्रा मे पूछैत बलजीह – आ अहॉ मानि लेलयनि ? आदेश तऽ ऐना दैत छथि जेना बेटा के पढ़ा कऽ कलक्टर बना देने होथि । ऐहि ठाम तऽ लूटि लाबि कूटि खाय । बाप–रे–बाप, नहि जीबऽ देथि । हम बूझैत छियैक हुनक सब कुटिल चालि । ई रूपया ईलाजक हेतु नहि मांगल गेल अछि । ई तऽ पुतोहुकऽ पर कतरऽ हेतु उपक्रम थिक, जे कहीं मौज–मस्ती नहि करऽ लागए । ने रहत बॉस और नै बाजत बॉसुरि । पिछलो बेरि दस हजार हमर लाख मना कयलाक बादो भेजल गेल छल जे ऑखिक आप्रेशन छैक । की भेल ? आपरेशन हेतु मांग जारी रहि गेल आ रूपया अहॉक बहिनक गहना बनि चांद सन चमकि रहल अछि । किएक तऽ बाबूजी पहिल बेरि खाली हाथ कोना जयतथि ? मर तोरी ! तऽ हमरे गृहस्थी उजारि कऽ बेटीक घर भरऽ केर उद्योग अछि । आ ई माटीक माधो सबटा बूझिओ कऽ मुँह किऐक खोलताह – तऽ घसैत रहू भरि जिंदगी चानन–चनरौटा । चाहे जे भऽ जाय एहि बेरि अगर रूपया ऊखरि मे गेल तऽ सोचि लिअ – हम ताधरि अन्न–जल ग्रहण नहि करब जाधरि हमर मंगलसूत्र नहि बनि जायत । सोचने छलहूँ जे बोनस भेटतनि तऽ शिमला घूमि आयब – बियाहक बादे सॅऽ आब–तब, अग्हेस–अग्हेस केने छथि । नहि–नहि ; ई सिद्ध भऽ गेल – जा धरि ओ जिबैत रहतीह हमरा सबके सुख–सुविधा सॅऽ नहि जीबऽ देतीह । सबटा खेल चौधराहट हेतु अछि, जे कहुना पुतोहु के मुट्ठी मे राखल जाय । आर केयो तऽ किछु बाजऽ बला नहिए अछि । हिनक सरकारक विरूद्ध ढाढ़ एकटा

हमहीं भऽ सकैत छी । तऽ दूर रहितो हिनका अपना पर अगर निर्भर कऽली तऽ की मजाल जे फूड्स बन्दूक भटर–भटर कऽ सकत । लेकिन बुझि लिअ कोनो हालत मे हम हुनक जिनगी बसर नहि कऽ सकैत छी । ओ चाहैत छथि – कमाकऽ सब पैसा गाम पर भेजल जाय, अपन अलग गृहस्थी पर खर्च सिर्फ सॉस लेबाक हेतु जे जरूरी अछि, सेह होय । लेकिन हम अपन जिनगी अपन मुताबिक जीयब । ओ भरि जींनगी की कयलथि, गाम पर टूटलि मरैया ताहि मे चारू कात जाल जागल । कियो आबि गेल तऽ भायजीक दलान देखाकऽ कहि दिऔन हमरे छी । हुनका की पता चलतनि – कि इ सब मनुक्ख होइत–होइत रहि गेलाह । अखन निर्माण प्रक्रिया चलिए रहल अछि । अगर हम एकर विरूद्ध जीवनक सब सुख–सुविधा चाहैत छी तऽ कोन अपराध भेल ? फेरि हुनको रूपया कोना घटलनि ? बाबूजीक पेंसन, उपजा–बारी बेचि कऽ जे पैसा आबैत अछि से कतऽ गेल ? परञ्च अहॉक भूसा भरल माथ मे किछु घुसय तखन ने – जे कोन खेल खेलल जा रहल अछि ।

अपन भरास निकालि कऽ माया शांत भऽ गेलीह । ओ बूझैत छलीह जे किछु कऽ लिअ, महाराज पर कोनो प्रभाव नहि पड़ बला अछि । ओ किछु नहि बाजि सकैत छथि । चोरिओ–छिपे किछु–ने–किछु पाई तऽ पानि मे जयबे करत । परञ्च अपन खेत चरैत देखिकऽ कोन किसान चुप बैठ सकैत अछि – ओ हाहाकार तऽ करबे करत । चारि बरस पूर्व अपन विवाह सॅऽ धरि आई तक हिनक जीवन मे मात्र एक गोट घटना छल जाहि सॅऽ ओ संतुष्ट भेल छलीह ओ छल रोहित केऽ जन्म । रोहित केऽ जन्म भेला सॅऽ योगमाया कऽ किछु भरोस भेलनि जे पुत्रक प्रताप सॅऽ दबल आकांक्षा पूर्ण भऽ सकत । पतिक भरोसे कतेक नेहाल सॅऽ सनाथ भऽ सकैत

अछि से तऽ देखिए रहल छी। कतेक मनोरथ लऽ कऽ हिनक घर मे पैर रखलहूँ । अयला पर पता चलल हिनकर घर मे पुतोहू नहि, पत्नी नहि, भावज नहि – सिर्फ एक नौकरानीक' जरूरत छलनि । आब कऽ लिअ सौख–सेहन्ता । कहल गेल छल लड़का बड़ कमा रहल अछि । पढ़ब–लिखब मे तऽ कोनो जोड़ नहिं छनि । खेत–पथार, उपजा–बारी ततेक जे समेटऽ हेतु दूटा जऽन रोज चाहि । सोचलहुँ सरकारी नौकरी नहिओ छैक तऽ की हेतैक, कोनो तरीके सम्पन्न रहबाक चाही । स्वप्न टूटल आ एहन चमरछोंच मे पड़लहुँ जाहि सँऽ बाहर जायब असंभव । हिनक घर मे तऽ जतेक झूठक उपज होइत अछि ततेक अन्न होईत तऽ आई हमर भाग्योदय छल । दुरागमन भऽ एकगोट टूटल मरैया मे पहुँचलहुँ । कहल गेल सासुर छी, घोघ तानि लिअ । किएक नहि तानब, ई सब नजारा जतेक कम देखब हमरा हृदय लेल ततेक नीक होयत । हम तऽ कहैत छी जे घोघ तानबाक प्रथा शायद एहि हेतु प्रारम्भ भेल होयत जे कनिया लग सब बात कने देरिए सँऽ खुलि सकय । पानिभरिनी दस टाका एडभांस मांगैत छलीह ताहि हेतु माँजी ततेक बात कहलथिन जे बेचारी बाढ़ैन फेंकि कऽ भागल आ कहैत छथि जे दूटा जअन सदिखन लागलै रहैत अछि । वियाहक पराते लोक सब लग ई कतेक गप्प देने छलाह । कोन डिग्री छल जे हिनका नहि छलनि। ई तऽ रिसर्च कार्य सँऽ समय निकालि बियाह करबाक एहसान कयलथि । लोक किएक नहि मानत, किएक ककरो पर शंका करत ? फेरि जखन अहाँ लैपटॉप सँऽ सिर्फ उत्तर देबाक हेतु मुँह उठाकऽ बाजब आ पुनः लैपटॉप मे अंतर्धान भऽ जायब तऽ नीक–नीक लोक गच्चा खा लेताह । भरि अंगना अनोर भऽ गेल जे लड़का बड़ पैघ जगह सँऽ आखिरी पढ़ाई कएने छथि । हिनका लग टिकऽ बला तऽ बड़को पाहुन नहि

छथि । आफिसर भऽ गेला सॅऽ कि विद्वता आबि जाईत छैक ? कहल जाईत अछि – स्वदेशे पूज्यते राजा, विद्वान सर्वत्र पूज्यते । हम तऽ सातम आसमान मे उड़ऽ लगलहुँ । हह – आब दिन फिरल –नहिरा मे लोक सब हमरा हरमुठाह बूझैत छल । ओहुना पॉच भाय –बहिन मे सबसॅ छोट भेनाई कोनो अपराध सॅऽ कम अछि कि ? ताहू पर गोर–नार बहिन सबहक बीच मे श्यामवर्ण । हमर खिलाफत मे तऽ भगवान जेना जन्महि सॅऽ छथि । मेहनत बला जतेक काज घर मे होए सभ माया करतीह । बीस–बीस गोटाक रोटी बनाएबाक होए कि चौक पर जा कऽ आटा पिसायबाक होए, माया तऽ अछिए । दूनू पैघ बहिन तऽ अतिसुंदर, सुशील आ सोख छथि, हुनका सॅऽ काज कोना सम्हरतनि । बांकी तेसर तऽ पढ़ऽ मे बीहड़ छथि, हुनकर पढ़ाई मे उछन्नर करऽ बला केऽ तऽ खैर नहि अछि । रजनी रहबो करथि बड़ होनहार । प्रथमे वर्ग सॅऽ अपन किलास मे प्रथम रहैत आयल छलीह । तऽ घर कोना–चलत, बाबूजी तऽ अपन मुंशीगिरी मे ततेक व्यस्त छलाह से सांस लेबाक फुरसत नहि छलनि । आ यदि से नहि करताह तऽ एतेकटा परिवार कोना चलत । लऽ दऽ कऽ एगो हमहीं तऽ छलहुँ कायस्थक परिवार मे सबसे छोट । ना नुकुर के तऽ कोनो गुंजाइसे नहि छल । यएह आस छल जे नीक घर वियाह भऽ जायत तऽ एहि दिनचर्या सॅऽ राहत भेटत । एक अविवाहित कन्या यदि नीक घर–वर चाहैत छथि तऽ कोन अचंभा भेल । तीनू जेठ बहिन कऽ विवाह नीक घर परिवार मे भेल अछि । ओ सभ नहिरा सॅऽ बेसी पद्यमिनी तऽ वियाह कऽ बादे भऽ गेलीह । तऽ फेरि हम कोन टूटल फूल छलहुँ ? आब ज्ञात भेल जे नहिं ! एके हाथक सभ आंगुर की बराबर होईत छैक । कपार बॅटैत काल ब्रह्माजी केऽ मन मे छल–प्रपंच अवश्ये रहल छलनि, नहि त हमर कोन दोख

? बाबूजी तऽ चारि साल तक नींक सॅऽ नीक लड़का देखऽ हेतु एड़ी–चोटी एक कऽ देलनि । दू–बेरि तऽ लड़का बला देखि कऽ मुकरि गेल । कोनो सोपनरी पकड़ऽ हेतु निकलल होयताह । आखिर कार श्री रामाकांत दास राजी भऽ गेलाह । पैघ सुपुत्र श्री हीराकांत दासक संग कथा निश्चित भेल । आनन–फानन मे विवाह सम्पन्न कराओल गेल । लड़का देखऽ–सुनऽ के जरूरत हुनक विद्वता केऽ, हुनक बॉचल गेल चमक केर आलोक मे निरर्थक बुझना गेल । मॉ कहबो केलनि जे एक बेरि लड़का के थाह–पता कऽ लितिऐक । तऽ बाबूजी कहलथि – आ ओ सब जखन अहॉक थाह–पता लेबऽ लगताह तखन कतऽ जायब । सिमरी बला कथा बिसरि गेलिऐक – देखि गेल, शोभा–सुंदर भऽ गेल । आ तेसर दिन कहबी पठौलक जे अखन बालक कथा करऽ हेतु तैयार नहि छथि । हम माफी चाहैत छी । तऽ की कऽ देलियैक माफ ? पता चलल पिछला मास ओहि बैंक मनेजर केऽ विवाह बी.डी.ओ. साहेबक बेटी सॅऽ सम्पन्न भेल । लड़की तऽ आखिरी सुंदर अछि । आफिसर परिवारक' बेटा–बेटी केऽ पढ़ब–लिखब संदेहात्मक तऽ नहिंए होइत अछि । अपन माया कऽ देखू आ भाग मनाऊ जे एतेक प्रबुद्ध लड़का बिनु मान–मनौवल केऽ तैयार भऽ गेल छथि । मॉ चुप भऽ गेलीह – गीत–नाद शुरू भऽ गेल । देखैत देखैत हमर अरमान, पसाहिनक रंग संग पीयर भऽ गेल । हमर सोचक उड़ान एक अत्यंत पिछड़ल बज्र देहात पॉकिपुर केऽ एक एहन माटिक महल मे आबि कऽ कैद भेल जाहि मे कोनो ठोस चौखट तक नहि छल । सब व्यवस्था तात्कालिक – जेना आई काटि लिअ – काल्हि तऽ कतहुँ जयबाके अछि । धोती–चादर तानि, परदा केऽ व्यवस्था अवश्य कएल गेल । एहि परदा मे एहना बूझि पड़ैत छल जे किओ बेपर्द कऽ देलक । एहि प्रकरण मे लड़का बला

जितलाह कि लड़की बला – से तऽ तर्कक विषय थिक मुदा अकाट्य सत्य ई जे हमर हार भेल छल । ज्ञात भेल जे हीरा बाबूक कथा सेहो दू बेर टूटल छलनि । अवश्ये ने ओ सब चटपट तैयार बैसल छलाह । हीरा केऽ चिन्हब तऽ जौरहीए कऽ काज थिक, से एक बेरि फेरि सिद्ध भऽ गेल । मन केऽ तसल्ली देबऽ बला एक मात्र विषय छल जे चलू किछु दिन एहि पॉकिए मे काटि लिअ – लड़का तऽ दिल्ली में नौकरी करैत छथि । लड़ियो–झगड़ियो केऽ एहिठाम सॅऽ निकलबाक एक अवसर तऽ अछि । फेरि देखल जयतैक । कियो टोक देबऽ बला तऽ नहि रहत, सब बात मे दखल–आजुक जुगमे के बरदास्त करतनि ? आ बर लग नहि रहब तऽ कि हुनक लाग–भागक चाकरीए करबाक हेतु विवाह भेल अछि ?

योगमाया कऽ सब आशंका निर्मूल नहिं छलनि । गायत्री देवी पति केऽ रिटायर कयला बाद सपरिवार गाम आबि बसि गेल छलीह अपन खेत–पथार, बारी–फुलवारीक देखभाल करक चिंता सॅऽ मुक्त रहक हेतु । दोसर कोनो उपाय रहबो नहि करनि । रामाकांत बाबू पोस्ट विभाग में सामान्य क्लर्क रहथि । तीन–चारि साल पर बदली भऽ कऽ शहर–दर–शहर घुमैत रहलाह एयह सोचि कऽ जे रिटायर भऽ गाम बसि जायब । गाम पर पूरखाक अर्जल जायदाद छनि । दू कमरा केऽ भीतक दीवार पर विभिन्न जगह सॅऽ टूटल खपरा बला चाऽर । दीवार झड़ि–झड़ि कऽ अपन उम्रक दास्तान आ बाप–दादा द्वारा ढ़ाढ़ रहबाक हेतु दिआओल गेल शपथ कानि–कानि कऽ कहि रहल छल । उपजा–बारी बेचि कऽ नीक पाई आबि जाइत छलनि, मुदा से तऽ गायत्री देवीक संरक्षण मे आपात–कालक ध्यान राखबाक तर्कक साथ सुरक्षित भऽ जाइत छल । पतिक बीमार रहला सॅऽ हुनका एहि बातक निर्विरोध नैतिक

अधिकार प्राप्त भऽ गेल छलनि । ओ सभ आब ई सोचऽ लागल छलाह जे हमर–सबहक तऽ कटिए गेल, जँ हीरा आ राधा महल ठाढ़ करऽ चाहैत अछि तऽ कऽ
लिए । गायत्री देवी पुतोहु कऽ अथाह छूट देबक' पक्षधर नहि रहथि । प्रारंभहि सँऽ अगर डर नहि देखाओल गेल तऽ अंत धरि अँही डरऽ लेल तैयार रहूँ – एहि सिद्धांत पर ओ पूर्ण विश्वास करैत छलीह । दुरागमनक प्रातहि कनियाक सम्पूर्ण गहना–जेवर, कपड़ा लत्ता पर हुनक छलपूर्वक अधिकार भऽ गेल छलनि । कोनो खेलक प्रारंभ अगर विजयी चाल सँऽ भेल तऽ मनःस्थिति आश्वस्त आ भाव–भंगिमा विश्वास सँऽ भरि जायत अछि – गायत्री देवी एकर अपवाद नहि छलीह । मुदा हिनका ई भान नहि छलनि जे योगमाया अकेले नहि आयल छलीह, हुनक संग हुनक अरमानक बारात आयल छल । ओ तऽ कुंठाग्रस्त जीवन सँऽ बाहर निकलि स्वतंत्र आवोहवा मे सांस लेबऽ चाहैत छलीह । सालों साल, मन मे सपना सँजोने छलीह जे पतिक संग खुलल हवा मे विचरण करब । ओ तऽ महत्वाकांक्षा कऽ घोड़ा पर बैसलि वीरांगना छलथि जे अपन मंजिल सँऽ ओतेक प्रेम करैत छथि जतेक सैनिक अपन मातृभूमि सँऽ । हिनक मंजिल छलनि सुखी जीवन ! ऐशो–आराम । भौतिकताक एहि परिवेश मे संत बला जीवन बितयवाक हुनक कोनो मंशा नहि छलनि, गृहस्थी कऽ परम्परागत चक्की मे पिस–पिस कऽ आटा बनि जाऊ, रोटी आन के परोसि दियोक आ चोकर अपना लेल राखि लिअ – से माया सँऽ होभऽ बला नहि छल । पूजा–पाठ मे बड़ कुशल । गरीब, आलसी आ महत्वाकांक्षी ई तीन प्रकारक व्यक्ति किछु बेसी श्रद्धावान होईत छथि । अगर देव प्रसन्न रहताह तऽ किछु कमी रहत ? प्रथम लायक बनु फेरि इच्छा करू ; एहि वाक्यक शब्द

सॅऽ ओ नफरत नहि करैत छलीह मुदा अगर एक व्यक्ति एकर अपवाद तऽ कोनो आफत आबि जायत ? चारि गोटाक बीच मे कोना नीक आ उच्चश्रेणीक गप्प देल जायत अछि ताहि विद्या सॅऽ ई अवगत छलीह ।

हीरा बाबू सॅऽ मिल हुनक असहयोगक आशंका दूर भऽ गेल छलनि । ओ बेचारे कहियो ककरो सॅऽ भरि मुँह गप नहि कयने छलथि । हुज्जत मे परि कऽ व्यर्थ प्रलाप ओ नहि चाहैत छथि । माँ होथि, पापा होथि वा छोट बहिन– सभक बात ओ मानि लेबाक पक्षधर रहथि । काज करू वा नहि, मानि लेबा मे कोनो हर्जाना लागैत अछि ? एक बेर ओ अपन छोट भाई राधाकांत केऽ ज्ञानवर्धन करैत बाजल छलाह । आब एहि कड़ी मेऽ योगमायाक नाम सेहो जुड़ि गेल छल । दुरागमनिया कार जखने लहेरिया सराय सॅऽ होईत घंटो बाधे–बोने आगू बढ़ल, योगमायाक दुविधा बढ़ल जाइत छलनि । हुनक अरमानक सुर्ख रंग धूसर भेल जाइत छलनि । पति सॅऽ पहिल बेर भेँट पर ओ कोना संयम धारण कयने छलथि से तऽ हुनके हृदय जानैत छलनि । की कऽ सकैत छलीह ? करमान लोक सभक बीच मे लड़काक डील–डौल, रूप–रंग, स्मार्टनेस आ फिटनेस इत्यादि पर के ध्यान देबऽ बला छल । लोक सब तऽ खा–पी कऽ, मौज–मस्ती कऽ चलि देत आ घर पर जा कऽ चटकारा लऽ लऽ कऽ वस्तुस्थितिक छिद्रांनवेषन करत । जिनका पर पहाड़ टूटलनि से बूझथि । तथापि धैर्यधारण कयलहूँ – खान सॅऽ निकलल हीरा जौहरि कऽ हाथ सॅऽ तराशल गेला उपरांत कतेक चमकि उठैत अछि ? पढ़ल–लिखल तऽ छथिए, कहैत छथि दरमाहा सेहो दमदार अछि, तऽ बांकि सब तऽ क्षणभंगुर अछि, ओहो सुधार योग्य ।

विचारक एहि पराकाष्ठा सॅऽ बेखबर श्रीमति गायत्री देवी

अपन सपना संजोअ लागल
छलीह । सोन बहिन कनिया देखि कऽ कोना मनहुआ क जाईत बाजल छलीह – आब हिनका कोन कष्ट, कनिया तऽ आबिए गेल छथि सेवा–सुषुर्षा करऽ लेल । आराम सँऽ जिनगी कटतनि । एहि कलियुग मे लोके–लोकक सुःख–शांतिक दुश्मन भऽ गेल अछि । अपन बेटे नहि छलनि कब्जा मे तऽ आन कि करितनि ? एकसर मरऽ बलाक संग अगर दू–चारि गोटे आर भेट गेल तऽ ओकरा बड़ ढ़ाढ़स भेटैत छैक – सोन बहिन के सेऽह मनःस्थिति भऽ गेल छनि, गायत्री देवी मन मे सोचैत खुश भेलीह ।

गौरवान्वित भऽ ओ बेचारी तऽ अपन आगूक जीवन एक सफल शासक बनि काटऽ हेतु निश्चित कयने छलीह । अखन तऽ सिर्फ राज्याभिषेक भेल छलनि । हिनका राज्य पर पहिल बेरि आक्रमणक आशंका तखन भेलनि जब भेंट करऽ आयलि बच्चा काकी केऽ पायर जॉतब हेतु कनिया केऽ कहल गेल । ओ छूटैत बाजलि कि पायर मे दरद छनि ? स्तब्धता केऽ भंग करैत सास गुरड़ि कऽ बाजलि – तऽ कि दर्द रहले पर जॉतल जाइत छैक ? ई सभ तऽ शोभा–सुंदर होइत छैक, माय–बाप एतबो ज्ञान दऽ कऽ नहि भेजल ? मॉ–बापक नाम सुनतहि योगमाया अपन नामक प्रथम उपसर्ग त्यागि मायावी भऽ गेलीह, तमतमा कऽ कहैत छथि – शोभा–सुंदर नहि, अपन ईशारा पर नचैयबाक ई सब प्रपंच थिक । आज्ञाकारी प्रजा बनैयबाक प्रशिक्षण थिक, जे कतहु एहि घर–दुआर पर मालिकाना हक केर एहसास नहि करय लागथि । एहि बीच बच्चा काकी ससरि गेलीह आ चारू गाम अनोर भेल जे हीरा बियाह कऽ केऽ तोप अनलक । आब महाभारत देखऽ हेतु टी.भी. खोलबाक जरूरत नहि, हुनक आंगन जा कऽ बैस जाऊ ।

रहल–सहल कसर चारि दिन बाद पूरा भेलनि जब हीरा बाबू अपन नौकरी सम्हारऽ दिल्ली जयबाक सुर–सार करऽ लगलाह । कनियाँ सेहो निश्चिंत भावे अपन तैयारी कऽ लेलनि । गायत्री देवी एहि बेरि अपना केऽ पूर्ण अपदस्थ महसूस करैत हमला कयलनि – छओ मास नहि बीतल आ बिनु विचारे–विमर्स वर साथे लब–लब करऽ लगलहुँ । नहि होयत एखन अहाँक गेनाई, घर–दुआर के सम्हारत ? बाबुजीक तबियत नीक नहि रहैत अछि । बौआ आबैत–जायत तऽ रहबे करताह । ओहि ठाम जा कऽ खर्च बढ़ायब उचित ? अपन आखिरी आश पर पानि फिरैत देखि कऽ ओ हुंकार भरलथि – तऽ कतऽ लिखल छैक जे बर लग रहबा सँऽ पहिले कम–सँ–कम छओ मासक आहूति देब आवश्यक ? अपने तऽ सदिखन बाबूजीक संग देश–विदेश घुमि एयलथि आ हम भरल उमर मे कि एतय गोबर नीपैत रहूँ ?

गायत्री देवी अकाट्य चालि चलऽ के माहिर मानल जायत छथि । लोक सभ हिनका सँऽ परिस्थिति पर विजय प्राप्त करऽ हेतु गुरूमंत्र लेबऽ आबैत छथि । मुदा जखन कियो चालि कऽ जबाव चालि सँऽ दिए तखन ने । गदा केऽ प्रहार सँऽ तऽ दिमाग कतबो तेज रहथि, फूटिए जायत । अंततः जीत योगमाया के भेलनि आ हीराकांत दास सपत्नीक दिल्लीवासी भऽ गेलाह ।

.....

२

अभिमन्यु दास, एल.एल.बी., अपन उच्चश्रेणी केऽ सरकारी सेवा सॅऽ बीस साल पूरा कऽ आई स्वैच्छिक सेवानिवृति लऽ रहल छथि । केंद्र सरकार में उप–कानूनी सलाहकार पद तक पहुँचऽ मे जे संघर्ष ओ लगन केऽ परिचय देने रहथि से संस्मरण कराय हिनक विभागाध्यक्ष श्री रामनाथ पांडे बिदाई भाषण मे सबकेऽ अनुशरण करबाक सलाह द रहल छथि । ओ कहैत छथि – अभिमन्यु बाबू एक सामान्य परिवार सॅऽ आबि नौकरी क्लर्क सॅऽ प्रारंभ कयने रहथि । मुदा जहिना झुंड सॅऽ बिछुड़ल हिरण यावत अपन समुह मे सम्मिलित नहि भऽ जाय, बेचैन रहैत अछि, तहिना अथक परिश्रमकऽ बल पर अभि बाबू अपन उचित स्थान प्राप्त कयलथि । एतबा नहि, मात्र सरकारी सेवा सॅऽ एतेक जल्दी निवृत होयबा केऽ हिनक निर्णय सेहो हमरा सभक हेतु प्रेरणादायक अछि । ओ निश्चय कयलनि अछि जे पेंशन लऽ वकालत शुरू करताह ताकि आर्थिक स्थिति बनल रहय आ साथहि जन–सेवा मे सक्रिय योगदान कऽ सकथि । हमर सबहक शुभकामना अछि जे ओ अपन योजना मे सफल होथि । जाहि लगन और मेहनत सॅऽ ओ विभागक सेवा कयलनि ओ अतुलनीय अछि । विभाग हिनका पर निर्भर करैत छलनि आ हिनक रिप्लेसमेंट खोजब कोनो आसान काज नहि
होयत । अहॉ सबहक तरफ सॅऽ हम हिनकर स्वास्थ्य, समृद्धि ओ सुखमय जीवनक कामना करैत छियनि । अभि बाबू सॅऽ आग्रह अछि जे दु शब्द कहि अनुग्रीहित करथि ।

सामान्यतः विदाई बेला भावुक क्षण होइत अछि तथापि अभि

बाबू दृढ़ निश्चय आ संकल्प धारी व्यक्ति केर मुद्रा मे ठाढ़ भऽ बजैत छथि : अहाँ सभ जे सम्मान दऽ रहल छी ताहि हेतु हम आभारी छी । हमर प्रशंशा मे जतेक शब्द श्रीमान पांडेजी कहलनि ओ हुनक बड़प्पन छनि । अहाँ सब सँऽ एतेक जल्द विदाई लेब हमरा लेल असह्य भऽ रहल अछि मुदा हर व्यक्ति केऽ अपन-अपन ध्येय आ पसंद होइत अछि । हम मानैत छी जे एकहि जिंदगी मे एब काज करक' अछि । अखन तक जीवन परिस्थितिक अनुरूप जीलहुँ आब अपन स्वेच्छा सँऽ, अपन व्यक्तित्व तथा मनःस्थितिक अनुसार कार्य करब । अखन तक स्वयं तथा परिवार हेतु कार्य कयलहुँ आब दायरा बढ़ा कऽ समाज, आम व्यक्ति केऽ हेतु किछु करऽ चाहैत छी । अगर सफल भेलहुँ तऽ संतुष्टि भेटत आ नहि तऽ अपराध बोध सँऽ मुक्त होयब जे ओहि दिशा मे प्रयास कयलहुँ । अहाँ सभहक सहयोगक बिना हम वर्त्तमान जिम्मेदारी सफलतापूर्वक नहि निभा सकैत छलहुँ ताहि लेल हम कृतज्ञ छी । ईश्वर अहाँ सभके खूब तरक्की आ सम्मान प्रदान करथि । थपरी कऽ गरगराहट सँऽ सभ गोटे हाथ मिला कऽ उपहार समेत अभि बाबू केऽ विदाई देलनि ।

घर पर पहुँचि पत्नीक आलिंगन मे जे सकुन आ शांति भेटलनि ओहि सँऽ गदगद भऽ
गेलाह । एतेक भरल-पूरल परिवार मे एक वैह तऽ छथि जे हर क्षण सुःख हो वा दुःख, पूर्ण हृदय सँऽ साथ देलनि अछि । मुदा हमर दुर्भाग्य, जे सुःख आ खुशी कऽ कामना कऽ कोनो पत्नी पति कऽ घर मे प्रवेश करैत छथि ओहि मे हम पूर्ण सफल नहि भऽ सकलहूँ । जखन व्यक्तिक' शरीर कोनो कारणवश साथ नहि दऽ सकल तऽ मन वा धन रहितो व्यक्ति असहाय भऽ जायत अछि । बेचारी प्रारंभहि सँऽ हमर सेवा-सुषुर्षा, पसंद-नापसंद, मान-सम्मान आदि के पूर्ण

मनोयोग सँऽ निर्वाह कयलथि । कएक बेरि लड़ियो लेलीह जे सब हनीमून मनाबऽ गेल, गोवा घूमि आयल, कतेक प्रकारक खरीददारी करैत अछि, परञ्च हम तऽ नौकरानी बनि कऽ रहि गेलहूँ । ई तऽ अपन धुन मे, कार्य मे, पढ़ाई मे आ करियर मे, की मजाल समझौता कऽ लेताह । अभि बाबू बूझैत छलाह जे हिनक सब शिकायत क्षणभंगुर होयत छनि । अपन सामर्थ्य केऽ हिसाब सँऽ ओ सर्वदा चाहलनि जे सुलेखा खुश रहथि आ जीवन केऽ प्रत्येक सफल मोड़ पर हमरा सँऽ बेसी गौरवान्वित होमक क्षण हुनके प्राप्त भेलनि । फेरि जतेक कमा कऽ अर्जन कयलहुँ से सब तऽ पत्नी आ बेटा केऽ लेल अछि । हमरा की चाही – नीक भोजन आ सादगी पूर्ण जीवन – जखन हम दू हजार टाका केऽ कलर्क केऽ नौकरी करैत छलहूँ आ एखन एतेक नीक ओहदा पर पहुँचलहुँ हमर सामान्य जीवन चर्या मे कोनो खास परिवर्त्तन नहि आयल । एवं–प्रकारेण उधेरबुन मे खा–पी कऽ आराम हेतु अपन कमरा मे दाखिल भेलाह । किन्तु हाय–रे दैवीय–संयोग । बिस्तर पर पहुँचति धरि डकार आ बेचैनी सँऽ परेशान भऽ गेलाह । पेट सँऽ यावत अनगिनत डकार भऽ वायु निष्कासित नहि भऽ जतैक लेटला सँऽ कोनो लाभ नहि छनि । करीब दस–बारह साल सँऽ साँझ होइतहि पेट फूलि गेनाय, मुँह मे खून अकारण आबि गेनाय, खराब–खराब स्वप्न आबि नींद अपूर्ण रहि गेनाय हिनक दिनचर्याक अंग छलनि । किछु दिन परेशान रहला बाद ओ बेचारे सब किछु केऽ अपन दिनचर्या मे शामिल कऽ लेलनि । जे अपन बस मे नहि ताहि कारण अपन कर्म सँऽ रचित भविष्य केऽ नहि त्यागि सकैत छी । शुरू मे हर तरह इलाज करौलनि, जाँच–पड़ताल, मे कोनो तरहक कमी नहि होयबाक कारण डाक्टर डायजीन दऽ केश बंद कऽ देलनि । आब ओ एहि सँऽ विचलित नहि

होयत छथि, परञ्च सुलेखा के समझौलनि । ओ बेचारी भयाक्रांत भऽ जायत छथि । किनकर छाती जरऽ लागलनि हमर नीक देखि । अपन मेहनत कऽ नीक जकाँ रहू त लोक कऽ छाती फाटऽ लागैत अछि । कहियो नीक नहि हेतनि ।

जखन किछु आराम भेलनि तऽ नींद नगरी मे प्रवेश करऽ चाहलनि । मुदा आई तऽ दूर–दूर तक नगरक रास्ता नजर नहि अयलनि । सोचऽ लगलाह – मनुष्य जन्म लैत अछि माँ–बाप, भाय–बहिन, सभऽ साथ–साथ पलैत अछि आ जवान भेला उपरांत अपन अलग दुनिया बसा कऽ परिवारक चौहद्दी सँऽ बाहर आबि जायत अछि । बस भऽ गेल – फेरि अपन परिवार सिर्फ अपन पत्नी आ बच्चा धरि सिमटि कऽ रहि जायत अछि । की बचपन सँऽ जवानी तक जे जीवन

एतेक लोकक साथ बीतल ओहि मे ओतेक अनुबंध नहि जे लोक केऽ सदा हेतु साथ बाँधि कऽ राखि सकय ? की जिंदगी केऽ ओ लंबा सफर सिर्फ एक सीढ़ी मात्र छल – अपन अलग मंजिल पर पहुँचऽ हेतु ? एतबा नहि अपन अलग दुनिया बसा लेला उपरांतहुँ लोक अपन स्थिति कऽ नीक–बेजाय केऽ तुलनो अपन बचपनक ओहि सखा सँऽ कऽ दुःखक अनुभव करैत अछि । जानवर धरि अपन झुंड मे रहैत अछि, एक दोसरक दुःख सँऽ ओकर आँखि मे नोर भेटि जायब कोनो आश्चर्य नहि । कतेक स्वार्थी भऽ गेल अछि मनुष्य । आई एतेक शुभ घड़ी आ एतेक टा परिवार रहितो गाम सँऽ कियो उपस्थित नहि। किएक एहि परिस्थितिकऽ निर्माण भेल ? की हमरा तरफ सँऽ कोनो त्रुटि रहि

गेल ? की हमर मेहनत, हमर जूनून आ हमर तरक्की एहि मे बाधित भेल ? की जीवनक एतेक साल साथ बिताय नौकरी हेतु बाहर आबि

गेनाय कोनो अपराध अछि ? कतेक प्रसन्न भेल छलाह सब कियो जे अभि कतेक टा परीक्षा पास कयलनि अछि । घरक हर कार्य मे हमर निःस्वार्थ योगदान लोक कोना बिसरि सकैत अछि ? नौकरी कऽ चारि–पॉच साल धरि तऽ बैंक मे खाता धरि नहि खोलने छलहूँ । कोन जरूरत, अपना जरूरत धरि बॉचल तऽ घर जायब तऽ की सभकऽ हेतु हाथ मे पाई नहि चाही ? जा धरि सभ सॅऽ भेंट नहि कऽ आयब, मन बेचैन भऽ जायत अछि । बच्चन केऽ आई.आई.टी. पास कयला पर समय सॅऽ हमर नौकरी भेल ताहि सॅऽ अपना केऽ कतेक भाग्यशाली बूझैत छलहूँ । हमर पाई परिवारकऽ, छोट भायकऽ काम आबि रहल अछि । अपन विलक्षणता पर कतेक गर्व भेल छल । जखन बड़का भैया पायर तोड़िकऽ पटना मे भर्ती भऽ गेल छलाह तऽ पहिल दरमाहा कोना कैशियर सॅऽ एडवांस मॉगि कऽ दिल्ली सॅ ट्रेन मे बैसिए कऽ कतेक अधीर भऽ भागल छलहुँ । सोचलहुँ हुनका किएक किछु भेलनि, हमरे भऽ गेल रहित, ओ तऽ हम सब भाय–बहिनक ज्येष्ठ छथि । बाबूजीक मृत्यु कऽ बाद तऽ नीक–बेजाय सोचब हुनके काज अछि । हम सबकेऽ संरक्षण देबऽ तऽ हुनके काज अछि । तऽ आब की भऽ गेल ? की एहि तरहक मनःस्थिति लऽ हम अपना साथ, अपन भावनाक संग खेलौड़ कयलहुँ ? हमरो अपन भ्रातृवृंद जकां मन केऽ मजबूत कऽ स्वयं पर बहुत पहिले केंद्रित भऽ जयबाक चाहि ? नहि, से नहि भऽ सकैत छल । चाहे पीठ मे कतबो छुरा मारल जाय हम नहि सुधरि सकैत छी । हम अपना के नहि ठगलहुँ । अपन नजरि मेऽ तखन तऽ सुदृढ़ छी, एकसर रहितो । किएक अपन भावज एहन टेढ़ि निगाह सॅऽ हमरा खयबाक काल मे देखैत छलीह ? जखन हम अपन कमरा मे सुतल छलहूँ, ओ किएक पुनः टेढ़ि निगाह सॅऽ देखैत पकड़ल गेलीह ? तकर बादे किएक हमरा

खराब स्वप्नक कारण नींद खुजय लागय ? पेट फूलि कऽ राक्षसी ढ़कार किएक एहि घटना बादे शुरू भेल ? तऽ की ओ कोनो जादू–टोना जानैत छथि ? अगर सेहो अछि तऽ हमरा सॅऽ हिनका कोनो दुश्मनी तऽ नहि छलनि तखन किएक हमरा साथ एना करती ? एकहि कारण भऽ सकैत अछि, हमर प्रगति सॅऽ, हमर तरक्की सॅऽ, हमर दृढ़प्रतिज्ञा सॅऽ ओ डाह करैत होयतीह । हमर प्रगति मे अपन खुशी किएक नहि देखि सकलीह, जबकि हमर मन सभहक तरक्की सॅऽ, उन्नति सॅऽ कतेक प्रफुल्लित होयत छल ? नहि ! कोनो हालत मे बात सच नहि भऽ सकैत अछि । तखन हर प्रकारक टेस्ट करौअला बादो किएक नहि पता चलल ? रात्रि होयते सब प्रकारक उपद्रव किएक बढ़ि जायत अछि ? हे महादेव, जानू अहॉं, अहींक धरती थिक, अहीं सब प्राणी कऽ भूत–भविष्य आ वर्त्तमान निर्धारित करैत छी । अहीं धर्म–अधर्मक लेखा–जोखा करै छी आ अंत मे एकर हिसाब कऽ प्राणी केऽ पाप–पुण्यक आधार पर दंड दऽ न्याय केऽ स्थापना करैत छी । जखन कोनो समस्या कऽ समाधान मनुष्यक वश मे नहि रहय तऽ ईश्वर पर छोड़ि निश्चिंत भऽ जाऊ मुदा अपन कर्म अथवा प्रयास अवश्य करैत रहूं । समय चक्र बदलत आ अपन समाधान नेने आयत । विचार मंथन कऽ एहि आवेग मे कखन नींद आबि गेलनि अभि बाबू केऽ पता नहि चलि सकलनि ।

.....

३

प्रातःकाल थुथमा साहेब हाहाकार करैत अभि बाबू के घर पर पहुँचलाह ।

थुथमा साहेब : की दोस ! सुनैत छी जे नौकरी सँऽ इस्तीफा दऽ देलिएक । एतेक नीक नौकरी लोक तरसि कऽ रहि जायत अछि । अहाँ त्यागि कऽ खुश भऽ रहल छी ।

अभि बाबू : ठीके सुनलहुँ ! मुदा चिंता कऽ गप नहि, पेंशन तऽ भेटबे करत । परिवारक सब जिम्मेदारी सुलटले अछि । ताहि हेतु सोचलहुँ, जिंदगी मेऽ बदलाव जरूरी अछि । आगू अपन प्रैक्टिस करऽ केऽ विचार अछि ।

थुथमा साहेब : एँ ! एक त पाई आधा भऽ जायत दोसर एतेक ठाट–बाट, शान–सौकत । अफसरी कोनो आसान बात छैक । बैसि कऽ मोट रकम कमा रहल छलहुँ । हम तऽ आवाक रहि गेलहुँ – चोट्टे भागल आयल छी ।

अभि बाबू : नीक कयलहुँ । एहि लाथे अहाँ सँऽ भेंट भऽ गेल । मुँह मीठ करू – किएक त हम आइ बड़ खुश छी । आई स्वच्छंद भऽ गेलहुँ । अपन इच्छानुसार जीवन आब बिता सकैत छी । बचपन सँऽ आइ धरि पराधीन छलहुँ । नौकरीओ तऽ लोक केऽ पराधीने कऽ दैत अछि । एतऐव अगर जरूरत नहि अछि तऽ नौकरी किएक करी ? अहाँ तऽ हमरा बचपन सँऽ जनैत छी वकालत केऽ पेशा हमरा कतेक पसंद अछि । प्रारंभ मे नौकरी मजबूरी छल, वित्तीय हालत अविलंब सुधारकऽ हेतु । आम जनक बीच मे रहव, एक दोसरक हाल–परिचय आ सभहक बीच समय व्यतीत करब हमर स्वभाव

अछि । जे नौकरी मे रहैत असंभव भऽ रहल छल ।

थुथमा साहेब : अरे जखन अहाँ निर्णय लेलहुँ तऽ कोनो शक–सुबहा नहि भऽ सकैत अछि । समय पर उचित निर्णय लेबऽ कियो अहाँ सँऽ सीखय ।

अभि बाबू : आब अहाँ कहूँ । कतऽ गुम भऽ जायत छी ? काज–धंधा कोना चलैत अछि ? माया कऽ कतहुँ सँऽ घुमा कऽ आनि देलयनि की नहि ?

थुथमा साहेब : अहाँ सँऽ कोनो झांपल अछि । एक सँऽ एक डिग्रीधारी नीक जगह पाबऽ हेतु भटकि रहल छथि । कने नीक जरसीमन देखल नहि कि सैकड़ो लाइन मे ढ़ाढ़ अछि । नजारे देखि हिम्मत पस्त भऽ जायत – आगु के कहि । हाथ–पैर कि कम मारि रहल छी ? से सबके कोना बता सकैत छी ? अगर लोक कऽ सब सच पता लागि गेल तऽ बैसहु नहि देत । मायाकऽ जिज्ञासा कोनो पूर्ण होयऽ बला विषय थिक ? किछु कहि मामला शांत कऽ दैत छी ।

अभि बाबू : परञ्च वास्तविक स्थिति सँऽ पत्नी कऽ अवगत रहनाइ नीक गप थिक । ओ अहाँ लेल लाभकारी भऽ सकैत अछि ।

थुथमा साहेब : जहिया ओ हमर असल दरमाहा जानि जेतीह हिनकर नजर मे हमर मूल्य दू टाका भऽ जायत । अहाँ नहि चिन्हैत छियैक । सभटा राजशाही ठाट पूरा करऽ हेतु ओ विवाह कयने छलीह । हम तऽ अपन सुख–सुविधाकऽ आशा कयने छलहुँ –उनटे परि गेल । जऽ हम हाथ–पैर चलाबी तऽ हींग–सँऽ लऽ हरदि तक हमरे फॉट उचरत ।

अभि बाबू : आस्ते–आस्ते सब सुव्यवस्थित भऽ जायत । अपन कर्म करैत रहू ।

किछु काल बाद थुथमा साहेब भोजन–पानी क प्रस्थान करैत छथि ।

अभि बाबू आ थुथमा साहेब बचपन केऽ दोस्त रहथि । संगे–संग मिडिल क्लास धरि बी.ए. पास कयने छलथि । तकर बाद थुथमा साहेब एम.बी.ए. करऽ पहुँचलाह बनारस । अभिजीत बाबू केऽ समक्ष सिर्फ एक लक्ष्य छलनि – कहुना कोनो नौकरी कऽ अपन पायर पर ठाढ़ भऽ जाय । परिवारक आर्थिक हालत नीक नहि छलनि । पांचो भैयारी आ कमाबऽ बला सिर्फ बाबूजी जे ब्लॉक मे मामूली क्लर्क रहथि । पैघ भाई जेना–तेना डाक बाबू भऽ गेलाह लेकिन घर आ सासुर एक कऽ देने छलाह– छोट तनख्वाह मे कोना बचतनि ? बेचारे बाबूजी कहि–सुनि कऽ किछु टूर लगवा लैत छलाह जाहि सँऽ किछु पाय आबि जाय । अभि बाबू पढ़ऽ मे होसगर रहथि । फलस्वरूप, नौकरी ताकऽ मे बेसी दिक्कत नहि भेलनि । सफलता तऽ जेना हाथ धो हिनक पांछा पड़ल छलीह । सुपरिटेंडेंण्ट केऽ नौकरी कानून मंत्रालय मे करब निश्चित भेल । पूरा परिवार आनन्द सँऽ भरि गेल छल । बड़का भैया तऽ आस–पड़ोस मे बड़ाई छॉटअ मे लागि गेलाह । कएक बेड़ि हुनका समझाओल गेल जे संयम राखू मुदा के सुनैत अछि ? कतेक प्रेम छलनि दूनू भाय मे ? अभि बाबू कऽ ऑखि भरि जायत छनि याद कऽ । समय यदि ओतहि रूकि गेल होइत तऽ कतेक सुंदर ? मुदा काल–चक्र आ समय–चक्र भला रूकल अछि किनको खातिर । सभऽ केऽ अपन–अपन परिवार बढ़ल, प्राथमिकता बढ़ल, स्वार्थ बढ़ल, प्रेम भाव युक्त करूण हृदय कठगर भेल । शायद व्यक्तित्व केऽ एहि परिवर्त्तन मे अभि बाबू पाछॉ छूटि गेलाह । गॉव सँऽ बाहर आबि गॉव सँऽ स्नेह, गामक व्यक्ति–वस्तु सँऽ लगाव, परिवार केऽ प्रति समर्पण बढ़ि गेलनि । ओ तऽ बेचारे व्यक्तिगत प्रतियोगिता, अपन भाय–भतीजा सँऽ कखनहुँ सोच मे प्रविष्ट नहि होमऽ देने छलाह । कोन–कोन ब्योंत नहि रचने छलाह सुन्दर भाय

केऽ नौकरी दिआबऽ हेतु । एक बेरि बड़का भैया जखन सुन्दर भाय के उलाहना दैत फटकारि रहल छलथि तऽ ओ कानैत बाजल छलाह जे अहाँ चिंता जुनि करू, अगर हमरा नौकरी नहि होयत तऽ माहुर खा मरि जायब, अहाँक कमाएल नहि खायब । अथाह गर्वकऽ अनुभव कएने छलाह जखन ज्ञात भेलनि जे सुन्दर भाय शिक्षक भऽ गेलाह । अपन तीक्ष्णबुद्धि आ प्रतियोगिता संबंधित जतेक अनुभव छलनि ओ बेचारे पूर्ण मनोयोग सँऽ सुन्दर भाय पर समर्पण कएने छलाह जे एहि बेरि ओ रहि नहि जाथि अन्यथा नौकरी हेतु उम्र समाप्त भऽ रहल छनि । लड़का जखन तक अपन पायर पर नहि ठाढ़ भऽ जाय ओकर कथा–कुटमैती नीक घर मे असंभव होइत अछि । कन्यागत सभऽ अपन नजरि मे लड़का छांटि राखने रहैत छथि मुदा ओकर अनुक्रम उपलब्धि केऽ आधार पर निर्धारित करैत छथि, विद्वता कऽ आधार पर नहि । ठीक ओहि प्रकार जेना गाय देखऽ मे कतबो सुंदर रहथि, आदर कऽ पात्र ओतबे होयत अछि जतेक ओ दूध दैत अछि । आखिरकार सुन्दर भाय हेतु सेहो कन्यागत सभ दौड़ऽ लगलाह । हिनक चुकल प्रतिष्ठा वापस अयलनि आ एक अति गरीब आ अनपढ़ परिवार मे कथा भऽ गेलनि । परिवार एहि बेरि सतर्क रहथि – गरीब आ अपना सँऽ निम्न स्तर बला लड़की रहत तऽ सबकेऽ नीक जकाँ यथोचित आदर सम्मान भेटत । पहिल बेरि की भेल – पैघ आसामी खोजऽ केऽ चक्कर मे एहन परिवार भेटल जे ककरो सँऽ मुँह भरि बातो नहि करैत छल । और तऽ छोड़ू कनिया केऽ लेल तऽ जेना सास–ससुर, दीयर–ननदि, सब अजूबा प्राणि होथि तहिना व्यवहार छलनि । मन टूटि गेल छलनि सब परिवार के भीतर सँऽ – परञ्च की कयल जा सकैत छल । बड़का भैया कहियो लड़की तरफ आँखि उठा कऽ नहि देखने छलाह – विवाह होइत देरि सुधि–बुद्धि चलि

गेलनि । लाज–धाख ताक पर राखि देलनि आ बनि गेलाह योगी सॅऽ कर्मयोगी । लड़की हेतु बाद मे पता चलि सकल जे ओ तऽ अपन भाई कऽ सार संगे भागि चुकल छलीह । ठगि–फुसला कऽ लोक अचानक हिनका संगे खूंटा ठोकि देलनि । बड़का भैया कऽ नींद जखन टूटलनि तऽ मारि–पीटि कऽ राह पर आनऽ
चाहलनि । मुदा ई बात पता नहि चलि सकल जे जखन सास कऽ बीमार मे देखऽ सासुर गेलाह तऽ अचानक रवैया बदलि कोना गेलनि । लोक सब कानाफूसी प्रारंभ कयलक जे हिनक सास केऽ नजरि तेज छनि, किछु पढ़ि कऽ बड़का भैया कऽ खुआ देल गेल होयतनि ।

दूधकऽ जलल छाछ जकॉ एहि बेरि फूंकि–फूंकि पीयल गेल आ पहिल बेरि कयल गेल गलती सुधार भेल । दोसर कनिया बड़ मीठ–मधुर बाजऽ बाली घरकऽ काम–काज सम्हारऽ बाली, सबके सेवा–सत्कार करऽ वाली मगर अनपढ़ – गरीब लड़की छलीह । पिता अकर्मण्य आ पराधीन मगर माताजी तेज–तर्रार, चंपट तरहकऽ औरत जिनका समक्ष अपना पर निर्भर भऽ ऊपर उठि सकनाई असंभव छल – जकर हूक रोज–रोज उठि हुनका टीस दऽ परा जाइत छल । खूब नीक गठजोड़ बनल – बड़ प्रशंसा शुरू भेल जे कनिया सबटा सम्हारि लेलीह । काम–धाम सम्पन्न कऽ दीयर सबकेऽ खोज–खबर करैत रहैत छथि । कनिया माय कोनो काज–परोजन होई खालिओ हाथ आबि कऽ नोत पूरनाई नहि बिसरैत छथि । कतेक बेरि त चर्चो भेल जे एहि तरहे समधियारि मेऽ आबि कऽ महीनो नहि रहबाक चाही । बेचारी गरीब छथि मुदा काज–परोज मे याद तऽ रखैत छथि, अगर किछु दिन टिकिये गेलीह तऽ कोन आफत, लोक तऽ अहिना खोट निकालैत रहैत अछि – बड़का भैया

के शिकायत कयला पर माँ बाजल छलीह । किछु साल एहिना बीतल । बच्चनजी कऽ विशेष ध्यान कनिया द्वारा राखल गेला पर आप्पत्ति दर्ज कयल गेल । रोज हाथ–पैयर जाँतब, माथ मे तेल लगायब, नहाबऽ हेतु पानि भरब, पसंद–नापसंद पर विशेष ध्यान राखब रतनपुर बाली केऽ पसंद नहि छलनि । छोट बहिन आबि कऽ किएक एतेक दिन रहैत अछि जखन पैघ–पैघ लड़का सब घर मे अछि ? मना कऽ दिऔक जखन अहाँक बर अलग रहऽ लगताह तखन जे मन होयत से करब – ई सम्मिलित परिवार अछि – चेतावनी दैत ओ मनमोहन वाली सँऽ से कहि देलीह । मुदा जखन अहाँ परिवार सँऽ कटि कऽ रहब तऽ समर्थन केऽ आस नहि राखकऽ चाही । एकर उलट दोसर तऽ राजनीत मे चतुर छलीह । हिनका संगे अनेक सदस्यक' समर्थन मिल गेलनि किएक परवाह करतीह ? ओ तऽ अपन सेवा–फल प्राप्त कर' मे एक–मग्न छलीह । बच्चनजी अपन पढ़ाई समाप्त कऽ एतेक दिनक थकान खत्म करऽ हेतु गाम पर किछु दिन विश्राम करब निश्चित कयलनि । खूब सेवा–सत्कार शुरू भेल । कतेक मेहनत कऽ आयल छथि, लोक जतबा पढ़य हेतु सपना देखैत अछि, ओ सच कऽ आयल छथि । पढ़ऽ काल मे एक लड़की सँऽ अत्यन्त प्रेम भऽ गेलनि । जाँति–पाँति नीक रहितो बेसी लोक आपत्ति कऽ देलनि जे ओ हिनक प्रोफाइल मे ठीक नहि बैसि रहल अछि । बड़का भैया त आगि–बबूला – किएक तऽ ओ लड़की हिनक सासुर पक्ष सँऽ कोनो संबंध रखैत छलीह आ भाई साहब अपन सासुर मे कोनो हस्तक्षेप नहि चाहैत छलाह । दोसर, कतेक आफिसर, इंजीनियर आ डॉक्टर पाँति मे ठाढ़ छलथि ई लड़का उठाब' हेतु, तखन किएक एक क्लर्क केऽ बेटी बसाओल जाय ? लड़की बला किछु दिन आस देखलक जे

तय–तमन्ना भऽ जाय तऽ बेस रूकल रहि अन्यथा बदनामी बढ़ि रहल अछि । दूनू परिवार मे भारी द्वंद भेल आ तमकि कऽ सटले लगन मे लड़कीक कन्यादान एक होटल चलाब' बला लड़का सँऽ कऽ देलनि । बाद मे पता चलल जे होटल नहि बल्कि चाय–पानी कऽ दोकान चलबैत अछि, जाहि मे किछु नस्ता–पानी क' इंतजाम सेहो रहैत छैक । घायल भऽ गेलाह बेचारे बच्चनजी से सब सुनि, मन खिन्न भऽ गेलनि आ कर्मपथ सँऽ विचलित भऽ गेलाह । सुःख आ दुःख त मनःस्थिति केऽ परिचायक थिक । जखन कोनो गंभीर घाव लागि जायत आघात नहिं दऽ सकत । बच्चन जी एहि गंभीर घाव सँऽ एतेक आहत भऽ गेलाह आ सामान्य सुःख हिनक मनःस्थिति पर कोनो विशेष प्रभाव नहि दऽ सकल । किछु साल बीतला पर भाग्य कने जोर देलक आ पी.डब्लू.डी. मे सहायक इंजीनियर मे योगदान करऽ हेतु बजाओल गेलाह । जोर–जबरदस्ती कएला पर नौकरी करऽ हेतु तैयार भऽ गेलाह । इच्छा त छलनि आब एहिना मस्त–मलंग जीवन गुजारब । फलस्वरूप आब हिनक मान–सम्मान आओर बढ़ि गेलनि । कोनो तरहक कष्ट नहि होयबाक चाहि – किएक तऽ आब ओ किछु मास बाद गाम सँ चलि जयताह । मनमोहन बाली हिनक विशेष ध्यान राखऽ हेतु अपन छोट बहिन सविता केऽ बजाबऽ हेतु कहब पठौलनि । माय तऽ प्रफुल्लित भऽ गेलीह, मनोरमा के कर्त्तव्यपरायणता देखि । एके टा चिंन्ता छलनि जे कोहुना सविता कऽ विवाह भऽ जाय । चारि–साल सँऽ झटहा मारि रहल छलीह । किएक लगतनि ? कोना लगतनि ? कथा लऽ कऽ जखने श्रीमान जायत छथि, उल्टे मुँह विदा कऽ दैत छनि । कारी स्याह, बेमाय फाटल, अनपढ़, सिक्यूरिटी गार्ड ससुर लेब' हेतु कोनो लड़का तैयार नहि छल । पिछला बेरि थाकि–हारि क एकटा लड़का जे, कपड़ा

फैक्ट्री मे काज करैत छल, तैयार भेल मुदा तीन लाख टाका चाहैत छल । ने राधा के नौ मन घी होयत आ ने राधा नाचत – कहावत चरितार्थ भेल । आव ओ हिया हारि चुकल छलीह । एके टा आस मनोरमा सॅऽ रहि गेलनि । ओएह पार उतारतीह । ओ झटपट सविता केऽ लऽ मन मे भगवती केऽ सुमिरन करैत पहुँच गेलीह । मनोरमा सॅऽ गला मिलैत अधीर भऽ जिज्ञासा करैत छथि – सुनैत छियैक जे बच्चन जी के नौकरीयो भऽ गेलैक ?

मनोरमा : (फुसफुसाहट सॅऽ) ठीके बात छैक । किछु दिन मे नौकरी पर चलि जयथिन ।

माय : से तऽ बड़ बेस, मुदा कोना संभव होयत?

मनोरमा : काज असंभव नहि अछि । बच्चनजी केऽ हमरा पर विश्वास छनि । सविता केऽ हुनक मन मे जगह बनाबऽ पड़तैक ।

माय : से कोना हेतैक ? बाकी सब की हंगामा नहि करतनि ? लोक कहैत अछि ओ पगलेट छथि ।

मनोरमा : तकर चिंता अहॉ जुनि करू । ओ घायल मन छथि, कने मरहम नहि लागल कि समर्पण कऽ देताह ।

माय : सविता सॅऽ मुखातिब होइत, बेस तऽ दीदी कऽ कहल अनुसार चलू । बांकी अहॉक अपन कपार ।

(मनोरमा सविता के समझाब' लागैत छथि कि पति प्रवेश करैत छथि)

पति : की भऽ रहल अछि ? अहॉ के कहने छलहुँ जे ई सब असंभव अछि ? सोचि–समझि लिअ । तखन एतेक हड़बड़ाहट ?

मनोरमा : ट्रेन छूटि गेला पर टेशन पर दौड़िए कऽ पहुँचलहुँ तऽ कोन लाभ ?

पति : मॉ, बड़का भैया, अभिमन्यु सब सहमत नहि होयताह । ऊपर

सॅऽ बदनामी होयत से अलग । आर सविता सेहो बच्चन जी हेतु उपयुक्त नहि बुझि पड़ैत छथि ।

मनोरमा : अहॉ तऽ बकलेल छी । बरू, ई तऽ नीक संजोग होयत । बच्चन जी अपना सॅऽ जुड़ल रहि जेताह । विरक्त छथि, अपना हेतु कोनो चिन्ता नहि । सविता सेहो एहसानमंद रहतीह तीन–तीन टा बेटी क' पढ़ाई–लिखाई आ फेर विवाह – की अहॉ नीक जकॉ कऽ सकैत छी ? टीचरी कऽ कतेक जोड़ि लेलहुँ ? यदि बच्चन जी अपना तरफ रहि गेलाह तऽ बूझू बेड़ा पार । सुनैत छियेक पी.डब्लू. डी. मे बड़ आमदनी छैक । दरमाहा तऽ लोक छूबो नहि करैत अछि । मॉ आ भैयाजी के चिंता नहि करू ओ सब एहि बेरि रिस्क नहि लऽ सकैत छथि । पिछला पछतावा संगे छनि । पति निरूत्तर भऽ जायत छथि ।

जाहि बहस मे हारि जायब लाभकारी अछि, हार मे जीत सॅऽ बेसी तत्व छुपल अछि, ओतऽ शांतिप्रिय भऽ जायब अमोघ अस्त्र सिद्ध होयत अछि ।

.....

४

अभिबाबू सर्विस लॉ केऽ एक कुशल अधिवक्ता कहल जाइत छथि । नौकरी केऽ दरम्यान सरकारी कायदा–कानून सँऽ अवगत भऽ गेला सँऽ एहि क्षेत्र मे बेसी प्रयास नहिं करऽ पड़लनि । संगहि सरकारी केस पैरवी मध्य लोक–सबहक बीच प्रसिद्ध भऽ गेल छलाह । कार्यालय मे हिनक कानूनी क्षमता केऽ काफी ख्याति भेटैत छलनि । कठिन सँऽ कठिन केस मे एहन बिन्दु खोजऽ मे निपुण छलाह जाहि सँऽ मुवक्किल केऽ जीत सुनिश्चित भऽ जाय । एहि पेशा मे एतबा काफी अछि । कतेक इन्टर्न सब हिनक संगे रहि अपन कानूनी क्षमता तराशऽ मे लागि गेल छलनि । हिनक ख्याति मे चौतरफा वृद्धि भेलनि । मुदा जाहि गति सँऽ ख्याति बढ़ऽ लागलनि, स्वास्थ्य ओहि गति सँऽ घटब प्रारम्भ भेलनि । सांझ होईत पेट फूलि जायब, मन खिन्न रहब तऽ भोजन सँऽ अरूचि स्वाभाविक अछि । ताहि पर अनायास मुँह सँऽ खून निकलब आम बात छल । फलस्वरूप किंकर्त्तव्यविमूढ़ भऽ गेलाह । खूब जॉच–पड़ताल भऽ चुकल छल । तीन–चारि साल सँऽ होमोपैथी सेहो आजमा चुकल छलाह जे निष्फल भऽ गेलनि । अपन परिस्थिति सँऽ जूझैत ओ कर्म के दामन पकड़ने छलाह । किछु भऽ जाय हार नहि मानब, ओ तऽ एके मंत्र रटने छलाह – ''जीअब तऽ जीतब'' । जीवन–मरण तऽ लागले रहैत अछि, तऽ मृत्यु सँऽ डर किएक होयत ? लेकिन टीस एहि बात केऽ अछि जे एहि गोधूलि बेला मे घरक कोनो सदस्य क' कोनो हमदर्दी नहि भेटल । घर, जे सॉच अर्थ मे हमर मनःस्थल पर अंकित छल – जतय–जिनका साथ हमर बचपन बीतल, जिनका साथ

खेलि–कूदि, मारा–पीट्टी, पढ़ाई–लिखाई, कऽ पैघ भेलहूँ, सब भाई कतऽ गुम भऽ गेलाह । शायद अपन–अपन परिवार मे एतेक मगन भऽ गेलाह जे आर कोनो सुधि नहि रहल होयतनि । शायद पैघ भऽ गेला पर, अपन अलग रैन–बसेरा भऽ गेला पर दिल मे बनल स्थान आन व्यक्ति लऽ लैत अछि । आ फेरि ओहो आन तऽ नहि भेलाह, ओ पत्नी, बाल–बच्चे तऽ छथि । तऽ की ? भविष्य मे सेहो जखन ओ बाल–बच्चा पैघ भऽ जेताह तऽ ई घटनाचक्र दोहरायल जायत । मनुष्य केऽ मन–मंदिर की यंत्रचालित रेलगाड़ी सदृश थिक जतय एक यात्री केऽ स्थान दोसर लऽ लैत अछि आ ओहिना निश्चिंत मुद्रा मे बैसि जायत अछि जहिना पहिल यात्री छलाह । रेलगाड़ी केऽ एहि फेरबदल सँऽ कोनो विरोध नहि अछि । अपितु ओ तऽ आर गर्व करैत अछि – अपन क्षमता पर, अपन उपयोगिता पर, अपन सार्थकता पर । नहि–नहि, से नहि भऽ सकैत अछि एक यंत्र–चालित सामान, मनुष्य – हृदयकेऽ स्थान कदापि नहि लऽ सकैत अछि । दोसर कारण स्वार्थ भऽ सकैत अछि जे मनुष्य केऽ अपन–आन केऽ परिभाषा पुर्ननिर्धारित करऽ हेतु बाध्य करैत अछि । जतऽ स्वार्थ केऽ समावेश रहैत अछि ओतऽ मनुष्यक बुद्धि निःछल नहि रहि जायत अछि । ओ नफा–नुकसान देखि कऽ तय करैत अछि जे कोन कार्य युक्तिसंगत होयत आ कोन व्यर्थपूर्ण । आ ई स्वार्थक' की कारण ? एहि सँऽ की प्राप्त होयत ? आरामदायक जिंदगी, विलासिता ओ आन सँऽ आगू बढ़ि कऽ जीवन–यापन – यैह ओ मंजिल थिक जतय पहुँचब हेतु एतेक मारा–मारी, घोल–पचक्का आ छल–कपट जारी अछि । परञ्च अहि ठाम सेहो ''आन'' शब्द आबि गेल । यदि बेसी तात्विक अर्थ मे नहि जाय तऽ आन माने दोसर जे अपन नहि होय से अछि । मगर ई नहि जे अपन छथि हुनके ''आन'' केर श्रेणी मे

बैसा देल जाय आ प्रतियोगी बना देल जाय । मुदा हमरा साथ तऽ सेह भऽ रहल अछि । हमर अपन खून एहन कोना भऽ सकैत अछि ? किएक सब अपन–अपन स्वार्थ हेतु सत्य आ धर्म केऽ राह पर ढाढ़ होयऽ मे सकुचाइत छथि ? आवेग मे ओ आओर बहैत चलि गेलाह । ओ क्षण पुनः याद आबि रहल छलनि जखन राति मे एक बजे 40 कि.मी. जा कऽ अपन गाड़ी मे बड़का भैया आ भाभी दूनू बच्चा सहित अपने सॅऽ साथ लऽ आयल छलाह । कतेक श्रद्धा ओ सम्मान, स्नेह ओ प्यार मन मे अवलम्बित कयने । भौजी तऽ महीनो सॅऽ हमरा सब सॅऽ गप्प नहि करैत छलीह खास कऽ तखन सॅऽ जब पता चललनि जे अभिमन्यु दिल्ली मे मकान खरीद रहल छथि । ईर्ष्या ओ द्वेष सॅऽ दूषित मन के अभि बाबू सेहो समयानुसार जनैत छलाह परञ्च ओ एकरा एक स्त्रीयोचित आ मानवोचित दुर्गुण मानि दरकिनार कऽ एहि अवसर केऽ लाभ उठाबऽ चाहैत छलाह । यथोचित आवभगत मे कोनो कसर नहि रहि जाय, दूनू प्राणी एहि बात के विशेष ध्यान देने छलथिन्ह । मुदा भौजी एतेक शान–शौकत मध्य सादगी, आराम दायक जीवन, गाड़ी–घोड़ा देखि कोनो खास उत्साहित नहि भेलीह । अभि बाबू ओ वाकया याद कऽ आओर अस्रूपूर्ण भऽ जायत छथि जखन भौजी खाना परोसि कऽ तिरछा ठाढ़ भऽ टेढ़ि ऑखि सॅऽ ता धरि हुनका देखैत रहि गेलीह जा धरि ओ प्रथम कौर मुँह मे नहि लऽ लेलनि । अपना दिस एहि तरहे देखैत ओ किंकर्त्तव्यविमूढ़ भऽ बड़ देरि तक कौर सानिते रहि गेलाह अपन शंका के निराकरण हेतु । अंततः कौर मुँह मे राखैत ओ नजर मिला लैत छथि – तखन ओ हड़बडा कऽ हटि जायत छथि । अगिले दिन सॅऽ हिनक पेट फूलब आ अनगिनत डकार पुनः स्थापित भऽ गेल छलनि । एहि घटना के दू–तीन दिन बाद दूनू प्राणी जखन सूतल

छलथि तऽ अचानक पाछॉ सॅऽ महारानी ठाढ़ भऽ ओहि तरहें देखि रहल छलीह । ने कोनों खॉसी केर आवाज, ने केबार खुजऽ केर आवाज । किछु दिनो नहि बीतल की दुःस्वप्न, डरावना स्वप्न नींद मे कमी आ विशेष कऽ जखन सूतऽ हेतु जायब तऽ पेट फूलि डकार पर डकार शुरू भऽ गेलनि । हिनक सब अंग्रेजी आ कानून धराशायी भऽ गेलनि । सोचऽ लगलाह जे बीमारी बहुत मुश्किल सॅऽ साल भरि सॅऽ पीछा छोड़लक ओ तऽ अपन उग्र रूप मे पुनः कायम भऽ गेल । पिछला 15 साल सॅऽ एकरा बीमारी बूझि कतऽ–कतऽ नहि दवाई लेलहूँ मुदा कोनो लाभ नहि भेल । ओ तऽ धन्य, भोलू झा जे जबरदस्ती मौलवी साहेब केऽ पास मस्जिद पर नेने चल गेलाह ई कहि जे हमर भातिज कतेक साल सॅऽ राति मे उल्टी करैत बेहोश भऽ जाइत छल – हर दू–तीन दिन पर पानि चढ़ाबऽ पड़ैत छल । मौलवी साहेब केऽ झाड़–फूक सॅऽ आब स्वस्थ्य अछि । हमरा देखि मौलवी साहेब कहलनि जे अहॉ केऽ किछु कयल गेल अछि । दू–तीन बेरि आबऽ पड़त आ ठीक भऽ जायब । वाह–रे–संयोग, हुनक बात सॉच निकलल । साल भरि भऽ गेल छल एक बेरि नहि तऽ पेट फूलय आ नहि कोनो डकार । विज्ञान के विद्यार्थी भऽ बड़ मुश्किल सॅऽ एहि बात के पचा सकल छलाह कि संयोगक पुनरावृत्ति सॅऽ हताश आ परेशान भऽ गेलाह । सोचऽ लगलाह अपन ऑखि सॅऽ देखि, अपन शरीर पर झेलि कऽ जखन नींद सॅऽ नहि जागब तऽ मूर्खता होयत । लौकिक आ अलौकिक मे भेद करहि पड़त । हमर साक्षात्कार अगर लौकिक तत्व सॅऽ भऽ रहल अछि तऽ की अलौकिक तत्व केर कोनो अस्तित्व नहि अछि ? होईत तऽ जरूर अछि जेना महसूस कऽ रहल छी मुदा ओहि अलौकिक के प्रत्यक्षतः प्रमाण नहि अछि । प्रमाण तऽ ईश्वरक प्रत्यक्षता के सेहो नहि अछि मुदा ई तऽ

सार्वजनिक सत्य अछि जे ईश्वर छथि आ अपन शक्ति सँऽ एहि लोक के संचालित कऽ रहल छथि । ताहि संदर्भ मे जे हमरा साथ भऽ रहल अछि, की ओ प्रमाण नहि अछि ? हम तऽ सिर्फ एतेक बूझैत छी जे ईश्वर एहि संसार मे जे समस्या उपस्थित कयलनि अछि तकर समाधानो निर्धारित कऽ देलनि अछि सिर्फ हमर प्रयास ओहि समाधान के खोजऽ मे हेबाक चाही । तथापि अगर ई सब सत्य थिक तऽ एकर दंड, दोषी के जरूर भेटबाक चाही । परिवारक निःश्छलता पर ओ बड़ गर्व करैत छलाह । सोचलनि जे भौजी तऽ बाहर सँऽ आयल छथि हुनक व्यवहार आपत्तिजनक भऽ सकैत अछि मुदा अपन भाई ओ–किएक नहि हमर साथ देलनि । किएक नहि हमर हाल पर दुःखी भऽ सहानुभूति केर दू शब्द कहलनि ? पत्नीव्रता एतेक भऽ गेलाह कि हमरा अपन परिवारक दायरा सँऽ बाहर निकालि देलनि । हुनका बचयबाक हेतु हमर तन–मन तक के सौदा कऽ लेलनि । बचपन मे साथ बीताओल गेल ओ सब साल जकरा हम अपन धरोहर मानि संजोअने छलहुँ – आब कतऽ फेंकि सकैत छी । फेंकहि पड़त, किएक तऽ अस्तित्व केऽ रक्षा प्रत्येक मनुष्य केर प्रथम कर्त्तव्य थिक । अधर्म तथा अन्याय के विरूद्ध अगर ठाढ़ नहि होयब तऽ जीवन श्रापित भऽ जायत । पुनः अपना के नहि साम्हारि तऽ हमरो तऽ परिवार मे एहनो व्यक्ति छथि जिनक आश सिर्फ हमही छी । हमर विस्तृत दायरा बला परिवार हमरा प्रति की रवैया राखैत छथि से देखि अगर एहि दायरा के हम आबो संकुचित नहि करी तऽ बज्र मूर्ख बनि जायब । अगर हमहूँ दृढ़निश्चयी छी तऽ ई तय भेल जे बड़का भैया आ भौजी सँऽ कोनो रिश्ता आगू नहिं राखल जाय ।

सब तरहक संपर्क बंद भेल – आबर–जात, हुक्का–पानी,

नौत–पिहान सब बंद । जिंदगी दू राह धऽ कऽ नहि चलल जा सकैत अछि । एहन तरहक अपराध व्यक्तिगत नहि मानल जा सकैछ । ई अपराध तऽ सृष्टि के रचियता के प्रति सेहो थिक जिनकर आज्ञा आ इच्छा सँऽ जीवन आ मृत्यु केऽ चक्र निर्धारित भेल अछि । हुनक रचना, हुनक इच्छा आ हुनक रचित सुःख–दुःख केऽ चक्र सँ छेड़खानी ओहि परमपिता केऽ अधिकार मे दखलंदाजी भेल जे एक ईश्वर मे विश्वास करऽ बला व्यक्ति के अत्यंन्त दुःखदायी प्रतीत होयत । एहि तरहें मर्मान्तक पीड़ा के महसूस करैत अभिबाबू तय कयलनि जे चाहे जे भऽ जाय कोनो परिस्थिति मे अपन ज्येष्ठ भाई–भौजी केऽ साथ कोनो संपर्क नहि राखब ।

सुन्दरभाय ! ओ किएक कन्नी काट' लगलाह ? बच्चनजी आ सविता केर कथा मे असहमत भऽ जायब की हिनकर लहू के रंग बदलि सकैत अछि ? सहमति आ असहमति होयब तऽ प्रजातांत्रिक अधिकार छी । कोनो मुद्दा पर अगर असहमति भेल तऽ ई कारण भ्रातृत्वक समापन हेतु पर्याप्त मानि सकैत छी – नहि कदापि नहि । सारि के बियाह भाई सँ नहि होमऽ देब तऽ जे सब अवरोध करत तिनका सँऽ रिस्ता टूटल । एतेक स्वार्थी ओ नहि भऽ सकैत छथि । मास्टरीक' परीक्षा काल तक तऽ ओ हमर एतेक ध्यान धरैत छलाह जे हमर आध–एक घंटा के अनुपस्थिति हिनका खलैत छलनि । हम एकरा भ्रातृप्रेम बूझि गौरवान्वित होइत छलहूँ । एखनहुँ ई विश्वास नहि जे ओ सिर्फ स्वार्थ छल । हँऽ–तखन लोकक अपन–अपन परिवार विकसित नहि भेल छल । बाल–बच्चचारूपी बंधनमुक्त छलहूँ तऽ प्रेम स्वार्थमय नहि भेल छल । तखन तऽ ई बूझल जाय जे अपन परिवार विकसित भऽ जायब जेना स्वार्थी बनऽ हेतु लाइसेंस भेल । वाह रे प्राणी ! तों तऽ बुद्धि के स्वार्थ आ कपट

सॅऽ बदलि देलह । जे जतेक स्वार्थी आ कपटी अछि ततेक बुद्धिमान मानल जायत अछि । धरती पर एतेक विकास विनाशकेर द्योतक थिक । तखन कहबैक जे कलियुग आबि गेल । कलियुग आबि नहि गेल हम सब मिल कलियुग आनि देलहुँ आ चाहत रखैत छी जे हम एहि सॅऽ बॉचल रहि । से कोना होयत–जखन नाव डूबत तऽ ओहि पर सवारि सबहक मालिक तऽ ऊपरेवाला भऽ सकैत छथि – कतबो हाथ पारि मारू । सुन्दरभाय ओ भौजी जखन दिल्ली आयल छलाह तऽ हमर हाल सुनि अपनहुँ आपबीति सुनाबैत कहने छलाह – हॅ तों ठीके कहि रहल छह – भौजी केर हाव–भाव निश्चित रूपें आपत्तिजनक अछि । पाछॉ हम जनम–दिन पर एक शर्ट आनलहूँ । नीक रंगक शर्ट छल । बाहर निकलतॅहि टोकलनि नबका शर्ट पहिरिकऽ जा रहल छी ! से पानक दोकान तक पहुँचतॅहि ऐना सॉस बंद भेल आ पूरा देह घाम सॅऽ तर–बतर भऽ गेल – बूझि पड़ल आब प्राण गेल । तखन अचानक भगवतीक स्मरण प्रारंभ करितॅहि आराम होमऽ लागल आ जान बॉचल । तकर बादे सॅ ई जन्तर नेने छी नहिं तऽ कखन की – होए के जाने ?

कतेक बरख बीती गेल – जखनहिं सॅऽ सविता आ बच्चनजी लग अएलाह सुन्दरभाय कथी लेल फोनों सॅऽ हाल–चाल बूझि लेबाक कष्ट करताह – ओ तऽ बूझैत छलाह जे अभिमन्यु तऽ एहि घोड़ापाय में साथ देमऽ बला नहि छथि । ठांय–पठांय बजबे करताह । तखन पाथर पर माथ किएक मारी – दूरे रहि रहल छथि, कोनो खास फर्क नहिंए पड़त । गप्प तऽ ठीके अछि । पाथर केर भगवानो अगर एक सीमा तक नहि सुनैत छथि तऽ मनुष्य द्वारा भगवान सॅऽ फेरि पाथरे बना देल जाइत छथि । हम तऽ एक साधारणे व्यक्ति थिकोहुँ । परञ्च, जाहि पारिवारिक स्नेह रूपी बंधन सॅऽ लटपटायल नहुँ–नहुँ

व्यक्ति पैघ होइत अछि, ओहि बंधन सँऽ मुक्त भऽ जायब एतेक आसान अछि । पासो–पड़ोसक व्यक्ति अगर बीमार भऽ जायत छथि तऽ हाल–चाल जानि लेब मनुष्यवत होइत अछि । काज निकलि गेलनि आब ओ किएक खोज करताह ? आजुक भागम–भाग मे अपन परिवार छोड़ि ककरा एतेक फुरसत अछि जे आन तरफ ध्यान देत – शायद यैह सोचैत होयताह । एहि क्रम मे तऽ पुनः ई सिद्ध भेल जे अपन परिवारक परिभाषा बाल–बच्चा भेला उपरांत बदलि जाइत अछि । हम फेरि गलत सिद्ध भेलहुँ । बचपन मे गढ़ल परिवारक मतलब एखन तक मनःस्थिति मे समाहित कयने छलहुँ । एहि मे बदलाव हेतु समय कखन आबि गेल पता नहि चलल । करियरक मंच पर अव्वल रहि गेला सँ अक्सर व्यक्ति पारिवारिक खेल मे फिसड्डी भऽ जाइत अछि – आई महसूस कऽ रहल छी ।

संबंधक एहि ऊहापोह मे डूबि–डूबि कऽ अभि बाबू मर्माहत भऽ गेलाह आ तय कयलनि जे – गाम नहि जायब । जखन परिवार आब ओ नहि अछि जतय आ जकरा साथे जन्म लेलहुँ, पैघ भेलहूँ, तखन गाम किएक जाय, ककरा हेतु जाय ।

.....

५

विवाह भवन सामान्य रूप सँऽ सजाओल गेल छल । शहनाई वादन जारी छल । विवाह–स्थल पर बेसी चहल–पहल नहि छलैक । लड़की पक्षक बेसी व्यक्ति बारात पक्ष दिश कूच कऽ गेल छलाह । तीन–चारि व्यक्ति जनवासा धरि चहल कदमी कऽ व्यवस्था अवलोकन सँऽ संतुष्ट भऽ पंडाल मे खाली कुर्सी पर ओंठगल छलाह । ओयह संख्या मे मौजूद स्त्रीगण मरबा लऽग बैसि ओंघा रहल छलीह । सबटा देखले–सुनल छलनि । कौतुहलक अभाव स्वाभाविक छल । एक रस्मक अदायगी छल जाहि हेतु वर्त्तमान उपक्रम अनिवार्य छलैक । ''देखले कनियां, देखले बर, ओ गेलाह कोबर हम जाइछि घर'' बला कहबी सब पर हाबी छल । बीच–बीच मे नाच–गानक टोली जोर दऽ अपन पसंदीदा गीत पर डांस कऽ रहल छलाह । 'हनी सिंह' आओर 'बादशाह' केर आधुनिक गीत मध्य प्रतिद्वंदिता जारी छल । नाचऽ बला व्यक्ति मे बेसी पड़ोसक आवारा किस्मक युवा सभ छलाह जे मुँह में गुटका दाबि तन्मयता संग डांस कऽ रहल छलाह । एक दोसर सँऽ आगा बढ़ि–बढ़ि प्रयास भऽ रहल छल । किन्साइत ईएह डॉस–फ्लोर सँऽ प्रशंसा के प्रचंड आवेग उठय आ ब्रेक भेटि जाय । बारात एखन नहि पहुँचल छल ।

बिलौकी समय बरक' मांथ सँऽ पाग खसि पड़ल । मनोरमा नचैत–नचैत सौ रूपया केऽ नोट बच्चनजी के निहुँछि हवा मे उड़ाब' चाहलीह । एहि क्रम मे हुनक माथ पर टिकाओल गेल पाग लटपटा कऽ खसि पड़ल । कानाफूसी प्रारंभ भेल । किओ कहैत छलनि पाग आई नहि खसल, ओ तऽ ओहि दिन खसि पड़ल छल जहन पैघ भाय–भावज चालाकी सँऽ छोट भाय जे अस्वस्थ्य छलनि, अपना लाभ हेतु बोरि देलनि । दोसर कहलनि, घोर कलियुग अछि । स्वार्थ ओ कपट बीच किनको आभाष तक नहि छनि जे अभिमन्यु किएक अनुपस्थित छथि । बरू लोक

तऽ खुश छथि जे काज भऽ जाय से नीक । ओ अएताह तऽ भंडाफोड़ भऽ जायत । बच्चनजी हुनक संपर्क मे अबितॅहि प्रभाबित होमऽ लगैत छथि । तेसर बजलाह – किएक नहि प्रभाबित होयताह, तन–मन–धन सॅऽ हिनक तरक्की मे अभिमन्यु केर योगदान छनि । मुदा मायाजाल मे फॅसि कऽ ओ सब किछु बिसरि गेलाह । पाग तऽ हुनक तखनॅहि खसि पड़ल छलनि ।

धरमबाबू अपन कान सॅऽ रंग–बिरंगक शब्दवाण सुनि आहत भऽ गेलाह । हुलसि कऽ डपटलनि, – ''खुशी मे एतेक आन्हर नहि भऽ जाऊ कि आगा–पाछा किछु नहि देखी । कतेक अपशगुन भेल– बिलौकिए समय पाग खसल । लोक कतेक बात बना रहल अछि'' ।

भरल लोकक बीच अपन अपमान सॅऽ ओ आहत भऽ गेलीह । आब ओ अपन मान–सम्मान बूझऽ लागल छलीह । पहिने हिनकर मोल ओहि घर मे दू कौड़ी के छलनि । आब संसद मे बहुमत साक्षात अपन पक्ष मे प्राप्त छलनि । तमतमा कऽ विषाक्त स्वर मे बजलीह – ''अपन भीतर किएक नहि देखैत छी ! अहां पर छोड़ि दिअ तऽ किनका बकसि देबनि । कोनो पहिल बेरि अछि जे दू–बहिन एक घर मे आबि रहल छैक । हॅ, अहांक चकरचालि पर आब लोक मुँह खोलि सकत । तखन कोन अनर्थक गप । जखन अहां के सुपुत्री लेल हमर घर सॅऽ गोलटक प्रस्ताव भेल तऽ कोना तक्षण एहि कथा के स्वीकृति दऽ देल । मुदा ओ कथा अहां के पैर नहि लागल तऽ खबखबायल छी । हमर छोटका पप्पा कोनो मूढ़ नहि छथि जे एहन कुचक्र मे पड़ि भरि जिनगी माथ पीटताह'' ।

बड़ भारी अपमान भेलनि । सब अभ्यागतक बीच मे । चुप रहि जायब तऽ आओर नाक कटत । टोन दऽ बजलाह – ''आओर नाचू । रोड पर पैघ लोकक स्त्रीगण आई–काल्हि नाचि सकैत छथि'' । एतबा सुनतॅहि बपहारि काटि कानअ लगलीह । दहाड़ मारि–मारि कऽ जहन कानैत देखलनि तऽ प्रमोद भावज के पक्ष मे पैघ भाईक संगे उद्‌ंडतापूर्वक वाक्यार्थ प्रारंभ कयलनि । दूनू पक्षक लोक एकत्र भेल । भाईसाहब द्वारा

कॉलर पकड़ला पर प्रमोद हिनका धक्का दऽ देल । से देखि कऽ रोहित केऽ गर्म खून उफान पर आयल । आबि कऽ धऽ लेलनि अपन पित्ती के गरा । लोकक हस्तक्षेप सँऽ अलग भेलाह । धरमबाबू पुत्र केऽ कहलनि – ''आइ बुझना गेल जे तोँ हमर पुत्र छँऽ'' । सुनि कऽ पुनः आगि लागि गेलनि प्रमोद केऽ । ललकारि उठलाह – ''हमरो पुत्र जखन जवान होयत तखन अहांक ई सुपुत्र अधेड़ । आ अहां भऽ जायब झुनकुट बूढ़ । तखन अहांक सोझा मे हमर पुत्र रोहित के गरा धऽ पटकि अहींक चरण मे नहि खसा देलक तखन कहब । नहि तऽ एकसर आबि फरिया लिअ'' ।

छिड़ल महाभारत के बर आबि शांत करैत छथि । तखन जा कऽ बरात निकलल । अपन पक्ष मे पति समेत तीनू भ्राता के मत पाबि मनोरमा आब निर्विरोध विधायक घोषित भऽ गेल छलीह । बारात संचालन से लऽ अभ्यागत सबहक इंतजाम सब दूनू माँ–बेटी स्वयं कऽ रहल छलीह । वर पक्षक इच्छानुसार विवाह हेतु कन्यागत् कटिहार आबि इंतजाम कयने छलथि । बरवासा आओर जनवासा आध कोष मध्य छल । कनिया माय भिनसरे आबि समधिन सँऽ दू बेरि गरा मिल चुकल छलीह । दोसर बेरि समधिन बन' केर खुशी पहिल बेरि सँऽ बेसी अनुभव भऽ रहल छलनि । ई खुशी नवसमधिन बनऽ के छलनि की अपन राजनीतिक फतह होयबा के से नहि कहि । अपन पक्षक इंतजाम सँऽ बेसी वरपक्षक घटनाक्रम पर तीव्र नजर राखऽ हेतु ओहिठामक' सब इंतजाम सुचारू करऽ मे ओ स्वयं हाथ बँटा रहल छलीह । सब सँऽ बेसी प्रसन्नता छलनि जे अभिमन्यु विवाह मे उपस्थित नहि छथि । मास दिन सँऽ करेजा धक–धक कऽ रहल छलनि, किंसाइत ओ आबि कऽ खेल नहि खराब कऽ देथि ।

अभिमन्यु विवाहक घोर विरोधी नहि छलाह । जाहि चालाकी ओ छलपूर्वक वर के अपना पक्ष मे कयल गेल छल ओ एकर समर्थन नहि कयलनि । पुनः आहत छलाह जे पैघ होइतहुँ हमरा सँऽ सब किछु चोरा कऽ राखल गेल । कन्यापक्ष एहि बातक लाभ लेलनि जे ओ गाम

नहि जा रहल छथि । परिवारक सदस्य अपन–अपन स्वार्थ साधऽ हेतु बात गुप्त रखलक । पिता केऽ देहांत बाद छोट भाई के जिम्मेवारी पिता सदृश निभायल, मुदा हिनका एहि बात सँऽ बेसी फर्क नहि पड़ि रहल छलनि कि भ्राता विवाह मे उपस्थित छथि कि नहि । एहि विवाह मे अपन प्रतिष्ठा घर सँऽ बाहर तक आहत पाबि ओ एकांत पसंद कयलनि । मुख्य प्रपंचकर्त्ता पत्नी समेत सुंदर भाई केऽ पाबि ओ अनुज के सब अभियोग सँऽ मुक्त कऽ देने छथि । अभिमन्यु विचारैत छथि – सासुरक एतेक पैघ भक्त ओ नहि छथि मुदा अपन पक्ष मजबूत करऽ हेतु ई आडम्बर रचोअनि । बच्चनजीक' झुकाव हमरा तरफ विशेष भऽ जायत । कमाब' बला पद पर जा रहल छथि, हिनक सत्यनिष्ठा बढ़ि गेला सँऽ माथक बोझ हल्लुक होयत । हमर नाम तक नहि आयत । ओ तऽ स्वयं विवाह करऽ चाहैत छथि ! हम की करी ?

सुंदर भाई केर क्रियाकलाप पर अवलोकन कऽ आओर हुनक वैचारिक संबल पर दृष्टिपात कऽ आहत होईत छथि । तदुपरांत विवाह सँऽ असंपृक्त होयब तय कयलनि । विवाह मे शामिल भऽ ओहि कुत्सित आकांक्षा केर समर्थन नहि कर'क चाही ।

आखिरकार बाराती आगू बढ़ल । बारातक संग नाच' बला व्यक्ति मे बर पक्षक लोक सँऽ बेसी कन्या पक्षक लोक छलाह । आब जीवन–स्तर ऊँच भऽ गेल अछि । के–स्त्री, के–पुरूष, सब सड़क पर अपन हुनर ताकऽ मे व्यस्त छलाह । माताजी क' विरोध पर धरमबाबू बूढ़ सोच के मुहर मारि देने रहथि । स्त्रीगण आब निश्चिंत भऽ अपन खुशी के नाच मे परिवर्तित कऽ सकैत छलीह । माताजी बड़बड़ाइत छथि – जहन अपन कनियां जवान छलनि तऽ मजाल छल दीयर तक सँऽ बात कऽ लेतीह । मुदा, स्वयं छोट भाईक सारि संगे बुढ़ भेला उपरांत होली मे भागमभाग करऽ सँऽ नहि परहेज । आब की भेलनि–जवान बहु–बेटी रोड पर नाचतैक ? नाक नहि कटत ? चिचरी बाली काकी हुनका समझा–बुझा कऽ कात करैत छथि । बारात आरकेस्ट्रा संगे बेखबर

आगॉ बढ़ल जाइत अछि । आरकेस्ट्रा बला आई मदारी बनल अछि । एक–सॅ–एक युवा–युवती आई हिनक इशारा पर नाच कऽ रहल छथि । ओ गौरवे मदहोश भऽ रहल छल । गाना बाजि उठल – ''तू लगावेल जब लिपस्टिक.....हिलेला सारा डिस्टिक.....जिला टॉप लागेलू । कमरिया.....कमरिया लचके लपालऽप, लॉलीपॉप लागेलू.....'' । नृत्य दल मे अचानक सूतल जोश जागृत भेल । मोट सॅऽ मोट युवक ओ युवतीक' लहर उफान पर पहुँचल । साड़ी केर स्थान पर लहँगा–चुन्नी पंजाब सॅऽ मिथिला, मेहमान बनि आयल छल । आब ओ मेजबान थिक । पहिने साड़ी सॅऽ प्रेम रहितो जिनका साड़ी पहिरऽ नहि होइत छलनि ओ लहँगा–चुन्नी सॅऽ काम चलाबैत छली । आब ओ प्रतिष्ठा फैशन आओर उच्च वर्गक प्रतीक अछि । समय संग नहि चलब' तऽ पिछड़ल कहल जायब । एकटा समय संग चलऽ बाली युवती उच्च एड़ी बला सैंडिल पहिर नाच मे मस्त छलीह । हिनका इर्द–गिर्द नाच करऽ बला युवा लोकनि हिनक कमर केऽ प्रत्येक लचक पर स्वयं पर सॅऽ कन्ट्रोल छूटि जायत छलनि । युवतीक' संग स्टेप मिलाब' हेतु जी–जान लागल छल । जेना स्वघोषित प्रतियोगिता हो जाहि मे जीतऽ बला केऽ युवती संग स्वच्छंदता के इनाम हो । एतबा मे सैंडिल कंपनी केऽ राज खुजल आ सैंडिलक हील नाच सॅऽ अपन नाम वापस लेलक । युवती तलमला कऽ खसलीह । लहराइत लहंगा अचानक सिमटि कऽ हिनक ऊपर विश्राम कऽ रहल छल । जेना पैराशूट मे छेद भेला सॅऽ ओ एकटा बोझ सन खसि पड़ैत अछि । पास मे नाचऽ बला एक टा युवक एकरो एकटा स्टेप बूझि नकल करैत संगहि खसलाह । हिनक भिड़ंत सॅऽ एक आओर व्यक्ति धड़ाम भेलाह । हँसी के फब्बारा छूटल । पायर मुड़ि गेला सॅऽ मोच आबि गेलनि ओहि नृत्यांगना के । युवती के कुँहरन सुनि धरमबाबू गान बंद करौअलनि । नाच रूकल । बरसलाह आरकेस्ट्रा बला पर – ''तोरा के कहल ई अभद्र गीत बजाब' हेतु ।'' ओ आब स्वयं मदारी सॅऽ बानर बनि दांत देखा कऽ बाजल – ''अहींक बराती के एकटा व्यक्ति....

..... नाक चपटल ..... गोर छथि .....।'' देखा कऽओ रहथि । हम तऽ पुरान गाना – ''साजन मेरा उस पार है ..... मिलने को दिल बेकरार है'' से बजाब' चाहैत रही । ओ हमरा धमका देलनि । हम की करब ! अहीं सबहक आदेश पालन हेतु आयल छी ।

– ''बस.....बस....बेसी नहि बाज । पचास व्यक्ति पचास तरहक गाना बजाब' कहतौक तऽ बजा देबहक'' । धरमबाबू त्यौरी चढ़ाबैत नसीहत देलनि ।

आरकेस्ट्रा बला अपना के बेगुनाह सिद्ध करऽ हेतु तत्पर छल । बकार निकालैत अछि – ''मुदा ओ तऽ कहैत छलाह – हमहीं मुख्य कर्त्ता छी । लड़की के पैघ भाय'' ।

लपकि कऽ ओ फूकनजी केऽ धऽ लैत छथि – ''एँ ओ फूकनजी ! अहाँ कोना एम्हर सँऽ माइनजन भऽ गेलियैक ? ओ ओवरडोज दऽ कऽ नाच मे व्यस्त छलाह । बात खुलक' डर सँऽ पराब चाहैत छलाह । जान छोड़ाब हेतु ठोढ़ पटपटाब' लगताह – ''हऽऽम ? अहां छीऽऽऽ..... के कहलक'' ?

कने शांत होइत धरमबाबू (बाँहि छोड़ैत) – ''अहां आरकेस्ट्रा बला केऽ ई अभद्र गाना हेतु किएक जोर देलियैक । दोसर बारातक संगे–संगे नाचैत अहां किएक जायत छी ? अपन जनवासा केर इंतजाम देखू । अहीं कारण ई दुर्घटना घटल अछि'' ।

– ''कतेक लोक नाचि रहल अछि । जिनका नाचऽ नहि अबैत छनि ओ खसल छथि । हमर कोन दोख'' ?

मुँह पूरा खोइलतॉहि दारू केर दुर्गंध सँऽ धरमबाबू अपस्यांत भऽ गेलाह । स्वयंमेव दू कदम पाछां हटैत छथि । एतबा काफी छल फूकनजी केऽ रफूचक्कर होम' मे ।

लोकक बीच मे खसल युवती एखन धरि कानि रहल छलीह । पायर सीधा नहि होम' कारण असमर्थता झलकि रहल छल । दोसर व्यक्ति के खसऽ काल मे केहुनी पेट मे से लागल छलनि । धरमबाबू

लोक सब केऽ कात करैत आगॉ नजर देल । देखैत छथि ओ युवती फूकनजी केऽ पितिऔत बहिन रम्भा छथि । नजरि एक बेरि पुनः चारू कात फूकन के खोज करऽ लगैत छनि । दू गोटा मिलि रम्भा केऽ सहारा दऽ लऽ जायत छथि । तत्पश्चात् बरात आगां बढ़ल । नाच–गान बंद करा सींधे बढ़बाक आदेश जारी भेल । जनबासा लागिते सब अपन–अपन पक्ष पकड़ि हाजिर भेलाह । ओंघाई बाली सब मे अचानक विद्युतक संचार भेल । केओ लोटा भरि जल मे आमक पल्लव लऽ दौड़लीह, केओ ओरियाओल समान समेत डाला उठा कऽ ।

एक गोट अधवयस स्त्री गीत उठोअलनि – ''आऽगे.....माई सीता चललि.....बऽने–बऽन । आगे माई.....रऽघुपति करै छथि प्रण'' । आगे माई.....सीता.....।

हां.....हां.....रोकू..... रोकू – कनिया माय सुनि दौड़लि आबि फटकारैत छथि – ''ठीक सॅऽ गाबै जाऊ । सबटा टोटका हमरे काज मे फुराईत अछि'' ? पुनः टॉस मारैत छथि – आगे.....माई. ..सीता चललि उपवऽन ! आगे माई.....।''

स्त्रीगण अपन भूल पर लजा कऽ संग देबऽ लगैत छथि । मंडली सॅऽ निकलि हिनक राग – छनि–छनि केऽ बाहर आबि आन स्त्रीगणक उपयोगिता गौण कऽ रहल छल । गीतक संग–संग जयमाल हेतु कनियां दूनू तरफ सॅऽ सहारा लऽ सकुचाईत नहु–नहु डेग भरैत छथि । समय–चक्र किछु काल रूकि अपन गर्भ समाहित होम' बला एक आओर घटना ''कलियुग'' नामक अध्याय मे संचित कयलक ।

जनबासा पर नास्ता पैकेट बॉटऽ काल पूबरिया झुग्गी सॅऽ बच्चा सभक आक्रमण भेल । फटेहाल करूण भाव सॅऽ हाथ आगॉ कऽ अतिशीघ्र पैकेट ग्रहण कऽ परा जयबाक फेर मे आपस मे होड़ कयने । कतेक तऽ बाराती सॅऽ पहिने हासिल कऽ लेलनि । फूकनजी नजरि पड़िॅतॅहि एकटा सोंटा लऽ चुपचाप अबैत छथि । दनादन सोंटा चलऽ लागल । ओ बालक सब तिलंगी भऽ गेलाह । पूबरिया टोल विवाह भवन सॅऽ तीन–चारि सौ

फर्लांग/मीटर दूर छल । अक्सर विवाह इत्यादि अवसर पर ओ सब अपन स्वाद केऽ नया संस्कार देब' के फिराक मे रहैत छलाह । कऐक बेरि चूहा–बिल्ली केऽ खेल शुरू भऽ जाइत छल । मुदा आई तऽ लाठी चार्ज देखि अकिल गुम्म भऽ गेल छलनि । लत्ते–पत्ते पार होम' क्रम मे एकटा चारि सालक बालक हाथ मे पैकेट नेने भागैत छल । दू–तीन सोंटा पाछां सॅऽ लगिते बेचारा बपहारि काटैत खसल । मुँह मे कटलेटक' एकटा टुकड़ा चिबाबैत । नोर सॅऽ दहोबहो । तन पर उजरि रंगक एकटा गंजी पहिने जे रंग बदलि कारी भऽ रहल छल । सोंटा केऽ निशान देह पर स्पष्ट देखल जा सकैत छल । हरिकाका ई करूण दृश्य देखि विचलित भऽ बालक के सहारा दैत चिंघारैत छथि – ''हौ नरपिशाच । मदांध भऽ गेलहुँ कि ? एकहि डांग (अपन हाथक लाठी जकर मोड़ल भाग पकड़ि चलैत छलाह, देखा कऽ) पड़ल नहि कि होश वापस आबि जायत । नव–खजाना पाबि अपन दिन बिसरि गेलहूँ । ''

फूकनजी एक लीवरक वृद्धक मुँह सॅऽ एतेक तीव्र चिंघार सुनि आवाक रहि गेलाह । डांग सॅऽ स्वयं केर बचाव करैत बजलाह – ''ई छौरा पैकेट–पर–पैकेट पार केने जायत छल । देखियौक ने दूटा पैकेट एखनहुँ धेने अछि'' ।

बच्चा कानैत–कानैत बाजल – ''बलाती छब खा कऽ धऽ देने छल । हम सेह पाकिट उठा कऽ जाइत रही'' ।

समालोचना सिंह आइंठ पैकेट बालक केऽ उठाबैत देखने छलाह । मौका पर गवाह भेटि गेला सॅऽ फूकनजी हथियार खसा देलनि । दूनू सुहृदय व्यक्ति बालक के पुचकारि शांत करौलनि । मुदा हरिकाका फूकन केऽ माफ करऽ के पक्ष मे नहि रहथि । सबटा बच्चा सबके संबोधन कऽ घोषणा कयलनि – ''सब बालक सब चलै–चलू । अहां के बाराती मे शामिल कयल जाइत अछि । जा धरि बारात रहत अहां सब एहिठामक मेहमान रहब । एहि मे कोनो विरोध भेल तऽ कोनो बाराती अन्न ग्रहण नहि करत'' ।

बालक सबहक ऑखि मे तीव्र चमक जागृत भेल, मुदा मुखमुद्रा सशंकित । एहनो कहीं होईक । चोट लागल बच्चा अचानक चुप भऽ नोर पोछऽ लागल । अपन मैल गंजी वा ओहि मे व्याप्त छेद सब पर नजरि मारलक । हरिकाका दुविधा समाप्त करै छथि – कोनो बात नै । जहिना छी तहिना चलै चलू । अहां सबहक पूरा खातिर होयत – की औ लोचनाजी'' ।

उपस्थित पांच–सात समर्थ व्यक्ति सबहक सहमति पाबि चारू कात जमा बालक सब संग भेलाह ।

बीस–बाइस टा फटीचर बच्चा संग नेने वृद्ध हरिकाका जनबासा पहुँचि जायत छथि । जेना वृद्ध जामवंत बानर सेना केऽ अपन स्नेह ओ मंत्र सॅऽ स्फूर्ति केऽ संचार कऽ रहल होथि । अपन झुकल डांड़ तानअ केऽ असफल प्रयास करैत घटनाक्रम सॅऽ धरमबाबू के अवगत कराबैत छथि । ओ फूकन केर किरदानी सुनतॅहि आपे सॅऽ बाहर होइत छथि – ''ई अबंड–के–अबंडे रहि गेलाह । आर की उम्मीद कयल जा सकैत अछि ऐहन पियक्कड़ सॅऽ'' ।

धरमबाबू नाच' बला घटना सॅऽ क्रोधित छलाह । हरिकाका के फैसला पर संगहि मोहर लगा देलनि । सर्वप्रथम बालक सब केऽ पांति लगाओल गेल । बारातीं हेतु तैयार प्रत्येक व्यंजन पाबि ओ उपेक्षित लोकनि संतृप्त छलाह । आब ओ सब बेसी काल ओतऽ रूकब नाजायज बुझलनि । कृतज्ञता सॅऽ बेरा–बेरी काका के चरण–स्पर्श कऽ बंदूक सॅऽ छूटल गोली जकां नौ–दू–ग्यारह भऽ गेलाह । दूर तक भागि रहल बालक सब के निहारैत क्षण हरिकाका केऽ मन गर्व सॅऽ प्रफुल्लित छलनि । ओठंगर कूटऽ हेतु हकार अयला पर ध्यान भंग होईत छनि ।

सिंदुरदान समय लड़की पक्षक आग्रह पर पुनः विचार भेल आ तय भेल मर्जादक बिध सेहो बारातीक समक्ष सम्पूर्ण होयत । ओ सब संतुष्ट भेलाह जे कम सॅऽ कम एगारहो गोटे बॉचि जायथ तऽ अभिलाषा पूर्ण भऽ सकैत अछि । स्थानीय बारातीं रहला सॅऽ खा–पी कऽ सब केऽ

भागि जायब अपेक्षित छल । अंततः तय कयल गेल हरिकाका, समालोचना सिंह, रामसहोदर राय, रामबचन राय ओ धरमबाबू संग पंद्रह–सोलह व्यक्ति अवश्य रूकि जयताह । शोभा–सुंदर मे कोनो कमी नहि होमक' चाही ।

भिनसर चाय–नास्ता पाबि बारात–केबिनेट संतुष्ट छल । समालोचना सिंह चूरा–माछक प्रिय नास्ता कने विशेष दऽ पड़ल छलाह । रायजी दूनू भ्राता ताश हेतु संगीक' तलाश कऽ रहल छलाह । व्यवस्था–बात देखि अंदाज छल जे सांझ सँऽ पहिने प्रस्थान नहि भऽ सकत । अंततः रायजी, हरिकाका आओर सिंहजी के विरूद्ध फांड बान्हिं ट्वेन्टीऐट पर जमि गेलाह । दूनू भ्राता ट्वेन्टीऐट केऽ साबित जोड़ी छलाह । साम–दाम–दण्ड–भेद तक अपना कऽ जीतऽ मे माहिर । हरिकाका ओ सिंहजी परेशान भऽ गेलाह गेम सम्हारैत–सम्हारैत । बूझि गेल छलथि जे हिनका सँऽ जीतब असंभव । किछु सोचि रामबचन रायजी सँऽ कहैत छथि – ऍ ओ ! अहांक बालक सुनलहुँ इंजीनियरिंग मे नाम लिखा रहल छथि ।

रायजी ताश फेंक' हेतु गंभीरतापूर्वक विचार कऽ रहल छलाह । बालक केऽ प्रशंसा सुनि गर्वित भऽ उत्तर देलनि – ''हँऽ–हँऽ; जयपुर सँऽ 15 किमी दूर एकटा बड़ पैघ इंजीनियरिंग कालेज छैक । ओतऽ मनपसंद ट्रेड भेटि गेलनि । पलटुजी प्रारंभे सँऽ चंसगर छलाह । प्रवेश–परीक्षा मे नीक नंबर आयल छलनि । कतेक ठाम सँऽ कॉल आबि गेलनि । मुदा आई–टी ओहि ठामक नीक छैक ताहि दुआरे दूर भेजऽ पड़ल ।''

एतबा कहि डिक कऽ केऽ सिंहजी केर गुलाम बेदर्दी सँऽ कारी–पानक सत्ता सँऽ मारैत छथि – फटाक ! जेना कोनो मालिक पोसल नौकर केऽ छोट–मोट बात पर चमेटा मारैत हो । दूनू हाथे ताश समेटि पांजर लग राखि लैत छथि । समालोचनाजी एहि वार सँऽ आहत भऽ गेल छलाह । ताशक पात सभके पचास टा गारि पढ़ि चुकल छलाह

। गुलामक' अकालमृत्यु सँऽ थुथुन फड़कि रहल छलनि । ताश फेटैंत आगि उगललनि – ''औ जी ; कहैत छी बालक बड़ तेज छथि । तखन किएक अराइभेट–प्राइभेट कॉलेज मे नाम लिखा लेलनि । के पुछैत अछि आइ–काल्हि झोला छाप इंजीनियर केऽ । एकटा ढेपा मारू तऽ कोनो इंजीनियरे केऽ लागत । सात–आठ हजारक नौकरी दुर्लभ भऽ गेल अछि ।''

रायजी एतेक खतरनाक बाऊँसर सँऽ भीतर तक हिल गेलाह । ताश सँऽ बेसी प्रतिष्ठाक' रक्षा आवश्यक बुझना गेलनि । बिना कोनो जोड़–घटाव केने हड़बड़ा कऽ ताश हाथ मे लऽ देखैत डपटि उठलाह – ''अहां तऽ ऐना बजैत छी जी अहांक बालक ''आई–आई–टी'' सँऽ डिग्री लऽ कऽ घर बैसल छथि । ओ तऽ पंजाबक एकटा गामक' दू कमरा के इंजीनियरिंग केऽ दोकान सँऽ डिग्री खरीद लेलनि । नहि तऽ घर किएक बैस' पड़ितनि ।''

सिंहजी केऽ ताश पहिल बेरि पास भऽ रहल छलनि । कनेक धीरतापूर्वक उच्चारण करैत छथि – ''हम कखन कहलहुँ हमर बालक पढ़ मे होशगर छथि । बरू ! बुरिलेल सबहक हेतु एखन इंजीनियरिंग डिग्री बँटि रहल अछि । तऽ हम किएक पाछां रहब ? कथा–कुटमैती एक बात । दोसर इंजीनियर तऽ कहल जेताह । ओना के पुछतनि । मुदा अहां तऽ माइलेज लेब' लगलहुँ ।''

रायजी के समर्थन मे एखनधरि दोसर भ्राता सेहो शामिल भऽ गेल छलथि । भ्रातृत्वक निर्वाह करैत बजलाह – ''पलटुआ पारि धो कऽ फेंकि देत तऽ एहि गामक कोनो नेना नहि भेटि सकत । कनेक नम्बर सँऽ आई.आई.टी. छूटलैक नहि तऽ अहांक एतेक बकार नहि छूटैत ।''

आब बाजी बराबरी पर चलि रहल छल । हरिकाका बात दोसर तरफ मोड़ैत छथि – ''हम तऽ कहैत छी आब इंजीनियर केर जरूरते नहि अछि । सबसँ पैघ दू चारि कॉलेज छोड़ि सबटा बंद कऽ देबाक चाही । अखन बिहारक प्रत्येक घर सँऽ दस बारह लाखक चंदा इंजीनियरिंग

दुकान बला के जेब भरऽ मे चलि जायत अछि । दोसर प्राकृतिक वातावरण सॅऽ छेड़छाड़ विज्ञानक पढ़ाई सॅऽ बढ़ि रहल अछि ।''

राम सहोदर राय राजनीति सॅऽ संबंध राखैत छलाह । आगामी चुनाव मे विधायक हेतु सपरि रहल छलाह । हरिकाका केर वैज्ञानिक उपदेश पर आगिबबूला भऽ विषबाण छोड़ैत छथि – ''वाह–वाह ! कतेक उत्तम विचार । एक गोटा तऽ इंजीनियरिंग केऽ बूरिलेल हेतु घोषित कयलनि मुदा अहां तऽ धन्य छी । विज्ञाने के पढ़ाई बन्द करा देब' चाहैत छी । सेहो पलुटअे बेरि ऐतेक उत्तम विचार । औ जी ! किएक एतेक विचलित छी । बचना के कहि दैत छियैक पलटुआ के घर बैसा देथि । प्रकृति–रक्षा तऽ अतिआवश्यक छैक ।''

रायजी बात समाप्त कऽ ताश समेटि कऽ अपना दिश राखैत छथि । सिंहजी टोन दैत हाथ सॅऽ झपटि कऽ अपन कब्जा लैत छथि । बौखलायल रायजी आदत अनुसार ताश समेटि रहल छलाह । एहि क्रम मे ध्यान नहि रहलनि बाजी पलटि चुकल अछि । हरिकाका बात आगू बढ़ाबैत छथि – ''हमर से मतलब नहि । पढ़ऽ बला के राहक कमी छैक ? मुदा सोचऽ योग्य बात अवश्य छैक जे आब हमसब बारिश हेतु किएक तरशि रहल छी ? ओहि टाइम के शनिचरा आब कतऽ गेल ? जहन एक बेरि धऽ लैत छल तऽ सात दिन बादे राहत भेटैत । साग–सब्जी तऽ दूर, सूखल रोटी हेतु पहिने सॅऽ सतर्क रहऽ पड़ैत छल । आब एक बूंद बारिश भेल कि लगलहुँ सड़क पर नाचऽ । इंजेक्सन बला साग–सब्जी खा कऽ फूलि जाऊ । असमय अनेक रोग सॅऽ ग्रसित भऽ भोगैत रहू । सब विज्ञानक अति उपयोग सॅऽ भेल अछि कि नहि ?

बातक तूफान मे , चढ़ल कारी पानक पंजा ऊधिया गेला सॅऽ समालोचनाजी अत्यंत सहज महसूस कऽ रहल छलाह । शिकायत वापस लैत छथि – ''ई कोनो विवादक विषय नहि जे अहांक पलटु नीक पढ़ैत छथि । नीक विद्यार्थी सॅऽ आशा आर बेसी रहैत अछि । एहि मे अन्यथा लेबाक कोनो मुद्दा नहि अछि ।''

हारल बाजी बराबरी पर आबि चुकल छल । हरिकाका बात समेटैत छथि – ''ओहो ! रायजी ; अहां तऽ अन्यथा लऽ लेलहुँ । हमर बात तऽ सामान्य–जन हेतु छल । कोनो व्यक्ति विशेष पर नहि । विज्ञानक उपकार संगे अपकार हम सब बचपन मे पढ़ने छली । आब प्रत्यक्ष देखि विषयगत चर्चा उठल । किएक टेंशन लऽ रहल छी । बच्चा केऽ जाहि मे रूचि रहतैक सेह पढ़बाक चाही । ''

रायजी एखन तक शांत भऽ चुकल छलाह । किएक नहि होयताह ? क्रोध ओ प्रेम मे बहुत दिलचस्प समानता अछि – ''दूनू एकसर नहि चलि सकैत अछि । एक पक्ष अगर निर्लिप्त भऽ गेल तऽ दोसर केर आवेग स्नैः स्नैः समाप्त भऽ जायत अछि ।''

संध्याकाल तक सब विधान सम्पन्न भऽ चुकल छल । उचित दान–दक्षिणा प्राप्त कऽ बारात विदा भेल । कुटमैती केऽ एहि पुनरावृत्ति दूनू परिवारक संबंध केऽ कतेक नवीनता प्रदान करत से कहब असंभव ।

६

आई कचहरी मे बड़ पैघ केसक पैरवी छलनि । बहस देर तक चलल छल । फेर किछु मुवक्किल सँ लगातार विषयगत चर्चा – अभि बाबू थकान आ अस्वस्थ्यता सँऽ ग्रस्त भऽ घर पहुँचि सीधे अपन बिस्तर पर धड़ाम खसलाह । बीच–बीच मे मुँह सँऽ खून आयब जारी छलनि, जाहि कारण बार–बार उठि कऽ साफ करऽ पड़ैत छलनि । सांझहि सँऽ पेट फूलि कऽ जोर सँऽ दर्द शुरू भऽ गेल छलनि । डॉक्टरक लिखल दवाई सँऽ कोनो लाभ नहि भेटलनि तऽ गंगाजल पीबि किछु राहत प्राप्त करैत छथि । पानक दोकान सँऽ गाना केर शब्द आबि रहल छल –

''हर कदम पर कोई कातिल है कहाँ जाए कोई ।
जिंदा रहना बड़ा मुश्किल है कहाँ जाय कोई ।।''
.....
.....''

गाना के एक–एक शब्द शूल बनि अभि बाबू केऽ मन पर आघात कऽ रहल छलनि आ हृदय असीम वेदना सँऽ भरि गेलनि । अगर आघात करऽ बला बाहरी व्यक्ति रहत तऽ मन आक्रोश सँऽ भरि जायत अछि मुदा जखन ज्ञात होयत कि घाती अपन खूनक रिश्ता मे अछि तऽ पीड़ा असहनीय भऽ जायत अछि । तन केर संग मन तक घायल भऽ जायत अछि । अश्रुधारा कखन सँऽ बहि रहल

अछि से बूझि नहि सकलाह । मस्तिष्क केर बजाय हृदय मंत्रणा कऽ रहल छनि ।

कातिल के अछि ! अपने लोक, जिनक आगोस मे सब प्रकार केर समस्याक समाधान बूझैत छलहूँ । जिनक आर्शीवाद सँऽ सब तरहक बाधा पार कयल जा सकैछ वैह व्यक्ति हमर पीठ मे छुरा किएक मारलनि । हमर दोष की छल – शायद यैह जे अत्यंत् कर्मठ आ मेधावी रहलहूँ । बिनु एक अदद मार्गदर्शन होइतहुँ एक अत्यंत निम्न परिवार आ कठिन परिस्थिति रहलोपरांत अपन प्रगतिकेर रास्ता फतह कयलहुँ । झूलनजी नाहित हिनक अर्दली रहि पति–पत्नी केर चाकरी करितहुँ तह ओ शायद प्रसन्न रहितथि । हाय रे क्षुद्रता – तों आई अपन नव परिभाषा रचलह । रचनाकार थिकाह – श्रीमान आ श्रीमति धर्मनाथ दास ।

एहि रचना सँऽ प्रसन्नचित रहऽ बला मे झूलन सेहो छथि । ओ बेचारे शुरूआते सँऽ कने सामान्य विद्यार्थी रहि गेलाह । हजार प्रयास कयलनि जे कहुना एक गोट नौकरी, कोनो स्तरक, भऽ जाय मुदा उमिर बीति गेलनि – लेकिन विद्यार्थी जीवन नहि बीतऽ देलनि । डिग्री पर डिग्री लऽ लेलनि, दूर रहि गेलनि तऽ एकटा सरकारी नौकरी । मन कुंठित भऽ गेलनि – सब भाई सरकारी नौकरी करताह आ हम घास डेंगायब । सभक जीवन ठाट सँऽ एक निश्चित दिशा मे चलत आ हम एहिना भेगा–बाऊण्ड रहि जायब । ''जखन अपन संवृद्धि संदिग्ध भऽ जाइछ तऽ आन सबहक अवनति एक मात्र रास्ता सूझैत अछि अपन अस्तित्वक उपस्थिति दृष्टिगोचर होयबाक हेतु'' । तखन किएक चिंता करी – कतऽ की भऽ रहल अछि । हम तऽ नहि छी एकर दोषी । आ फेर लोक बड़ उडान भरैत अछि – कने जमीन पर आबऽ दिऔन । एहि पृष्ठभूमि मे किएक दखल देल जाय ।

घर–परिवार सम्हारैत बांकी सभहक खास समांग बनल छी । एहू लाथे लोक पूछैत अछि । एहि प्रसंग मे पड़ि नै घर के रहब नै घाट केऽ । अपन विभिन्न पूर्वाग्रह आ मजबूत तर्क–वितर्क अपन व्यक्तित्व में समेटि भ्राता झूलनजी निर्विकार छलाह ।

अभि बाबू बचपन केर संस्मरण मे वर्त्तमान संवेदनहीनता केर तालमेल ताकऽ लागैत छथि । कतेक स्नेह आ एकता सबसॅ बढ़ि अपनापन छल ओहि झोपरीनुमा खढ़क घर मे । एक बिछान पर तीन–तीन लोक सूति रहैत छलहूँ । भंसा घर ऊबर–खाबर जमीन रहला सॅ थारी नीचा सोंगर लगा कऽ खेनाई होइत छल, परञ्च ओ सोंगर सिर्फ थारीएक तर नहि, जरूरत पड़ला पर लोक केऽ सम्हारऽ हेतु सेहो आबि जाइत छल । बिहाड़ि–पानि आबि हमर एकता केर परीक्षा कऽ जाइत छल । सब भाई मिलि कऽ चाढ़ पकड़ि ऊड़ऽ सॅऽ बचा नेने छलहूँ । लूडो अपना हाथे बनि जाइत छल । देहातक सिनेमाघर मे पुआर पर बैसि कऽ ''पॉच राइफल'' सिनेमा सपरिवार देखबा मे जे आनन्दक अनुभूति प्राप्त भेल से शायद एखन तक कोनो आन सिनेमा प्रदान नहि कऽ सकल । हॅ काज करबाक हेतु एक दोसरक बाट जरूर जोहल जाइत छल । अधिकतर काज छोट भाई कऽ फॉटि आयब स्वाभाविक छल । सुन्दर भाई जरूर आन सब सॅऽ भिन्ने छलाह । अलग बिछान, अलग चादरि, अलग आ विशेष बखरा । मॉजी विशेष ध्यान दैत छलथिन्ह से । ककरो लेल बॉचल वा नहि हिनका परसन होयबाक चाहि । सब बात ओहि समय शोभा–सुन्दर जकॉ बुझना जाइत छल । आई ज्ञात भऽ रहल अछि जे ओ स्वार्थ केर बीज–प्रस्फुटन छल जे आई स्पष्ट आ विशाल वृक्षक रूप लऽ लेलक अछि । बच्चन जी क' अध्याय समाप्त होइतॅहि बात जग जाहिर होमऽ लागल । जे पुतोहूं भोर–सॉझ सास के सेवा मे हाजिर

छलीह आई, अलग गृहस्थी बसोअलनि । आब ओ निरीह आ पराश्रित नहि रहलीह । शक्ति–प्रदर्शन में ओ आब सबसँ आगा छथि । बच्चनजी तऽ आजीवन हिनक दलक प्रचारक भऽ गेलाह । झूलन, घरक' चाकर बाद मे हेताह, हिनक चमत्कारक शिकार प्रथम छथि । बाल–बच्चा केर सम्हार यदि ओ नहि करितथि तऽ सुन्दर भाई केर मजाल छल पांच टा बच्चा पोसि लितथि । बेटा के आस तकैत–तकैत कखन दू सँऽ सात भऽ गेलाह ओ स्वयं नहि बुझि सकलनि । अंत मे दैव हारल आ पांचम संतान पुत्र भेलाऊपरांत सिद्धि प्राप्त भेलनि ।

भातिज–कखनो पुत्र केर स्थान लऽ सकैत अछि ? जखन बेटी सब चलि जायत तऽ की भूत–गिनब । फेर अपन जोड़ल सर–सम्पत्ति कतहूँ बोड़ि देब' चाहैत छी ? कनिया केर विरोध पर खिसिया कऽ आगि–बगूला होइत बाजल छलाह । गामक घर पर दूनू ज्येष्ट अपन कब्जा लेलनि । बदली करा कऽ शहर तऽ चलि अयलाह मुदा गामक' हवेली पर अपन आधा कब्जा बरकरार रखलनि । बांकी भाग पर ज्येष्टक प्रकोप यथावत छल । दूनू भाई मे छत्तीसक आंकड़ा रहितहुँ एक बात पर अघोषित सामंजस्य स्थापित भऽ गेल छल जे आधा हिस्सा पर अहाँ अपन बाल–बच्चा पोसू आ आधा पर हमर कब्जा रह' दिअ । हवेली केऽ बनावट सेहो दू गोट परिवार हेतु समर्थ छल । झूलनजी आ माँजी हेतु कोनो चिंता नहि – अतिथि हॉल मे आराम सँऽ रहि रहल छथि । जेठ भाई कतेक बेरि कहलनि जे माँ केऽ आब एहि ठाम सँऽ लऽ जा क' पैघ डाक्टर सँऽ देखा दिऔन एहि ठाम तबियत ठीक नहि रहैत छैक । बेचारे सुन्दरभाय दूनू प्राणी, आब स्वच्छंद रहऽ चाहैत छथि– जवाब मे गोल–मटोल करैत पार भ' गेलाह । माताजी केर हृदय पर धक्का लगलनि –

सोच' लगलीह अभिमन्यु ओहि समय मे ठीक कहैत छलाह – ''जाहि नाव पर अहाँ जीवन काट' चाहैत छी ओकर कोन मे छेद अछि'', समय आब' दिअ । सोचलहुँ जे मनोरमा एतेक ध्यान रखैत अछि – अगर छोट बहिन आबि जेतीह तऽ दूनू मिल सेवा–सुषुर्षा मे कमी नहि राखत, बुढ़ापा आराम सँऽ कटि जायत । सविता के बच्चा छोट छनि ओ कोना भानस–भात करैत हमर देख–भाल करतीह ? फेर अपन घर छोड़ि बाहर भला मन लागत ? तकदीर मे जे लिखल होयत से एही ठाम होम' दिअ । बिछान पर कराहैत झूलनक पत्नी के आवाज लगबैत छथि जे कने सहारा दऽ बैसा दिअ । कतेक काल बाद ओ बड़बराइत आबि क जोर सँऽ बैसा दैत छथि । हिनक बेरूखी सँऽ बाजि उठलीह – जँऽ नहि करऽ के हुए तऽ छोड़ि दिअ । ताहि पर ओ बाजलि – आब कत' गेलनि ओ श्रवण कुमार आ सती–साध्वी जिनका लेल सब सँऽ बैर लेलथि । तखन तऽ एना बुझना जाइत छल जे हिनका एकेटा पुतोहु छनि बांकी सब तऽ कपार पर थोपि देल गेल हो । व्यंगवाण सँऽ आहत होईत बजलीह – सब हमर कर्मक दोख थिक । अहाँ अपन काज देखू हमरा छोड़ि दिअ हमर हाल पर । तऽ हम कहाँ पकड़ने छिअनि – कहैत ओ पड़ाएत छथि । जखन व्यक्ति स्पष्टतः कोनो एक गुटक पक्षधर भऽ जाइछ आ ओ गुटक सदस्ये धोखा कऽ दिए तऽ आन गुट तरफ कोन मुँह लऽ कऽ जायत ? अभि कतेक मना कयने छलनि जे ई वियाह नहि थिक – बच्चनजी केऽ फंसाओल जा रहल अछि, जकर हमरा पास सबूत अछि । टोला–मोहल्ला सब हतप्रभ छल हिनक निर्णय पर । एक बेरि बच्चनजी सँऽ बात कऽ समझा दिऔन जे एहि वियाह सँऽ परिवार मे फूट भऽ जायत – बासुकीपुर बाली काकी सुझाव देने छलीह । अभिमन्यु, माताजी के एकर पॉछा छिपल गुटबाजी आ स्वार्थ

स्पष्ट करैत बियाह पर पारिवारिक मुहर लगाब' सँऽ माताजी के बचबाक सलाह दैत कहने छलाह जे अगर नहि मानैत – हिनका कोर्ट मैरिज कऽ लेब कहिऔन । हमरा विश्वास अछि जे बच्चनजी निश्चित सहमत नहि होयताह आ एहि गुटबाजी सँऽ बचि जयताह । परञ्च, माताजी तऽ आर जल्दी मे छलीह – बच्चनजी सहमत छथि आ मनोरमा दुनु बहिन रहतीह तऽ हमर अपन चिंता नहि ।

बेसी दिनक बीमारीक सूचना भेटला पर अभिमन्यु दूनू प्राणी जिद कयलनि जे दिल्ली चल आऊ पैघ डाक्टर सँऽ देखा देब । एतय कोनो प्रकारक कष्ट नहि होयत । माताजी मन मे सोचलीह – कतेक दिन सँऽ ओ खुद बीमार आ परेशान छलाह – बड़की के डर सँऽ हुनक खोज तक नहि कयलहुँ – जे हमहूँ अपने घर सँऽ निष्कासित भऽ जायब । ओ जोग–टोन वाली सँऽ कोना सकब । आ फेरि बच्चनजीक वियाहक प्रकरण बाद ओ दूनू साढ़ू जे हमर स्वाभिमान आ विश्वासक' तार–तार कयलनि – आब कोन स्वाभिमान लऽ कऽ अभिमन्यु लग जायब । अपनहि ठाम पर जीअब–मरब से ठीक अछि ।

तदनुरूप, माताजी केऽ दिल्ली लऽ जा कऽ देखौबाक प्रयास व्यर्थ सिद्ध भेल । स्वार्थ आ विश्वासघातक तत्व एकात्म परिवार के छिन्न–भिन्न कऽ देलक । भाई–भाईक लेल अपरिचित भऽ गेलाह । माँ–बेटाक स्नेह तक खंडित भऽ गेल । सब एक–दोसरक सत्यनिष्ठा पर संदेह करऽ लागलनि । कथी लेल मानवताक एतेक ह्रास – के कतेक अरजि लेलनि, एहि अलगाव आ दुष्टताक प्रचार कऽ । किओ दिआद हमरा सँऽ आगा नहि बढ़य–जँ अपन हिम्मत आ मेहनत सँ बढ़ऽ लागय तऽ सब टोल–मोहल्ला मिलि टांग खींचू । ऐन–केन–प्रकारेण सब ऊर्जा हिनका चौपट करऽ मे लगा दिअऽ ।

विडम्बना जे एहि प्रकारक अमानवीय संवेदना सहोदरे सॅऽ उत्पन्न भऽ आगा बढ़ैत अछि । जिनका सॅऽ लेन–देन नहि अछि ओ किछो करथु किनका क्षोभ होय, मुदा अपन भाय–भतीजा कलक्टर भऽ जाथु आ हम चपरासी रहि जायब, कोना बर्दास्त होयत । मानवक एहि प्रकारक दानवता पर मर्माहत भऽ अभिबाबू के आखि मे नोर भरि जायत छनि । मुँह में खून के आभाष भेला सॅऽ उठि कऽ साफ कऽ आबैत छथि । प्रत्येक पल कष्ट हिनक निश्चय दृढ़ करैत छनि जे चाहे जे भऽ जाय अपन स्वास्थ्य आ समृद्धि बढ़ाब' मे कोनो कसर नहि छोड़ब । दुश्मन चाहे जतेक जोर लगा लिए, अंतिम सांस तक जंग नहि हारब । दुश्मन के उघार कऽ के छोड़ब आ सफलता के ओहि सीढ़ी तक चढ़ब जतय देखि जलनिहार जलि के छाऊर भऽ जाय ।

अंतर्मन मे जन–सेवा प्रति आवेग आ मानव शोषणक प्रति हिनक प्रचंड विरोध आकार ग्रहण करऽ लगैत अछि । भविष्यक प्रति निर्धारित योजना पर काज करबाक समय आबि गेल अछि । सुलेखा के आवाज सुनि ध्यान भंग होइत छनि ।

अहॉ बाजार सॅऽ कखन अयलहुँ – आबिते छी । खाना पैक करा कऽ नेने अयलहुँ ।

अभि : खयबा सॅऽ डर लागैत रहैत अछि । फेर पेट फूलि दर्द शुरू भऽ जायत ।

सुलेखा : पिछला बेरि मौलवी साहब देखने रहथि तऽ एक साल तक कतेक आराम छल । एहि बेरि हुनक प्रयास अकारथ भेल अछि ।

अभि : बहुत तरकीब लगाओल गेल अछि एहि बेरि कि जल्दी आराम नहि भऽ सकय किएक तऽ बूझल छलनि जे हम आब एहि तरफ ध्यान दऽ रहल छी । पहिने बीमारी बुझि इलाज मे लागल छलहूँ ।

सुलेखा : अहॉ कहैत छलहूँ जे ऑफिसक एकटा स्टाफ कोनो नीक

जानकार लग चलै हेतु कहने छल । ओहू ठाम कोशिश कऽ लिअ । महादेवक कृपा सँऽ नीक भऽ जाय !

अभि : अगिला सप्ताह टिकट नेने छी । हम आखिर तक प्रयास छोड़' बला छी ? अपन शांति ओतबे जरूरी अछि जतेक दुष्ट आ पापी के' ओकर करनी हेतु दण्ड ।

सुलेखा : आखिर कोनो बात तऽ जरूर अछि । नहि तऽ कतेक बेरि झाड़–फूँक सँऽ हफ्ता–दू हफ्ता आराम कोना भऽ जाइत अछि । जबकि ओतेक जांच–पड़ताल, दवा–दारू सब विफल भेल ?

अभि : सब तऽ आब स्पष्टे अछि । मुदा लोक सबहक अपन–अपन प्राथमिकता छनि, विदेश रह' बला हेतु किएक किओ आगू अओताह । माँ कऐक बेरि कहने छलीह जे बड़की के टोक लागिए जाइत अछि । ओझा–गुणी सब नाम लऽ कऽ साफ कऽ देने अछि । खैर, आगू देखियौक, हमहुँ ठानिए नेने छी । सबटा उजागर कऽ केऽ छोड़ब । दुष्ट पर विजय प्राप्त जरूर होयत ।

सुलेखा : अहाँ तऽ भातृ–प्रेम मे गर्वित छलहूँ । हमहूँ बूझैत छली जे अहाँ सब भाई सभहक प्यार आंगुर उठाब' योग्य नहि अछि । मुदा समय अबिते तुच्छ स्वार्थक जोड़–घटाव कऽ–कऽ कोना सब अपन राह पकड़लाह से नीके भेल । ऑखिक परदा जतेक जल्दी हटि जाय से नीक । अनाथ व्यक्तिक काज की नहि चलैत छैक ?

अभि : भौजी तऽ आन ठाम सँऽ आयल छलीह । हुनक जेहन मे ककरो हेतु कोनो प्यार आरम्भहि सँऽ नहि देखल गेल । मुदा भाई तऽ अपन खून छलाह । ओ किएक हमर पीठ मे छुरा घोंप' मे पत्नीक भागीदार भेलाह । ईएह टा दुःख अछि । हमर परिवारक खून एतय कलंकित भऽ गेल । ओ हमरा कहि दितैथ जे – बाऊ अहाँ दूरे रहूँ, अपन इलाज नीक जानकार सँऽ करा लिअ । हम मजबूर छी

पारिवारिक बंधन सॅऽ । ''पापक नगरी के सब सॅऽ पैघ घाती पुण्यात्मा होइत अछि'' । कायर कहल जा सकैत छलाह मुदा अधर्मी, पापी, विश्वासघाती आ दुराचारी नहि । हाय रे ! हमर शरीर मे प्रवाह होयऽ बला खून – जकर अंश एहन पापीक रग मे सेहो दौड़ि रहल अछि ।

सुलेखा : अहॉ व्यर्थ प्रलाप करैत छी ! अहॉ सन मनोभाव, परिवारक प्रति मोह, मानवताक प्रति सम्मान आ सभहक उत्थानक चिंता किछु विशेष व्यक्ति मे ही देखल जा सकैछ । एहि वार्त्तालाप मे रात्रि केऽ 11 बाजि चुकल छल फलस्वरूप नवयुगक निर्माण क' संदेश नेने, नव–नव समय चक्रक' आशा संचित कयने एक नवीन सुबहक प्रार्थना करैत दम्पत्ति निंद्रान्वेंशन मे मगन भऽ गेलाह ।

.....

७

थुथमा साहेब अत्यन्त चिंतित छथि । सार के विवाह छनि – एक एहन अवसर जतय इ सिद्ध कयल जा सकत कि ओ लोकनि सेहो आन व्यक्ति सँऽ कोनो तरहेँ कम नहि छथि । पत्नी सँऽ दू टूक आदेश भेटलनि जे किछु भऽ जाय हम फटीचर बनि बियाह मे नहि जायब । मन तऽ हिनक सेहो नहि छलनि जे कोनो लाफलम्फा कम होय मुदा जखन भार व्यक्ति के अपन माथ पर उठाब' पड़ैछ तऽ टोकरी मे सँऽ अर्जाल–खर्चाल निकालि हल्लुक होम' चाहैत अछि । एहि ठाम से गुंजाइस नहि
छलनि । पैघ बहिन सब जखन परिपूर्ण तरीका सँऽ नोत पूरतीह तऽ हम कोना कम रहब ? एखन तक लोक बुझैत अछि जे छोटकी सेहो ककरो सँऽ कम नहि – पाहुन प्राइभेट मे काज करैत तऽ छथि मुदा कोनो सरकारी बला सँऽ कम पाई आ ठाठ–बाट नहि छनि । बूझता किएक नहि ? दू साल भेल एखन तक सब काज–परोजन मे कोनो ब्योंतें ठाट–बाट कम नहि देखौलनि अछि । कखनहुँ अपना के कोनो नामी–गिरामी कम्पनी के जोनल वा रीजनल मनेजर सँऽ कम नहि कहलनि अछि जे प्लेन सँऽ कम चलऽ मे विश्वास करैत हो । ऊपर सँऽ योगमाया द्वारा आपातकालक घोषणा । आब की हेतैक ?

बहुत अरमानक बाद लाबा भुजक' नोत सेहो भेटल छलनि । डर छलनि जे बड़का साढ़ू ने हाथ साफ कऽ लेथि । सासुरक लोक सब हिनके प्रसंसक बेसि छनि । अफसर हेताह आफिस मे मुदा आदर ओहिना भेटैत छनि जेना ई हुनक ऑफिसे होयनि । कखनहुँ सासुर मे दुनु हाथे खर्च नहि कयलनि मुदा प्रतिष्ठा दुनु हाथे

बटोरलनि । एखनहुँ मैथिल समाज मे इज्जत कमाबऽ चाहैत छी तऽ चपरासी बरू बनि जाऊ, आन काज सँऽ लाखों कमा लिअ, लोक उठल्लूए बूझत – थुथमा साहेब दावा ठोंकि कहि सकैत छथि ।

आब हिनक समझ विकसित भेलनि जे कॉलेजक होस्टलक दिन मे भोलू झा रात्रि भोजन हेतु बिजोऽ सुनिओ कऽ किएक अनठाबैत छलाह । एतेक बड़का पेटू, मुदा मजाल छी जे टॉपिक छोड़ि उठि कऽ खयबाक हेतु जयताह । एम्हर भनसिया सेहो पहुँचल खिलाड़ी छल – जखन परीक्षा चलि रहल होयत तऽ भोजनक मेनु मे अप्रत्यासित सुधार आम बात छल । सार, बूझैत छल जे छात्र लोकनि अनुपस्थित होयबे करताह । दम साधि के मांस–मछली उड़ायब – आन दिन तऽ झोर–तोर सँऽ मन मार' पड़ैत अछि । थुथमा साहेब मांछ–भात पर जोर लगौलनि तऽ एक दिन एकटा भनसिआ पूछने छलनि – काल्हि अहाँक परीक्षा नहि अछि की ? मांछक कांट फेकैत बजलाह – परीक्षा मे उपास कऽ के जयबाक चाही की ? (मन मे कहलनि – ई हितैसी तों किएक बनि रहल छह से हम बुझि रहल छी । बस मे रहित तऽ कांट जकां तोरो फेंकि दितियौक । परञ्च, तिलिस्मक जवाब तिलिस्मे सँऽ देबाक चाही ।) एहन जोर लगौलनि आ माछ–पर–माछ उठाबऽ लगलनि जे भनसिया हाथ जोड़ि कहलक – साहेब ! आब नहि बॉचत हमरा सभक लेल – अहाँ चौदह टा पीस नापि देलियैक अछि, क्षमा कएल जाओ । उठि कऽ हाथ धो रूम मे आबि चादर तानि एना सूतलाह जे कखन भोर भेल – ज्ञात नहि भेलनि । अंतिम परीक्षा छल – भोला नाथ झा अव्वल अयलाह । एकमात्र विद्यार्थी फेल छल – हीरा कांत दास । हुनका नहि बुझना जाइत छलनि – के शत्रु थिक, के मित्र; भोलू झा अथवा ओ भनसिया । भोलू झा एतेक छोट बात (बिजोऽ संबंधी)

समय रहिते किएक नहि कहलनि ? सोचैत होयताह कहिं हमरो नै टपि जायथि । आब देखियौन – थारी–क–थारी मांछ–भात, हॅसि–ठढ़ठा आ सिनेमा–सर्कस – कियो नहि कहि सकत जे ओ कहिओ पढ़ितो हेताह । लोक आब बी.डी.ओ. भोलानाथ झा के' नाम कतेक अदब सॅऽ लैत अछि ।

सॉचे ! कहि सकैत छी – ई करियर एक करेंट एकांउंट (बैंक खाता) जकॉ थिक, एकहि बेरि झटका सॅऽ कोनो भारी रकम जमा कऽ लिअ आ भरि जिंनगी निकालैत रहूँ । लेकिन एत' खाता खोलबाक अंतिम उम्र विद्यार्थी जीवन थिक । एहि खाता खोलब' मे चूकि गेलहूँ तऽ भरि उमिर हवाबाजी कऽ लिअ – जतेक रकम जमा नहि होयत ताहि सॅऽ बेसी निकलि जायत । परिणाम एतेक गम्भीर होयत जे सासुर मे लाबा भुजअ सन प्रतिष्ठित विषय सेहो झंझट केर झोरा सन बुझना जायत ।

थुथमा साहेब बीतल युग मे प्रवेश करि सोचऽ लगलाह – हमर तऽ कॉलेजक जतरे खराब छल । ओ पहिल दिन जखन बनि–ठनि कऽ सूट–बूट–टाय लगा कॉलेज पहुँचलाह आ अपन हृष्ट–पुष्ट डील–डौल लऽ डोलैत बगीचा तक गेल होयताह कि ताक मे बैसलि दू–टा सीनियर लड़की मे द्वन्द भेल जे हिनका सॅऽ रैगिंग हेतु गाना गवावल जाय अथवा डांस करऽ हेतु कहल जाय । द्वन्दक विषय बूझतॅहि हिनक हाथ–पॉव फूलि गेलनि । अंत मे मिस प्रतिष्ठा के जीत भेल आ हिनका डांस देखोबाक आदेश भेटलनि । नाच–गान, डिस्को–थियेटर मे कोन ग्रामीण मैथिल विद्यार्थी निपुण भेटत । माडर्न अथवा आधुनिकताक एहि परिभाषा ओहि विद्यार्थी सभ हेतु कष्टकर भेनाय सहज थिक । यैह सब के झॉपन देबऽ हेतु ओ आकर्षक आ आधुनिक परिधान पर ध्यान देलनि । आइ सबटा मॉटि मे मिलल

जा रहल अछि । सोचऽ मे डूबल छलाह कि धमकी भेटलनि – हिनक कपड़ा उतड़वाकऽ दौरायल जाय से नीक होयत । बाप–रे–बाप आब देरि करब तऽ अनर्थ भऽ जायत । पायर उठा–उठा कऽ धप–धप मारऽ लगलाह –जेना समाठ सँऽ ऊखरि मे धान कूटैत होथि । हँसि केर फब्बारा चहुँ ओर फूटि पड़ल । तीन–चारि बेर घूमल होयताह कि धड़ाम सँऽ खसलाह । बगल मे ठ़ाढ़ि मिस प्रतिष्ठा रोकऽ के कोशिश कयलनि तऽ आर तऽ किछु नहि कऽ सकलि, हिनक टाय हाथ मे आबि गेलनि । ओ हँसैत बाजलि – ई थुथमा साहेब छथि, हिनका हिलऽ–डोलऽ लेल नहि कहियौन नहि तऽ धरती माँ के चोट पहुँचौताह ।

प्रतिष्ठा अपन प्रतिष्ठा बढ़ौलनि मुदा हीराकांत दासकऽ प्रतिष्ठा तार–तार कऽ देलनि । कियो हिनक असली नाम पूछतनि ताहि सँऽ पहिले हिनकर नामकरण भऽ गेलनि – थुथमा साहेब । जंगल मे आगि एतेक जल्दी नहि फैलत जतेक जल्दी हिनक नाम प्रसिद्ध भेल । किएक नहि होयत ? नामकरण करऽ बाली कॉलेजक ओ सुंदरी छलीह जकर पाछाँ लड़का सभक फौज दीवाना छल आ रोज ई सोचि कऽ कॉलेज अबैत छल जे किनसाइत आइ हमर किस्मत खुलय । जखन मिस प्रतिष्ठा आस–पास मे रहथि तऽ बिना कारणें लोक थुथमा साहेब संबोधन करऽ हेतु उत्सुक रहैत छलाह, जे एहि लाथें मिस प्रतिष्ठा प्रसन्न होथि । कॉलेज आयल छलाह मैनेजमेंट केर डिग्री लेबऽ हेतु से तऽ फेल भऽ गेला कारणें नहिए भेटलनि, हँ नाम बिगारि कऽ प्रस्थान कयलाह । घटनाचक्र किछु एहने–तेहन चलऽ लगलनि जे एक बेरि प्रस्थान कयला पर पुनः जूनियर सभक संग डिग्री लेबऽ मे कोनो दिलचस्पी नहि भेलनि । फेर डिग्री तऽ कागदक एक टुकड़ा थिक, नुका कऽ राखि दिअ आ

कहि दिऔन जे डिस्टींगसन भेटल । इंटरभ्यू बला के छोड़ि आओर के बूझि सकत ? सर्टिफिकेट देखऽ किओ मांगत से हुनक कमाओल खाइत छी । लोक प्रतिष्ठा देबे करताह कतय नौकरी करैत छी – कोन नौकरी करैत छी, एहि प्रश्नक उत्तर देब कोनो कठिन कार्य अछि ? जीवनचक्र मे आदर आ सम्मान प्राप्त करक हेतु अगर किछु झूठे बाजि देलहुँ तऽ कोन अनर्थ भेल ? मन मे एहि तरहक तर्क–वितर्क चलि रहल छलनि । परञ्च ओ सोचि नहि सकलाह जे झूठक ई कड़ी आगू चलि कऽ कतेक पैघ भऽ जायत । झूठ द्वारा कमाओल इज्जत के बचाबऽ हेतु गृहस्थ जीवन मे अक्सर एक आओर झूठ बाजऽ पड़ैत अछि नहि तऽ पहिलुक सब अर्जन रेत केर दीवार सिद्ध होयत अछि जतय खंडहरो नहि भेटत । एहि कड़ी मे एक आओर क्षण थुथमा साहेबक सन्मुख छलनि । दून व्यक्ति मसला पर विचार कऽ रहल छथि –

योगमाया : देखि लिअ, बियाहक बाद प्रथम अवसर थिक, हमर नैहर मे – रत्तीभर कमी नहि रहबाक चाही । चाहे जतय सॅऽ हो – लाल दीदी आ फूल दीदी सॅऽ बढ़ि–चढ़ि कऽ हमर बात–व्यवहार सिद्ध होयबाक चाही । तखने किओ मानत जे अहाँ नीक आ व्यवस्थित लोक छी । एहि बेरि फेल भेलहुँ आ पागक संग अपनहुँ खसलहुँ धड़ाम् ।

थुथमा साहेब : हम की कम राखऽ चाहैत छी कोनो तरहेँ । (रूआंसा होइत.....) लेकिन करमे फुटल अछि – तीस हजार टाका निकालि कऽ आनि रहल छलहुँ – किओ जेब काटि लेलक । पाछॉ मास जहन बाबूजी स्वर्गवासी भेलाह तखन सब तरफ सॅऽ पैंच मांगिए चुकल छी । कतऽ सॅऽ इंतजाम होयत, से नहि कहि ।

योगमाया : हिनक मुँहक चढ़ैत–उतरैत भाव के नापैत किकियाय

लगैत छथि – आहि रे बाप ! सत्यानाश भेल । ''कन्हा बियाह मे बाइस आफत''। कोढ़ि फूटय ओहि पंजिकार के जे हिनक कथा देब' काल मे लड़का के सर्वगुणसम्पन्न होयबाक दावा ठोंकने छल । हमरा ओहि छौरी सँऽ एक बेरि भेंट करा दिअ – ओकर चरण धो पिअ चाहैत छी । एक नजरि मारलक आ बूझि गेल – ई थुथमा साहेब थिकाह । आब तऽ मुँह देखाबऽ लायक नहि रहब । कतेक पाई बॉचल अछि ?

थुथमा साहेब : करीब बीस हजार टाका । (मन मे सोचैत छथि – जँ कहि देबनि जे दरमाहे बीस हजार अछि तऽ ज्ञात नहि की कऽ लेतीह । रोज उलहन देब' हेतु कुंजी हाथ लागि जयतनि आ हमर गुलामी केर परिभाषा सेहो परिमार्जित भऽ जायत । एहि कारणे योगमाया सँऽ कहि देलनि जे दरमाहा के अलावे 25–30 हजार टाका तऽ हम अपन ज्ञान बॉटि कऽ कमा लैत छी । सोचने छलहुँ, विवाहक पश्चात एक एहन जीवनसाथी भेटत जे हमर अवस्था सँऽ सहानुभुति राखतीह आ सहारा देतीह । परञ्च, हाय रे विधना–हमर गड़ा मे एक एहन दौड़ाक बान्हि देलह जे 25 सालक अवस्था तक दम साधि सावधान मुद्रा मे बैसलि छलीह जे बियाह होयतहि पतिक संग जीवनक सम्पूर्ण आनन्द प्राप्ति हेतु दौड़ शुरू कऽ देब । दौड़ केहन – कखनहुँ समाप्त नहि होमऽ बला आ भौतिकताक प्राप्ति हेतु होमऽ बला अनवरत दौड़ । जँ हिनका सँऽ पूछि दियौक जे बाबूजीक घर कतेक ऐशोआराम कयलहुँ जे हमरा पर एतेक दबिश अछि, तखन तऽ हमरा जेले भेजि देतीह ।

दैवीय संयोग एकदम निरर्थक नहि रहैत अछि । थुथमा साहेब आ योगमाया – दूनू मध्य जीवन जीयक ई तरीका बिल्कुल समान छल । अपन साम्राज्य केऽ हर क्षण विशालकाय बना कऽ उपस्थित

करऽ मे दूनू माहिर छलाह । एहि प्रपंच मे योगमाया देखार होमऽ काल अपन अज्ञानता ओ अनभिज्ञता जाहिर करि सबटा दोष पति पर मढ़ि कऽ साफ बचि कऽ निकलबाक प्रयास करैत छलीह – जेना दूनू गोटा मे सिर्फ भौतिक सुःखक हेतु सहमति भेल होनि । परिणामतः बेचारे थुथमा साहेब दुगुना दबाव मे रहैत छलाह । योगमाया के अगिला प्रश्न सॅऽ सकपकाइत छथि – जखन तीस हजार कटि गेल तऽ बीस कोना बॉचल ?

थुथमा साहेब : एहि बेरि विवाहक इंतजाम हेतु बेसी क्लास नेने छलहुँ । तीस हजार टाका केर चेक भेटल छल । भजा कऽ जेब मे राखि नेने छलहुँ, कतऽ गायब भेल ज्ञात नहि ।

योगमाया : बेसी कमाई शब्द सुनि भाव–भंगिमा किछु क्षणक हेतु झंकृत भेलनि मुदा दोसरे क्षण ज्ञात भेलनि जे केहन बर प्राप्त भेल – हाथ मे आयल धन बोरि कऽ चलि अयलाह ।

(थुथमा साहेब के चालि किछु कारगर भेलनि) टकराव छोड़ि बियाहक इंतजाम कोना बेहतर हो – ताहि विषय पर विमर्श करैत बजलीह – देखू, हमरा पास सोना केर चेन जे मॉ देने छलीह से आ कान केर बाली दऽ कऽ गोल्ड लोन लऽ लिअ । पाई तऽ बढ़िए रहल अछि – दू चारि मास मे चुकता कऽ छोरा लेब । लोक के कहि देबनि जे लॉकर मे राखि बिसरि गेलहुँ ।

थुथमा साहेब कृतज्ञता व्यक्त करैत एहि प्रस्ताव के सहर्ष स्वीकार करैत छथि । दूनू गोटा एक लोन कम्पनी सॅऽ करार कऽ 70 हजार टाका जेबर राखि प्राप्त कऽ हर्षित छथि ।

.....

८

अभि बाबु द्वारा संचालित मुफ्त कानूनी सलाह केन्द्र लोक सभक मध्य बड़ प्रसिद्ध भेल । खास कऽ गरीब ओ असहाय वर्ग प्रति हिनक स्नेह, समर्पण ओ सेवाभाव अतुलनीय छलनि । आस–परोस सॅऽ कऐक ग्रामीण, घरेलू हिंसा अथवा दहेज प्रथा के शिकार महिला, अपमान ओ अत्याचार सॅऽ ग्रसित मजदूर, पुलिस अथवा प्रशासन सॅऽ परेशान निर्दोष गरीब वर्ग हिनका सॅऽ मदद हेतु उपस्थित भऽ जाइत छथि । अभि बाबू कखनो ओ जरूरतमंद लोकनि के निराश नहि कयलनि । कयेक बेरि अपना जेब सॅऽ खर्च कऽ कानूनी दांवपेंच केर जाल सॅऽ बचा कऽ समाजक ओहि वर्ग के कृतार्थ कयलनि जतय तक न्याय पहुँचबा मे सालो साल लागि जायत अछि ।

ग्रामीण नवयुवक वर्ग हेतु रोजगार सुलभ भऽ सकय एहि उद्देश्य सॅऽ उपेक्षित क्षेत्र सभ मे कऐक ज्ञान–केन्द्र खोलल गेल । एहि केन्द्र पर रोजगार हेतु उचित सामग्री, प्रशिक्षण, रोजगार सूचना प्रदान कर' हेतु उचित व्यवस्था भेल । मुख्यतः श्रमदान आधार पर प्रशिक्षण कक्षा केर स्थापना भेल जाहि मे अभि बाबू द्वारा उपकृत आ सक्षम व्यक्ति श्रमदान हेतु सहर्ष आगू अयलाह । अभि बाबू स्वयं प्रत्येक सप्ताह आबि विद्यार्थी सभके अपन उत्थान हेतु संघर्षरत रहबाक प्रेरणा प्रदान करैत छलाह । विशेष जरूरतमंद हेतु अपना सानिंध्य मे स्पेशल क्लास प्रदान कयलनि । एहि तरहक प्रयास किछुए मास मे कारगर सिद्ध होम' लागल । कऐक नवयुवक सरकारी नौकरी हेतु उत्तीर्ण भऽ कृतार्थ भेलाह । सफल विद्यार्थी सॅऽ दक्षिणा

मे वंचित लोकनि हेतु श्रमदान आधार पर प्रशिक्षण देब' हेतु आग्रह कयल जाइत छल । फलस्वरूप युवावर्गक एक समृद्ध नेटवर्क अभि बाबू सँऽ जुड़ि गेलनि ।

अभिबाबू केर लोकप्रियता बढ़ि रहल छल से कोनो राजनीतिक दल सँऽ छुपल नहि रहल । मुख्य विपक्षी दल ''जनाधार पार्टी'' मे शामिल होयबाक निमंत्रण भेटलनि । गंभीर रूप सँऽ विचार–विमर्श कयलनि । जनसाधारण सँऽ जुड़ल रहला सँऽ जनता केर आग्रह ओ आकांक्षा सँऽ बेस परिचित छलाह । फेर, ''जनाधार पार्टी'' केर लक्ष्य ओ उद्देश्य हिनक कार्यशैली सँऽ मेल खायत छलनि, जाहि सँऽ हिनका ओहि निमंत्रण के स्वीकार करबा मे कोनो हिचक नहि भेलनि । अपन निर्णय उचित होयबाक भान, अनगिनत लोक सभक बधाई स्वीकार कर' दरम्यान हिनका स्पष्ट भेलनि, खास कऽ जखन सटले आम चुनाव होम' बला छल ।

पुत्र आलोक हालाँकि अभि बाबू के एहि निर्णय सँऽ उत्साहित नहि छथि । ओ चाहैत छथि जे बाबू राजनीतिक झमेला सँऽ दूर रहि बेफिक्र जीवन हमरा सब संगे बिताबथि । आलोक लंदन केर एकटा प्रतिष्ठित कॉलेज सँऽ बैरिस्टरी केऽ पढ़ाई कऽ रहल छथि । एखन अवकाश रहला कारण आयल छथि । पिता सँऽ कऐक बेरि कहि चुकल छथि जे अहाँ अपना पर ध्यान दिअ । आइ धरि के अहाँक तरफ अपनापन भाव रखलथि । लोक मतलब निकालि बिसरअ' बला बेसी अछि तऽ एहि माहौल मे सुःख–शांति सँऽ अपन जीनगी बिताऊ । हम तऽ कहैत छी जे हमरा संगे लंदने चलू । कतेक ऑफर आबि रहल अछि ओतय नौकरी हेतु । कोनो हर–हर–कचकच नहि, नीक जँकां कमाऊ, नींक सँऽ रहूँ । लोक अपना पर ध्यान दैत अछि, नै कि पड़ोस मे के जीतल । ककरा घर मे लड़का भऽ गेलनि

। ओहिठाम तऽ पड़ोसी ओतय लड़का होय वा लड़की किनको हृदय पर धक्का नहि लगैत अछि । अभि बाबू केर अकाट्य तर्क आगा ओ बेचारे निरूत्तर भऽ गेलाह । ओ कहैत छथि – यूरोप मे तऽ लोक अपने लेल जीबैत अछि । एकर देखादेखी आब एम्हरो भऽ रहल अछि । ओहिठाम ककरो पता पूछैत–पूछैत दिन भरि छिछियाइत रहू, किओ सुधि लेब' बला नहि, मुदा अपना गली मे अगर किओ किनको नाम धरि पूछि लेथु, पांच गोटा जा धरि घोषा नहि देत, छोड़त नहि । फेरि, आदमीयतता तऽ एहि मे अछि कि एक–दोसर के सुःख–दुःख मे भाग लिअ', सामाजिकता निभाऊ, भारतीय संस्कृति इयह थिक । ई यूरोपे केर हवा के' प्रभाव थिक कि आब अपनो ओतय सड़क पर दुर्घटना सॅऽ कुँहरैत व्यक्ति केऽ हॉस्पीटल तक पहुँचायब हेतु जागरूकता अभियान चलाब' पड़ि रहल अछि । काल्हि हम एहि सुकाज हेतु गांधी–स्मृति लग एक दिनक सांकेतिक भूख हड़ताल कऽ रहल छी ।

आलोक पिता क' स्वास्थ्य लऽ सशंकित छथि मुदा बुझैत छथि जे ओ अपन उद्देश्य सॅऽ समझौता नहि कऽ सकैत छथि । छुट्टी सॅऽ वापस जायबाक समय माताजी सॅऽ हिनक ध्यान राखबाक आग्रह करैत पुनः कहैत छथि जे उत्तम होयत जे संकीर्ण मानसिकता सॅऽ ग्रसित एहि परिवारिक प्रतिबंध सॅऽ बाहर निकलि जाऊ आ लंदन मे सब गोटे चैन सॅऽ जिनगी बसर करू । माताजी झूठ आश्वासन दैत कहैत छथि जे हम कोशिश करैत छी पहिने अहाँ ओत' व्यवस्थित भऽ जाऊ । दूनू माता–पिता पुत्र के अपन इच्छापूर्वक जिंनगी बिताब' हेतु कोनो अवरोध नहि कर' चाहैत छथि ठीक ओहिना जेना ओ अपन जिंनगी स्वेच्छा सॅऽ जीब' हेतु स्वतंत्र छथि ।

आलोक केऽ वापस लंदन गेला मास दिन भऽ गेल अछि । अभि बाबू एहि प्रश्नक हल खोज' मे लागल छथि – ''समय के पंख होयत अछि कि पंजा'' । सुनैत छी जे समय केऽ पंख होयत अछि मुदा महसूस कऽ रहल छी जे वास्तव मे समय के पंख नहि पंजा होइत अछि । ओ अपन पंजा मे व्यक्ति सॅऽ ओकर बचपन छीनैत अछि, बचपनक स्मृति एहि हेतु छोड़ि दैत अछि जे स्मरण कऽ अहांक हृदय वेदना सॅऽ भरि जाय । ओकरा बूझल अछि जे व्यक्ति एहि करूणा आ स्मृति मे जतेक हर्ष ओ आनन्द केर पल खोजि सकताह ओहि सॅऽ कऐक गूणा बेसी एहन पल भेटतनि जे हिनक हृदय केऽ तार–तार कऽ देतनि आ ओ मर्माहट भऽ कऽ रहि जेताह । समय केर पंजा पुनः आक्रमण करैत अछि व्यक्ति के परिवार आ ओकर खूनक रिश्ता पर । रेलक एक बोगी जॅकॉ परिवारक बोगी मे से पुरान व्यक्ति उतरि जायत आ नया व्यक्ति चढ़ि लैत छथि । जेना मंजिल तक पहुँचैत–पहुँचैत ओहि बोगी मे गिनल–चुनल पसिंजर रहि जायत अछि तहिना एहि बोगी के सेहो हस्र होइत अछि । स्वाभाविक अछि जे परिवारक बोगी केर एहन हालत तखने भऽ सकैत अछि जखन ओहि परिवार केर सदस्यक खून केर रंग ऊजर भऽ जाय किएक तऽ मनुष्य आ यंत्र मे स्पष्ट भेद अछि । मनुष्य केऽ ईश्वर मस्तिष्क देने छथि, धड़कऽ बला एकटा हृदय देने छथि आ भरि देने छथि ओहिं हृदय केऽ करूणा, प्रेम, दया आओर दर्द केर एहसास सॅऽ ।

समयक' खूनी पंजा पुनः छीनैत अछि व्यक्ति केऽ विश्वास, भरोसा, मानवीय संवेदना आओर बचि जाइत अछि – स्वार्थ, जलन, घृणा आओर घोर अनैतिकता । एहि प्रकार ईश्वर प्रदत्त मुख्य–मुख्य विभूषण सॅऽ हीन व्यक्ति आ जानवर मे विभेद करब असंभव भऽ

जाइत अछि ।

आब प्रश्न उठैत अछि – जहन मनुष्यक संग विवेक सॅऽ भरल मस्तिष्क आ एतेक कोमल ह्रदय मौजूद अदि तऽ ओ समय केऽ पंजाक' शिकार किएक भऽ जायत अछि ? एकटा गूढ़ प्रश्न आओर अछि जे मनुष्य मे एहन अमानवीय लक्षण कखन सॅऽ दृष्टिगोचर होमऽ लागैत अछि ? जन्म लेला पश्चात बालक हेतु सब किछु ओकर माता–पिता रहैत अछि । आ माता–पिता केर प्राण सेहो ओहि बालक मे बसल रहैत अछि । कनेक पैघ भेल तऽ स्नेहक गाछ बढ़ैत अछि आ ओ बालक, भाय–बहिन सबहक सुरक्षा चक्र मे आबि जायत अछि । ओहि बालक हेतु माता–पिता घरक भीतर सुरक्षा प्रहरी होयत छथि तऽ घरक बाहर भाय–बहिन । कोनो दोसर बालक ओहि बालक के' छू नहि सकैत अछि जिनकर ज्येष्ठ उपलब्ध छथि । कतेक विश्वास आ पवित्रता सॅऽ जीवन चक्र केर शुरूआत होइत अछि । व्यक्ति कनेक आओर पैघ भऽ जवान होईत अछि, अपन नीक–बेजाय बूझअ लागल तऽ ''स्व'' तत्वक' समावेश भेल । स्नेहक दायरा किछु सीमित भेल, आब ओ सर्वप्रथम अपन नीक–बेजाय पर केन्द्रित होमऽ लागल । एतय तक तऽ कोनो आपत्ति नहि भऽ सकैत अछि । कारण, आब ओ बालक केऽ कदम–कदम पर आंगुर पकड़ि सहारा देब आवश्यक नहि अछि । ओ आब अपन सुरक्षा करऽ मे समर्थ भऽ गेल छथि । परञ्च, एखन तक आपसी स्नेह आ अपनापन समाप्त नहि भेल छनि । एक–दोसरक सुःख आ दुःख मे ओ मुँह नहि मोड़लक अछि । भाय–बहिनक तरक्की देखि ओ एखन तक खुश होइत छथि ।

समय केर चक्र कनेक आओर बलिष्ट भेल, ओ बालक आब गृहस्थ जीवन मे प्रवेश कयलक । विवाहोपरान्त पिता केर दर्जा प्राप्त

भेलनि । ओकर सब ध्यान अपन एहि नवनिर्मित परिवार तक सीमित भऽ गेल । 'स्व' तत्व आब ''स्वार्थ'' मे परिवर्तित भेल । जे परिवार हुनका अपन निज परिवार तक पहुँचौलनि ओ आब बांतर लागऽ लागलनि । ओ येन–केन–प्रकारेण सबटा सुःख आ सम्पत्ति अपन एहि नवनिर्मित परिवार तक सीमित राखऽ चाहैत छथि । एतबा नहि, ओ आब एहि तरफ ध्यान देलनि जे पुरान परिवारक सदस्य हिनक निज नवनिर्मित परिवार सँऽ बेसी तरक्की तऽ नहि कऽ रहल अछि । अपन कमायल के कहत, ओ तऽ माता–पिता द्वारा अर्जित सम्पत्ति तक हड़पि लेब' चाहैत अछि । पुरान सदस्य अगर कष्ट मे छथि तऽ एहि सँऽ ओकर मन आनंदित होमऽ लागल । वाह रे ! धरती पर सब सँ बुद्धिमान प्राणी । तो एतेक निःकृष्ट कोना भऽ सकैत छह ! की समय केऽ एतेक शक्ति अछि जे मानव ह्रदय पड़ लिखल अमिट छाप मेटा कऽ नया अक्षर लिखल संभव होय । की एना नहि भऽ सकैत छल जे ओहि अक्षर संगे नव अक्षरक रचना कयल जा सकैछ ? की मानव ह्रदय एतेक छोट अछि जाहि मे नव निर्माण हेतु पुरान तत्वक सर्वनाश आवश्यक अछि ? यदि नहि, तऽ मनुष्य एतेक काठ ह्रदय किएक भऽ गेलाह ? अपन भाय–बहिन, माँ–बाप संगे परिवारक नव सदस्यक स्वागत, मनुष्य किएक नहि कऽ सकत ?

अभि बाबू विचारक एहि बबंडर सँऽ निकलि नहि सकलाह । सोचैत छथि, बेसी काल देखल गेल अछि जब व्यक्ति स्वयं सुखी नहि भऽ सकल तऽ आन केऽ सुखी देखऽ मे कष्ट होयत छनि आ चाहैत अछि अन्य सदस्य केऽ तरक्की रूकल रहय । एहन परिस्थिति सँऽ ओ किछु राहत प्राप्त करैत अछि । एहि तरहें स्वार्थ आ जलन केऽ आगोश मे आबि ओकर मनुसत्व अपवित्र होभऽ लागल आ ओ अनैतिक कार्य करऽ लागैत अछि । जा धरि ओकर कर्त्तव्य अनैतिक

नहि भेल, अकेला स्वार्थ आ जलन सन अधलाह तत्व सेहो मानवता केऽ किछु नहि बिगारि सकत । ईश्वर प्रदत्त मस्तिष्क केर उपयोग अगर मनुष्य आन के छोट करऽ मे नहि परञ्च अपन तरक्की मे लगाबथु तऽ ओकर कल्याण निश्चित अछि । आब फेर प्रश्न उठैत अछि जे स्वार्थ, जलन ओ अनैतिकता मे सॅऽ कोन सब सॅऽ अधलाह आ खतरनाक तत्व अछि जे समयक शिकार मनुष्य केऽ संवेदनाहीन कऽ रहल अछि । मनुष्य जेना–जेना पैघ होयत अछि स्वार्थ ओ जलन केर मात्रा निःसंदेह जागृत होमऽ लागैत अछि । व्यक्ति के अपन व्यक्तित्व आ पारिवारिक पृष्ठभूमि ओहि पर काबू करऽ मे सहायक होयत अछि । जाहि हद तक ओ काबू भऽ सकल, व्यक्ति ओतेक स्वस्थ्य, आ खुश रहि सकत । आन के एहि कारण विशेष हानि नहि भेल । जहन व्यक्ति एहि स्वार्थ ओ जलन के आवेग सॅऽ ग्रसित भऽ अनैतिक कार्य करऽ लगैत अछि तखन सॅऽ मानवता शर्मसार होमऽ लगैत अछि । व्यक्ति अपन मन ओ आत्मा केर अपराधी भऽ जायत अछि जकर आभाष, समय हिनका अवसर चूकि गेला पर प्रदान करैत अछि ।

घोर मंथन पश्चात अभि बाबू एहि निष्कर्ष पर पहुँचलाह जे व्यक्ति अगर अनैतिकता के सहारा नहि लिए तऽ समय के क्रूर पंजा सॅऽ बचि जायत । एहि लेल जन–जागृति जरूरी अछि अन्यथा समाज मे सुःख–शांति केर सम्राज्य नामुमकिन अछि । अपन ह्रदय पर पड़ल ठेस केर कसम खा कऽ अभिबाबू संकल्प लेलनि जे व्यक्ति सॅऽ, समाज सॅऽ अनैतिक कार्य नहि करऽ हेतु, स्वार्थक' हवस सॅऽ निकलऽ हेतु आ परमार्थ मे व्याप्त आनंदक सागर मे डूब' हेतु लोक सब के प्रेरित करब । गली–मुहल्ला, चौक–चौराहा पर नुक्कड़ सभा इत्यादि द्वारा सम्पर्क अभियान एहि सुकाज हेतु निश्चित भेल ।

भलमानुष व्यक्ति केऽ टीम बनल जाहि मे मुख्यतया हिनक विभाग सॅऽ सेवानिवृत कर्मचारी, कुछ उत्साही युवा वर्ग आओर अपन मोहल्ला सॅऽ चुनल किछु जागृत व्यक्ति शामिल भेलाह । संध्यकालीन बेला मे अभि बाबू चारि–पांच सहयोगी संगे घर–घर जा कऽ लोक सभ केऽ धर्म अनुकुल आचरण लेल आग्रह प्रारंभ कयलनि । पारिवारिक रिश्ता, नातेदारी मे महत्व पर ओजस्वी चर्चा कयलनि आ एहि तत्व पर जोर देलनि जे अपन प्रगति लेल ई आवश्यक नहि जे मॉ–बाप, भाई–बहन चाचा–चाची सॅऽ एहि प्रगति के प्रतिद्वंदिता करी । क्षुद्र स्वार्थ हेतु अगर अपन खून केर घाती होम' पड़ल तऽ विश्वास करू अहॉ के एक दिन सूद समेत गंवाबऽ पड़त । तखन ने ओ रिश्ता–नाता रहत आ ने ओ प्रगति अहॉ के ढ़ाढ़स बंधओत जे अपन सहोदर के छाती पर पैर राखि प्राप्त कयलहुँ । एहि तरहें जिंदगी कलह, द्वेष, घृणा और पाप युक्त गुजरि जायत । भौतिक सुःखक' लालसा छोड़ि पारिवारिक सुःखक आनंद लिअ, जीवन सुखमय भऽ जायत । भौतिक सुखक हवस केर परिणामस्वरूप प्राकृतिक वातावरण मे अत्यंन्त छेड़छाड़ हम कयलहुँ अछि तकर प्रतिरोधस्वरूप हमरा लोकनि के एतेक प्राकृतिक आपदा केऽ शिकार होमऽ पड़ैत अछि । अनैतिक कार्य धर्म विरूद्ध सेहो अछि । ईश्वर केऽ प्रति ई एक तरहक अपराध थिक । अपन अंतःकरणक शुद्धि पश्चात् हम अनेक तत्वक प्रति पाप करऽ सॅऽ बचि सकैत छी । प्रयोग तौर पर सिर्फ एक मास हेतु अपन मन ओ आचरण शुद्ध कऽ देखि सकैत छी । असीम प्रसन्नता आओर मन केर शांति प्राप्त होयत, आपसी सहयोग बढ़त तदनुरूप प्रगति अहॉक दरवाजा पर बांन्हल बकरी भऽ जेतीह । फेर पांछां मुड़ि कऽ देखऽ नहि पड़त । जनल संतति ओ अर्जल सम्पत्ति अत्यंत सुखदायी होयत अछि ।

लोक प्रथम तत्व तऽ याद रखलक मुदा अर्जल सम्पत्ति केऽ हड़पल संम्पत्ति सॅऽ स्थानापन्न कऽ देलक ।

राजनीति मे रहला सॅऽ अहॉक नीक कार्यक विरोध सेहो अपेक्षित अछि । विरोधी कह' लगलनि जे अभि बाबू ढोंग कऽ रहल छथि, राजनीतिक लाभ ग्रहण करऽ हेतु । शेर केऽ खाल मे भेड़िया आबि गेल, तऽ सतर्क रहब उचित । लोक केर मानसिकता ओ नैतिकता पर एतेक आक्षेप, भयावह स्थिति पैदा कऽ रहल अछि, एहि सॅऽ हिनका परहेज करब' उचित । प्रत्युत्तर मे अभि बाबू वाक–युद्ध मे नहि पड़ि दैनिक अखबार मे अपन स्थिति स्पष्ट करैत लिखैत छथि :

प्रिय बंधुगण,

हम समस्तजन सॅऽ आचार ओ व्यवहार मे सात्विक बनक' आग्रह कऽ रहल छी जाहि सॅऽ भाईचारा केर सदियों पुरान भारतीय सांस्कृतिक केर रक्षा भऽ सकय । एहि मे किनका संदेह भऽ सकैत छनि जे वर्त्तमान मे व्यक्ति स्वच्छंदता केऽ मद मे चूर भऽ अपने पायर मे कुरहरि मारि रहल अछि । पारिवारिक सौहार्द्र के दस गोट उदाहरण ताकअ मे घाम छूटि जायत । तखन ई आक्षेप जे हम भयावह स्थिति पैदा कऽ रहल छी कतऽ तक उचित अछि से प्रत्येक व्यक्ति बूझि रहल होयब । वास्तविकता तऽ ई थिक जे स्थिति वास्तव मे भयावह भऽ चुकल अछि, ओहि सॅऽ बांचब' हेतु हम प्रयासरत छी । हम व्यक्ति सॅऽ हुनक अपन परिवार आ रक्त संबंधी सॅऽ भाईचारा ओ प्रेम पुनः स्थापित करि एक स्नेहमयी विस्तृत परिवार केर पुनर्निमाण करऽ हेतु कहि रहल छी । युवावस्था तक अबैत–अबैत जे ममतामयी परिवार बलाय लगऽ लगैत अछि ओहो संबंधी ओतबे प्रेम ओ स्नेहक हकदार छथि जे अहां अपन नवनिर्मित परिवार तक सीमित कऽ देलहुँ

। एहि तरहक वातावरण निर्मित भेला सॅऽ अहॉ व्यर्थ केऽ प्रतिद्वंदिता सॅऽ बॅचि जायब । मानसिक शांति जे परिवारिक सौहार्द्र सॅऽ कायम होयत ओ स्थायी रहत । जीवन आनंदित भऽ जायत । डॉक्टर–वैद्य अहांक दरवाजा सॅऽ कोसों दूर भऽ जयताह । हमर राजनितिक विरोधी के शायद नहि बूझल छनि जे हम राजनीति एशो–आराम प्राप्त करऽ हेतु नहि अपितु लोक–सेवा हेतु स्वीकार कयलहुँ अछि । जनोपयोगी कार्य हमर चरित्र सॅऽ जुड़ल अछि । सिर्फ वोट प्राप्त करऽ हेतु पांचम साल मे सरकारी फंड सॅऽ किछु लोक–कार्य केर उद्घाटन कऽ अपना केऽ महान जनसेवक सिद्ध करऽ बला राजनीतिज्ञ हम नहि छी । ओ व्यक्ति राजनीति मे रहि सकथि, ताहि मजबूरी मे कुछ एहन कार्य कर’ केर बाद्धता महसूस करैत छथि, जबकि लोक–सेवा आ सदाचार हमर चरित्र केर प्रथम पहलू थिक जे हमरा खींच कऽ राजनीति मे आनि रहल अछि । राजनीति एहि कार्य हेतु बेसी परिधि अथवा धरातल प्रदान करैत अछि । नेक सुझाव देब’ के अधिकार आ नेक कार्य करऽ केर स्वतंत्रता अधलाहो व्यक्ति केऽ अछि । हम नेक नहियो भऽ सकैत छी मुदा हमर सुझाव ओ आग्रह आजुक परिप्रेक्ष मे कतेक महत्व रखैत अछि अपने सबके अवश्य ज्ञात होयत । क्षुद्र राजनीतिक आलोचना हमर अहॉक अभियान नहि रोकि सकत, आ आशा अछि मनुष्य मे ईश्वर प्रदत्त मानवता पुनः बहाल होयत ।

९

अभि बाबू ऑफिस केर एकटा अर्दली श्री जगलाल राय संग छपरा सॅऽ कऐक कोस दूर एक अत्यंत सामान्य वा पिछड़ल गॉव मोमिनपुर पहुँचि गेल छथि । जखन व्यक्ति केऽ जान पर खतरा नजरि अबैत अछि तऽ ओकर प्रतिक्रिया दू प्रकार सॅऽ मुख्यतः देखल गेल अछि – एक तऽ व्यक्ति जी–जान लगाकऽ हाथ–पैर मारैत अछि आ कोनो प्रकार के कसर नहि छोड़ऽ चाहैत अछि, आ दोसर व्यक्ति कार्य असंभव बूझि दैव के सुमिरन कऽ हुनक ईच्छा पर छोड़ि बेखबर भऽ जायत छथि । हुनक विचार छलनि जे जतय समस्या अछि ओतहि समाधानो, सिर्फ ताकअ के जज्बा चाहि । अपन शारीरिक कष्ट सॅऽ सब तरफ सॅऽ हारि गेला पर निष्कर्ष निकाललनि जे जादू–टोना केर प्रभाव अछि । अतः बहुत छान–बीन कऽ एकटा प्रसिद्ध ''भगत'' लग रायजी संग पहुँचलाह । हिनका बारे मे प्रचलित छलनि जे ओ ''ब्रह्मस्थान'' केर पुजारी छथि आ हुनक कृपा सॅऽ एहि तरहक कठिन सॅऽ कठिन समस्या केर निदान कऽ सकैत छथि । भगतजी दूनू गोटा के लऽ कऽ ब्रह्मस्थान पर पहुँचैत छथि । भगतजी केऽ निर्देशानुसार सोम दिन प्रातः काल दूनू गोटा ब्रह्मस्थान पर उपस्थित भेलथि । ब्रह्मस्थान गॉव सॅऽ कनेक हटि कऽ गाछी केऽ मध्य बनल छल । हाथ जोड़ि कऽ निवेदन कयला बाद आसन पर बैसैत छथि । भगतजी धूप–अगरबत्ती जला कऽ अभि बाबू सॅऽ अक्षत निहुछि कऽ हाथ मे राखि ध्यान करऽ हेतु कहैत छथि । फेरि ओ स्वयं ब्रह्म बाबा के ध्यान लगा कऽ अक्षत अभि बाबू पर फेकैत छथि

। किछु काल बाद हिनका लगातार डकार केर दौरा पड़ऽ लगलनि । करीब 15 मिनट के बाद जखन स्थिति सामान्य भेल तऽ भगत जी अपन निर्णय देलनि जे अहॉ केऽ खाना मे किछु मिला कऽ खुआ देल गेल अछि । दू गोट स्त्री मिलि कऽ किरदानी कयने अछि जे अहॉक गामक अपन निकट रिश्तेदार छथि । ठीक भऽ जायत मुदा सोम आ शुक्र केऽ आब' पड़त, ओहि दिन ब्रह्मबाबा जागृत रहैत छथि । हुनके प्रताप सॅऽ काज होयत । रायजी अपन राय देलनि – ''भगत जी, तनि जोर लगा के देख देम, साहेब हमार ऑफिस के बड़का ऑफिसर रहलनि हवें'' । भगत जी कहैत छथि – ''निश्चिंत रहीं, कौनो दुष्ट होखे, काबू होयबे करिहन'' ।

रायजी अभि बाबू के संग अपन गाम चल अबैत छथि जे मोमिनपुर सॅऽ चारि कोस दूर होयत । दलान पर खाट लागल, चाय–नास्ता, समय पर उपलब्ध भेल । रायजी स्वयं जा कऽ माछक इंतजाम कयलनि साथहि एक घैल ताड़ी उठा कऽ अनलनि । अपना सामर्थ्य अनुसार बेचारे हिनक खातिरदारी मे कोनो कसर नहि रखलनि । रायजी उमर मे अभि बाबू सॅऽ 5–6 साल जेठ होयताह । ऑफिस मे अभि बाबू के कमरा के देखरेख हिनके जिम्मा छलनि । ऑफिस के काज मे सालों सॅऽ कोनो शिकायत के मौका रायजी नहि देने छलनि, परञ्च, वर्त्तमान लगन देखि कॅऽ हिनक मन मे रायजी के प्रति श्रद्धा उत्पन्न भऽ रहल छलनि । ऑफिस के काज मन लगा कऽ कयला सॅऽ एक ईमानदार कर्मचारी केऽ दर्जा भेटि सकैत अछि मुदा एखन जे ओ कऽ रहल छथि से हुनक परोपकारी व्यक्तित्व के उजागर कऽ रहल छलनि जाहि कारण सॅऽ अभि बाबू कृतज्ञता महसूस कऽ रहल छलाह ।

रात्रि केऽ आठ बाजि चुकल छल । रायजी केर दलान पर

विशेष भीड़ जमल छल । दिल्ली सॅऽ बड़ पैघ व्यक्ति जगलाल ओतय गेस्ट छथि । ग्रामीण सब भेंट करऽ हेतु आ किछु जानकार तत्कालीन विषय–वस्तु पर अपन राय के विशेषज्ञक राय सॅऽ तुलना करऽ संगे अपन ज्ञानवर्धन हेतु आबऽ–जाय लगलाह । दलान पर बैसि कऽ ग्रामीण परिवेशक अवलोकन सॅऽ अभि बाबू के अपन गामक याद आबि रहल छनि । गाम जतय ओ अपन बचपन बीतौअलनि, गाम जतय ओ बाछी केर पूँछ पकड़ि कोसों दौड़ैत छलाह, जतय गुड्डी केर डोर पकड़ऽ हेतु एक गाम सॅऽ दोसर गाम तक भागि जायत छलाह, गाम जतय अपन क्यारी बॉटि गाजर, पालक, टमाटर आ आलू उपजा कऽ सफल किसान सन खुशी भेटैत छलनि । ओ गाम जाहि मे आमक गाछक छाहरि मे बैसि घंटों पढ़ाई मे बीतल छलनि । गाम, जतय सॅऽ प्रथम बेरि नौकरी भेला पर ई समझि कऽ बाहर आयल छलाह जे ओतय तऽ बस ''सराय'' होयत, घर तऽ यैह रहत, नौकरी केऽ जगह तऽ बदलैत रहत मुदा गाम तऽ स्थावर अछि । कमबाऽ हेतु बाहर जायब सेहो जरूरी अछि तखन ने गाम पर सुखी–सम्पन्न जीवन भेटत, प्रशंशा भेटत आ माथ गर्व सॅऽ ऊँच होयत । मुदा एक बेरि गाम छोड़लहुँ तऽ जेना गाम हमरा छोड़ि देलक । आब ओ गाम हमर नहि रहल । क्षुद्र स्वार्थ ओ निष्कृष्ट उद्देश्यक हेतु हमरे परिवारक किछु व्यक्ति मिलि कऽ छीनि लेलनि हमर गाम । जेठ भाय कहैत छथि जे हम अगर स्व. बाबू केर घर–सम्पत्ति केर देख–भाल नहि करितहुँ तऽ बिलटि गेल रहित अतएव, एहि घर मे हमर अलावे आओर किनको नहि छनि । माताजी कहैत छथि जे टुन्ना के चारि टा बेटी छैक, बॉचल जमीन मे सॅऽ बेचि कऽ ओकर विवाह हेतु देल जेतैक । एक धरा कहैत अछि झुलन के नौकरी–चाकरी नहि छैक तऽ घर मे जेठक सॅगे हुनको किछु भेटि

जयबाक चाही । अभिमन्यु केऽ नीक व्यवस्था–बात भएऽ गेल अछि, हुनका कोन जरूरत छनि ? सब बाबू के खून–पसीना सॅऽ निर्मित ओहि घोंसला केऽ एक सम्पत्तिक रूप मे देखि रहल छथि । कौड़ी मे अर्जल ओ सम्पत्ति जे आब लाखो केऽ भऽ गेल अछि । शायद ईयह मूल्यवर्द्धन ओहि प्रेमांगन केऽ एक सम्पत्ति मे बदलि देलक । कानून केर सहारा लिअ तऽ पिता के अर्जल सम्पत्ति हुनक स्वर्गवासी भेला पर प्रत्येक हकदार के हित रक्षा करत । परञ्च, कानून सॅऽ प्राप्त कयल गेल हिस्सा कि हमर पूर्व घरक संकल्पना सन भऽ सकैत अछि ? कदापि नहि । ओ प्रेम, वात्सल्य, विश्वास आ सुरक्षा केऽ भावना जबरदस्ती हासिल कयल गेल हक मे प्राप्त नहि भऽ सकैत अछि । आब हमर ओ घर उजरि चुकल अछि, मजबूरी मे ओहि सराय के महत्व बुझल भेल । ओहि सराय हेतु ओतेक श्रद्धा उत्पन्न भऽ रहल अछि जतेक सहारा देब' बला ओ व्यक्ति लेल कोनो बालक के होयत, जिनका जन्मदाता उठा कऽ अनाथालय छोड़ि देलनि । अजीब अंतर्द्वंद अछि – अगर सब छोड़ि गाम पर अकर्मण्य बैसल रहू तऽ लोक व्यंगवाण सॅऽ आहत कऽ देत आ तरक्की केर राह पकड़लहुँ तऽ अपनहि लोक सॅऽ अपदस्त कऽ देल जायब । भिण्डी के फऽर जुआ गेला पर गड़' लागैत अछि । सेह' हाल हमर परिवारक सदस्य पर लागू भऽ गेल । पैघ भेला पर एक दोसरक आंखि मे गड़' लागलनि, नहि तऽ हमर की दोष छल जे लोक हमर तेज सॅऽ, क्षमता सॅऽ जरअ लागल । लोक कोन कसर रखलनि जे कोहुना दुर्गति पाछॉ नहि छोड़नि, किएक आगू भगताह, छोट छथि, सब दिन हमर अर्दली बनल रहथु । बाबूजी सिर्फ जेठ के पुत्र समझि जन्म देने रहथि आ बांकी सब के हुनक अर्दली बनऽ हेतु ? ई तऽ हुनको अपमान थिक । से नहि भऽ सकैत अछि – नै हम अपन तरक्की केर गति

कम करब आ नहि अपन घर सॅऽ अपदस्त होयब । चाहे जे दाम चुकाब' पड़य । हम अपन घर केर पुरान संकल्पना पुर्नस्थापित कऽ के छोड़ब ।

रायजी खाना लऽ आवाज देलनि – ''सर, खाना आ गईल बा । गावें के डबरा के मछरी किनाइल हऽ । देखीं तऽ कइसन बनल बाटे'' ।

अभि बाबू संग मे किछु भोजपूरी सीख चुकल छलाह । कहैत छथि – ''अरे देसी मछरी हऽ, दिल्ली मे कहॉ ई मिलि । स्वाद तऽ नीमने होई'' ।

रायजी : ''अरे जैसे–तैसे बनल बा । रउआ घरे लेखा थोड़े होई । बांकी दू–चार दिन खातिर बर्दास्त करीं । अब देंखी भगतजी परसों का कहऽ तारें'' ।

अभि बाबू : ई का कहऽ तानी, एतना प्रेम से कोनो दोसर खातिर कष्ट करे बला बहुत कमे मिलऽता । हम तऽ एहसानमंद बानी ।

दूनू गोटा खा–पी कऽ दलान पर खाट लगा कऽ सूति रहैत छथि । सोम के प्रातः काल पुनः मोमिनपुर निर्धारित समयानुसार पहुँचैत छथि । भगतजी केऽ आदेश पर आसन ग्रहण कयलनि । एक गोट सहायक सेहो भगतजी के संग देब' हेतु उपस्थित छल । सहायक मुख्यतः पचरा गाब' हेतु छलाह । धूप–दीप जड़ल, पचरा गायन शुरू भेल । भगतजी अपन भाव मे लीन भऽ अक्षत फेंकनाई शुरू कयलनि । अभिबाबू केऽ पेट फूलि जायत छनि । ढ़कार–पर–ढ़कार होम' लगैत छनि । घंटा–आध–घंटा ब्रह्मबाबा के नेहोरा कयल गेल, अभिबाबू के आंखि सॅऽ पचरा सुनि–सुनि नोर खसय लगैत अछि । आर किछु काल मे ओ दहो–बहो नोर सॅऽ कानअ लगैत छथि ।

भगतजी पूछैत छथि – रऊआ के बानि ? काहे के तंग कऽ रहल बानी ?

अभिबाबू : (आंखि सॅऽ दहोबहो नोर खसैत) हम इनकर बाबूजी हेई । हमरो के किरदानी से मारल गइल बा ।

भगतजी : अपने बालक के सतावल जा ला ? देखीं कैसन हालत भइल बाटे । ब्रह्मबाबा के शरण मे रहीं, ओहे उद्धार करिहन ।

अभिबाबू : (जोर सॅऽ कापैत) हमरा आन्हर कऽ के मजबूर कईल गईल बा । अनजाने मे अपने बेटा के खून पीयत रहनि । ब्रह्मबाबा के शरण मे रहब । कब से चाहत रहनि कि जाल से छूटिं ।

भगतजी : ठीक बा, ब्रह्मबाबा के जयकार करीं । ओहे शक्ति दिहें ।

अभिबाबू (झूकि कऽ प्रणाम करैत) ब्रह्मबाबा के जयकार करैत छथि । भगतजी पीठ पर अक्षत फेंकैत छथि । किछु काल मे सब सामान्य भऽ जायत अछि । रायजी केऽ कहला पर किछु काल बाद पुनः जांच कयल गेल तऽ पता चलल जे एखन किछु अछोप (अशुद्ध) चीजक प्रकोप बॉचल अछि । पुनः प्रयास भेल जे असफल सिद्ध भेलनि । भगतजी सलाह देलनि जे एहन प्रकारक विकार मे कएक बेरि प्रयास करऽ पड़ि सकैत अछि, मुदा नवरात्रि के बीच मे प्रयास कयल जाय तऽ उम्मीद बेसी रहैत अछि । अगर सेहो नहि भेल तऽ ब्रह्मबाबा के मुख्य मंदिर, जे बलिया जिला मे पड़ैत अछि, ओतऽ जाय पड़त । ओहिठाम प्रयास विफल नहि होयत । सांझ होमअ बला छल, दूनू गोटा नव आशा आ विश्वास केऽ साथ विदा भऽ गेलाह ।

सुलेखा जखन घटना सॅऽ अवगत भेली तऽ मन मे आशा के नव–किरण प्रस्फुटित भेलनि । ओ किरण तखन आओर प्रखर

भेलनि जब अभिबाबू अपन परिस्थिति मे सुधार महसूस कयलनि ।

बचपन के संगी केर अस्वस्थ्यता के समाचार सुनि थुथमा साहेब दौरल पहुँचैत छथि, मन मे घोर आश्चर्य आ क्रोध लऽ कऽ ।

अभिबाबू (स्वागत करैत पूछैत छथि) : की दोस, सब ठीक अछि ?

थुथमा साहेब : ठीक तऽ अछि मुदा अहाँ कोन तरफ जा रहल छी ? सुनैत छी बीमारी केऽ इलाज हेतु झार–फूँक सन अंधविश्वास आ आडंबर केऽ सहारा लऽ रहल छी । एतेक प्रबुद्ध भऽ कऽ, विज्ञान केर विद्यार्थी होईत किएक एहन जाहिल धोखा केऽ आमंत्रण दऽ रहल छी ? हमरा संगे एखन चलू, दिल्ली मे डाक्टर केऽ कमी छैक ? सबटा जाँच–पड़ताल कऽ कोन बीमारी छैक जकर इलाज नहि होयत ?

अभि बाबू : अहां केर चिंता जायज अछि । बल्कि ई चिंता नहि हमरा प्रति अहाँक प्रेम थिक । अहां तऽ जनैत छी, हमहूँ एहि एब पर विश्वास नहि करैत छलहूँ मुदा जखन सब डाक्टरी जाँच–पड़ताल सँऽ किछु लाभ नहि भेल तऽ सोच' पर मजबूर भेलहूँ किएक तऽ हमर बीमारी के प्रारंभ हमर भावज के आपत्तीजनक हाव–भाव बादे शुरू भेल छल, जकर विवरण हम अहां के देने रही । तथापि, हम प्रथमतः डाक्टर–वैद्य के कोनो प्रयास नहि छोड़लहुँ । अहां कहब भ्रम अछि – मुदा सांझ मे पेट फूलि ढ़कार शुरू होयब, दांत अथवा मुँह सँऽ खून निकलब, नींद मे अशुद्ध स्वप्न सँऽ उछन्नर भऽ जायब भ्रम कोना भेल । पुनः झाड़–फूंक के प्रयोग तात्कालिक आराम किएक पैदा करत – अगर कोनो प्रकोप नहि अछि ? सब सँऽ पैघ जखन लौकिक समाधान नहि रहैत अछि तऽ भुक्तभोगी परलौकिक शक्ति पर ध्यान दैत अछि । अगर ऐना नहि तऽ ईश्वर केर स्मरण किएक करैत छी ? ईश्वर के अहाँ देखलहुँ अछि ।

थुथमा साहेब : (हड़बड़ाइत) ईश्वर तऽ अपन कण–कण केर संरचना, उदारता, प्रकृति–निर्माण आओर ओकर संचालन केर प्रमाण प्रस्तुत कऽ अपन उपस्थिति दर्ज कयने छथि । फेर, कएक बेर कतेक बीमारी जॉच–पड़ताल सॅऽ प्रारंभिक अवस्था मे उजागर नहि होईत अछि एकर प्रमाण अछि । तऽ लोक निराश भऽ अनजान डगर पकड़ि अपन हानि करत ? उच्च–चिकित्सकीय प्रयास ही एकर एक–मात्र समाधान थिक । अहां के हमरा संगे ईलाज हेतु चलऽ पड़त ।

अभि बाबू : विश्वास करू, स्पेसलिस्ट डाक्टर सबहक राय मे कोनो रोग नहि अछि । विज्ञान के बस मे, प्रकृति केऽ प्रत्येक क्षेत्र नहि तऽ आयल अछि आओर नहि आबि सकत । जखन अहां दैवीय शक्ति के मानैत छी जे दर्शनीय नहिं छथि तऽ ओहि ऋणात्मक शक्ति के किएक नहि मानब जाहि सॅऽ उपद्रव महसूस भेल हो ? प्रकृति मे, अगर अवलोकन करी तऽ हरेक तत्वक दोसर पहलू मौजूद भेटत । मुदा ई सब अदृश्य आ अनजान पहलू पर ध्यान नहि दऽ, मानि लिअ जे समस्या के तात्कालिक समाधान एहि माध्यम सॅऽ महसूस भेला उपरांत हमरा एहि पर विश्वास भेल । मन अगर मन सॅऽ कोनो ईशारा करय तऽ तर्क नहि करऽ केऽ चाही ।

एतबा मे फोन क’ घंटी बजला सॅऽ ओ व्यस्त भऽ जायत छथि ।

थुथमा साहेब, अभि बाबू के तर्क–वितर्क सॅऽ परिचित छलाह । ओ बूझैत छलाह जे ओ अपन निर्णय कोनो तरकीब सॅऽ सिद्ध कऽ देताह । तथापि, शुभचिंतक होयबा कारण मन सशंकित छलनि, मुदा एतेक विश्वास अभि बाबू पर छलनि जे ओ काज सोच–समझि कऽ करैत छथि । थुथमा साहेब के याद आबैत छनि स्कूल सॅऽ जखन भागि कऽ दूनू गोटा सिनेमा देखऽ गेल छलहूँ तऽ अभि बाबू

राय देने छलाह जे पाछां गेट सॅंऽ बाहर आबि किनसाइत किओ देख लिए । हाम सरपट नकारि देने छलहूँ आ मास्टर साहेब तीनू विद्यार्थी के पकड़ि कऽ भरि दिन मुर्गा बनौअलनि । ओ स्वयं पाछां गेट सॅंऽ भागि क्लास के शोभा बढ़ा रहल छलाह । एकहि स्कूल सॅंऽ साथ–साथ क्लास मे बैसऽ बला दू बालक आगां जा कऽ कतेक भिन्न व्यक्तित्व भऽ सकैत अछि, थुथमा साहेब एकर आकलन करऽ मे व्यस्त भऽ गेलाह । जोर देला पर ज्ञात भेलनि जे दूनू मे मुख्य अंतर जूनून के अछि । प्रगति पथ पर हार नहि मानऽ के जूनून । दोसर अंतर छलनि – कर्मशीलता के । अपन मंजिल तक पहुँचऽ हेतु अनवरत आ अथकनीय प्रयास मे पारंगत अभि बाबू सॅंऽ तऽ कतेक प्रतियोगी तीन–चारि कदम चलऽ धरि परास्त भऽ जायत । एहि सब सॅंऽ अलग जे हिनक व्यक्तित्वक विशेषता छलनि ओ स्पष्ट सादगी आ शालीनता छलनि । एतेक अंतर रहितो हमर स्नेह आ मित्रता यथावत अछि । बचपन मे साथ बीताओल क्षण व्यक्ति के मन–मस्तिष्क पर कतेक अमिट छाप छोड़ैत अछि ? एतबा मे फोन राखि अभि बाबू सन्मुख होइत छथि –

अभि बाबू : ''दोस, आर कहियौक, माया ठीक छथि ? अहांक गाड़ी पटरी पर अछि की नहि'' ।

थुथमा साहेब : सब तऽ ठीके अछि, मुदा सामान्य व्यक्ति लेल गृहस्थी चलायब कोनो हल्लुक काज छैक । एक काज भेल नहि, दू–टा हाजिर । लोक–लाज, अपन पागक चिंता आ सर–समाज सॅंऽ तालमेल कऽ, केऽ चलब असंभव प्रतीत होईत अछि । बहुत जुगाड़ कऽ ए.सी. किनलहुँ, एतबा मे पड़ोसन फ्लैट किनबा केर खुशी मे लड्डू बॉंटि गेलीह । हम तऽ कहैत छी जे मिठाई बांट' केर ध्येय कम आ ढ़ोलहा पीटऽ केर बेसी अछि । परञ्च, नहि तऽ अस्वीकार कऽ

सकैत छी आर नहि अंगीकार । मन चीत्कार कऽ उठल – पड़ोसी के एहि अश्वमेध यज्ञ सँऽ ।

अभि बाबू : अहाँ किएक व्यर्थ के कुचक्र मे फँसल छी । अपन सामर्थ्य के परिधि मे रहि निर्णय लिअ । समाज मे, पड़ोस मे के कोना रहैत अछि, बिसरि जाऊ । एहि सँऽ मानसिक अशांति भेटत । अपन प्रगति लेल सत्त प्रयत्न जरूरी अछि मुदा लोकक प्रगति आ जीवन–स्तर सँऽ प्रतियोगिता खतरनाक । सादगीपूर्ण ओ सामान्य जीवन व्यतीत कऽ व्यक्ति योथोचित प्रतिष्ठा अर्जित कऽ सकैत अछि । सबटा मनःस्थिति पर निर्भर करैत अछि ।

थुथमा साहेब : (मन मे सोचैत छथि – शायद व्यक्ति के सुःख सुविधापूर्ण जीवन व्यतीत कयला उपरांत सामान्य जीवन आकर्षित करैत अछि । महात्मा बुद्ध राजशी ठाट–बाट सँऽ ऊबि शांति केर खोज मे घर सँऽ पड़ाएल छलाह, मुदा ताहि हेतु पहिले राजशी ठाट–बाट तऽ अनुभव होयबाक चाही । अपने तऽ राजशाही जीवन बीताऽ रहल छथि, एम्हर तऽ एखन धरि कौड़ी–कौड़ी माया जोड़ी । सम्पूर्ण जीवन अनुभव तऽ तखन ने होयत जब दूनू प्रकारक स्थिति सँऽ अवगत होयब) सम्हरि कऽ, माथ हिला स्वीकार करैत छथि – हँ, हँ, अहाँ ठीके कहैत छी – कोशिश अछि, व्यवस्थित भऽ जाय ।

प्रारंभहि सँऽ थुथमा साहेबक सब कार्य देरी सँऽ भेलनि । जखन मिडिल स्कूल जयबाक चाही तखन पिता के नींद खुजलनि आ प्राइमरी स्कूल मे दाखिला करा देलनि । पैघ रहला कारण सहपाठी सब सँऽ विशेष सहयोग भेटऽ लगलनि । ओ लोकनि परीक्षा तक मे मदद कऽ हिनका पराश्रित कऽ देलनि । पैघ भेला पर नौकरी केर पाछां भागैत–भागैत थाकि गेलाह, एहि बीच कखन विवाहक उम्र पार भऽ गेलनि ज्ञात नहि । कोना याद रहितनि ? कोनो घटक सब

आबि जखन दस्तक दितथि तऽ बात दोसर छल । टेंगरपट्टी बाली काकी मौका देखि अपन भतीजी हिनका खूंट बान्हि उपकार हॅसोतने रहथि । भरि गाम मे कहबयिका केर नाम सॅऽ प्रसिद्ध छलीह टेंगरपट्टी बाली काकी । कनेक लंगड़ा कऽ चलैत रहथि मुदा जुबान एकदम सोझ छलनि । शायद गामक नाम हिनके व्यक्तित्व केऽ चरितार्थ करऽ हेतु राखल गेल हो । गायत्री देवी सॅऽ एक बेरि खेत मे राखल धानक बोझ पर अपन दावा देखबैत कहि देने रहथि – ''अहॉ कहैत छी – ईहो बोझ हमरे छी, एतेक उपज पैदा करऽ बला कोनो मरद अछि अहॉ ओतऽ । हमर खलिहान चलि कऽ देखब तऽ गस खा जायब'' । बड्ड अपमान भेल छलनि बेचारी के जअन–हरबाहा सबहक सोझा । चारि साल तक हुक्का–पानी बंद रहला उपरांत थुथमा साहेबक बिवाह दूनू परिवार केऽ नजदीक अनलक । चारि मास बीतैत–बीतैत गायत्री देवी केर उलाहना सॅऽ त्रस्त भऽ पुनः यथास्थिति बरकरार भेल जे एखन धरि जारी छल । थुथमा साहेब केर संगी–साथी सब कतऽ सॅऽ–कतऽ पहुँच गेल छलनि । ओहदा आ रसूख पाबि कतेक गोटा तऽ चिनहऽ मे आनाकानी करऽ लगलनि । अभि बाबू एकमात्र मित्र रहथि जे मित्रता केऽ चकाचौंध सॅऽ हाबी नहि होमअ देने रहथि । सोझ आ सपाट बाजि दैत छलाह जाहि सॅऽ कखनो टीस अवश्य होइत छलनि परञ्च उद्देश्य दूषित नहि छलनि । दोसर हिनकर चरित्र बचपन सॅऽ एकहि रहला कारण थुथमा साहेब अभि बाबू पर पूर्ण विश्वास करैत छलाह ।

.....

१०

थुथमा साहेब सासुर सँऽ बियाह सम्पन्न करा कऽ वापस आबि गेल छथि । एहि परोजन मे खूब नाम कमौलथि । सब केयो चर्चा कयलनि जे छोटका पाहुन नोत पुर' मे जीत गेलाह । कोनो कसर नहि रखलनि, जतेक मिठाई अनलनि, ओतेक तऽ छोट–मोट हलवाई ओतय स्टोक मे सेहो नहि रहैत अछि । कनिया हेतु नेकलेस तऽ चर्चा केर विषय छल । आन बहिन सब तऽ देखि कऽ दंग रहि गेलीह । बर हेतु अंगूठी असली हीरा रचित छल से देखऽ हेतु ततेक भीड़ जमल जे एक क्षण तऽ अंगूठी गायबे छल । ओ तऽ धन्यवाद दी शंभु काका के, जे अपन अर्धांगिनी केऽ मुट्ठी मे सँऽ जबरदस्ती अंगूठी बाहर कऽ घरवैय्या के सौंपलनि । एहि प्रकारक घटना सब सँऽ आन सबहक मन पर जे प्रभाव पड़ल होइन, थुथमा साहेब सपत्नीक गद्‌गद् छलाह । भावविभोर पति–पत्नी आनांदातिरेक मे बात कऽ रहल छथि –

थुथमा साहेब : आई माथ गर्व सँऽ जतेक ऊँच भेल से पूर्व नहि भेल छल । अहाँक लहँगा तऽ टॉप कऽ गेल, कतेक' छल ?

योगमाया : 15 हजार केऽ । कनेक महँग तऽ पड़ल परञ्च जाय दिअ ! पाइ वसूल भऽ गेल । सब तरहें हमर सभक प्रदर्शन सबसँ आगा छल । आब तऽ कियो सपनो मे शंका नहि करताह जे मायाक परिस्थिति दऽब अछि । गहना–गुड़िया घर मे राखिए कऽ की करब, जहन पागे खसि पड़य । जँऽ नहियो छुटि सकत तऽ जाय दिअ, पाई भेला पर फेर किनि लेब ।

थुथमा साहेब : छुटत किएक नहि ? एक आध मास मे तऽ पाई

जोड़िए लेब । एम्हर मॉ कहैत छलीह जे पोखरि पड़क झंझटिया जमीन बेच' मे बुद्धिमानी छल से बैना धऽ लेलहुँ, अहूँक दस्तखत जरूरी अछि से आबि कऽ कऽ जाऊ । दूनू भाई तीन–तीन लाख बॉटि लेब ।

योगमाया : कतेक तीन लाख !

थुथमा साहेब : मॉ तऽ सेह' कहैत छलीह ।

योगमाया : (आह्लादित भऽ) हह ! फिरल दिन । भगवती ककरो प्रति एतेक निष्ठुर थोड़े भऽ सकैत छथि । (सशंकित भऽ.....), परञ्च अहॉ पर कोनो भरोसा नहि । दस्तखत कऽ देबनि आ हाथ लागत भांगक गोला । अहॉ तऽ आज्ञाकारी बालक छी, चुप्पे रहब । अहॉक माय पर हमरा भरोस नहि, हम संग मे चलब । एहि बेरि कोनो रिस्क नहि लऽ सकैत छी । मन मे दबल इच्छा छल जे पाई हुए तऽ एगो कार खरीद ली । लाल दीदी के देखियौन, कतेक ठाठ सॅऽ आंगनक सीढ़ी सॅऽ कारे मे पायर रखैत अछि । हम की आदमी नहिं छी, सुःख सुविधा ककरो बेजाय लगैत छैक ?

थुथमा साहेब : से तऽ अहॉ हमर मनक बात कहि देलहुँ । आजुक माहौल मे तऽ अहॉ अगर अपन कार सॅऽ आबर–जात करैत छी तऽ आन पृष्ठभूमि गौण भऽ जायत अछि । मुदा बंगाली बाबू तऽ सुनतॅहि मकान किराया बढ़ा देताह । कऐक बेरि कहि चुकल छथि – ''साल भर हो गिया, तुमका भाड़ा बढ़ेगा''। एखन धरि चुप करौअने छी ।

योगमाया : कोनो अलग सॅऽ जगह नहि चाही । आंगन मे कार ठाढ़ रहतैक तऽ किएक बढ़ाओत किराया ? ओ जगह तऽ एखनहुँ हमरे अंदर अछि ।

थुथमा साहेब : हिनका तऽ बहाना चाहि । खैर जाय दिअ, किछु दऽ कऽ समझा लेब । पहिने जोगार तऽ होम' दिअ' ।

योगमाया मन मे सोचैत छथि जे दैवक कृपा सॅऽ अगर ई उद्देश्य सफल भेल तऽ बूझू मारि लेलहुँ मैदान । समस्याक पूर्ण समाधान एतय निश्चित अछि । उत्साहित भऽ जल्द सपरिवार गाम पहुँचि जायत छथि । एहि ठाम आबि पता लगलनि जे जमीन दस लाख मे बिकल अछि, अतएव, पॉच लाखक दावा बनैत छल । प्रश्न कयला पर सास बिफरि कऽ कहलनि – अहॉ सब पाई लऽ गोल भऽ जायब, हमरा के देखत ? बेसी अडंगा नहि कऽ तीन लाख टाका लऽ प्रस्थान कयलनि । वापसी काल मे नहिरा सॅऽ एकटा दूरक पितिऔत साथ भऽ गेलनि । ओ बेचारे दू बेरि सॅऽ दसमी फेल भऽ रहल छलाह । सोन काकी नेहोरा करैत कहलनि – माया, मनटुनमा के सेहो पार लगाबह, गाम पर तऽ बर्बादे भऽ रहल छथि । कतहु कोनो काज मे लगा देबनि । माया सोचलीह रहत तऽ टहल–टिकोरा करबे करत, आई–काल्हि विश्वास बला लोक भेटबे कहॉ करैत अछि ।

आशानुरूप, मनटुन अबितॅहि घरक काम–काज मे हाथ बॅटाबअ लगलाह । बड़ चरफर बालक छलाह, कहियौन एक काज, करताह दू टा । जा धरि काज खतम नहि भेल, छोड़ि नहि सकैत छथि । जेना ऑन बटन दबि गेला बाद ऑफ केर विकल्पे नहि होय । कार केर स्वागत हेतु पूर्ण मनोयोग सॅऽ तैयारी शुरू भेल । हिसाब–किताब जोड़ल गेल तऽ ज्ञात भेलनि जे सात लाख सॅऽ कम मे कोनो नीक कार नहि भेटत । थुथमा साहेब जनैत छलाह जे बैंक तऽ कार लोन सैलरी प्रूफ देखला बादे दऽ सकैत अछि मुदा कागज जमा करा देब तऽ दू लाख के मंजूरी मुश्किल सॅऽ होयत । एहि स्थिति मे काज तऽ नहिए सपरत, ऊपर सॅऽ फजीहत होयत से अलग । मन मे दृढ़ निश्चय कयलनि जे कोनो तरहे कागज सब

ठीक कऽ लोन मंजूरी भऽ जाय, ब्याज सहित रकम, महीना मे जेना–तेना जमा करैत रहब, तऽ चूँ–चपर नहि होयत । सब कागज हेराफेरी कऽ ठीक करा, जमा करौअलनि आ मनवांछित कार दरवाजा लागि गेल । मनटुन स्वेच्छापूर्वक कपड़ा भींजा–भींजा कऽ साफ कयलक । कार आ सार पाबि थुथमा साहेब बेहद उत्साहित छथि, मानू जीवनक सम्पूर्ण जंग जीत गेल होथि । चारू कात फोन आ संवाद भेल, बधाई पर बधाई भेटलनि से बटोरि–बटोरि धन्य भेलाह । दिन मे कार आम गाछक छाहरि मे राखल जाइत छल जे रौद नहि लागय, रंग पर कुप्रभाव पड़ैत छैक । कार केऽ रात्रि विश्राम स्थल पूर्वनिश्चित आंगन छल जे कोनो चोर–चुहार के नजरि नहि पड़य । चारिए दिन बीतल होयत कि मनटुन सांध्यकाल अनोर कयलक – ''अनर्थ भेल, कौवा घिना देलक कार पर । ततेक चटक शीशा पर कयलक जेना दस टा कौवा मिल साजिश रचने होय''। थुथमा साहेब आफिस सॅऽ आबि घर मे पायर रखने होयताह, सुनि कऽ बाहर दौड़लनि । दृश्य देखि मन व्याकुल भऽ गेलनि । कौवा केऽ खोजअ लगलाह, जे उड़ि कऽ किछु दूर धरती पर चोंच मारि रहल छल । मनटुनमा ताबत बाल्टी भर पानि आ कपड़ा लाबि चुकल छल । थुथमा साहेब कौवा केऽ देखबैत कहलनि – ''वैह छी डाही चोर, जकरा एतेक सुंदर चीज देखल नहि गेलैक'' । इशारा पबितॅहि मनटुनमा कौवा पाछां एकटा पाथर उठा कऽ दौड़ल । कौवा एक ठाम सॅऽ उड़ि कऽ दू फर्लांग आगू जा बैसि गेल । मनटुन कोन हार मानऽ बला लोक छलाह । दू–तीन बेरि भागि–भागि कौवा परेशान भेल आ अंत मे कुचरैत जा कऽ ओहि गाछ पर बैसि गेल जतय कार लागल छल । तमसा कऽ मनटुन पाथर भांजि देलक । कौवा तऽ उड़ल मुदा पाथर कार केऽ शीशा चकनाचूर कऽ देलक । थुथमा साहेब मूर्छित

होइत–होइत बचलाह । गारि पढ़ैत दौड़लाह सार पर । लोक सब मिलि मनटुन के बचौअलनि, नहि तऽ के जानय कारक शीशा जकाँ ओहो चुड़ल जयतथि ।

कार केऽ लालन–पालन पूर्ण श्रद्धा सँऽ होइत तीन मास गुजरि गेल । दूनू प्राणी जीवन आनंद मे डूबल रहथि । किस्त जमा करऽ केर नहि कोनो जोगार भेलनि आ नहि कोनो हार्दिक चिंता । बैंक बला के फोन चिन्हि कऽ अनसूना कऽ देल जाइत छल । छओ मास एना मे गुजरि गेल तऽ बैंक दबिश बढोअलक । जाँच–पड़ताल शुरू भेल तऽ ज्ञात भेल जाहि बैंक केर चेक प्रदान कयल गेल अछि ओहि मे दरमाहा नहि अबैछ । कंपनी सँऽ लिखा–पढ़ी शुरू भेल तऽ उजागर भेल जे कागद फर्जी थिक । कार जब्त भेलनि ऊपर सँऽ पुलिस शिकायत दर्ज भेल ।

पुलिस जाँच मे फर्जी कागज उजागर भेला सँऽ थुथमा साहेब गिरफ्तार होमअ के डर सँऽ घर सँऽ फरार भऽ गेलाह । माया बेचारी माथ पटकि लेलीह । चारू कात अन्हार नजरि आबैत छलनि । कतऽ जाऊ, कोन मुँह लऽ कऽ जाऊ, ई मुद्दैय्या हमरा कतहुँ कऽ नहि रखलथि – मन मे अनेक विचार उठलनि । अन्न–जल तक सँऽ विरक्ति प्रतीत होमऽ लगलनि । भोर सँऽ सांझ तक आँखि सँऽ झर–झर नोर । जानक' परवाह कोना छोड़ि दितथि । छोट बालक नितांत अनाथ भऽ जायत । नै मरि सकैत छलथि नै जी सकैत छलथि । परिस्थिति जखन सम्हार सँऽ निकलि जाय तऽ समर्पण करऽ पड़ैत अछि । समय रहिते अगर नहि ध्यान देलहुँ तऽ अंतिम रास्ता सेह रहि जायत अछि । समर्पण कऐक स्थिति मे नवनिर्माण केर संदेश नेने अबैत अछि । अवांछनीय आचरण केर समर्पण परिस्थितिजन्य किएक नहि होय, करय पड़ल तऽ अपना केऽ

सौभाग्यशाली बूझू ।

लोक–सभहक कटाक्ष आगि मे घी केर काज कयलक । योगमाया केर स्थिति ओहि अपराधी सन भऽ रहल छलनि जे पहिल बेरि जेल जा रहल हो । ओ अपराधी आब अपन अपराध केऽ पूर्वक स्थिति मे जायब चाहैत अछि । हजार बेरि क्षमा मांगिलो पर किओ एक बेरि क्षमा कऽ दिअ; आब अपराध नहि होयत । परञ्च, चुकल वक्त कखन वापिस आयल अछि । ओ तऽ अपन दाम लेबे करत, कतबो छटपटा लिअ । मनोद्वेग उठलनि – जाहि लोक–लाज हेतु दिन–राति जोड़–तोड़ कयलहुँ, एकहि क्षण मे मृगमरीचिका सिद्ध भेल ।

एकर संगहि एक आवेग उठलनि – ''भौतिक सुःख आओर बनावटी जिंदगी सॅऽ विरक्ति केर आवेग'' । एहि आवेग मे बहि कऽ पहुँचि गेलीह अभि बाबू सॅऽ समस्या केर हल खोज' हेतु आग्रह करऽ । पश्चाताप केर नोर मुख मंडल पर छलकि कऽ कमल पर पहिल ओस केर बूंद सदृष्य चित्र उपस्थित कऽ रहल छल । समाचार ज्ञात भेला उपरांत अभि बाबू मर्माहत भऽ जायत छथि । रूआंसा भऽ स्तब्धता भंग करैत एतबा कहैत छथि – ''हम हीरा के कतेक बेरि कहने छलियनि, नहि पड़ू एहि व्यर्थ केर प्रपंचना मे । सादा आओर तनावमुक्त जीवन केऽ राह पकड़ि लिअ'' ।

..... खैर, जाय दिअ – जे भेल, आब आगू सब के सम्हारि कऽ चलू । हीरा केऽ अग्रिम बेल हेतु पैरवी मे कोनो कसर नहि रहत ।

सुलेखा दूनू मॉ–बेटा केऽ सहारा दऽ आग्रह करैत छथि – जा धरि हीरा बाबू नहि अओताह अहॉ सब एतय सॅऽ नहि जा सकैत छी । बेचारी माया एखन धरि ओना स्वच्छ आ निर्मल भऽ गेल छलीह

जेना कोनो डबरा विशाल नदी सॅऽ मिलि निर्मल भऽ जायत अछि । आग्रह सहर्ष स्वीकार कर’ क्षण मन मे भाव उठलनि – समाज मे प्रतिस्पर्धा ओतेक नहि अछि जतेक हमर मन आ अहं मे व्याप्त रहैत अछि । आई जखन वास्वविक परिस्थिति लऽ ओ समाजक समक्ष ठाढ़ छलीह तखन जे निश्चिंतता, जे प्राकृतिकता आ जे शांति केर अनुभव ओ कऽ रहल छलीह से आई धरि नहि कयने छलीह ।

११

थुथमा साहेब केर अग्रिम जमानत अर्जी बहुत मुश्किल सॅऽ स्वीकृत भेलनि । शर्त्त राखल गेल जे ओ पुलिस जांच मे हर संभव सहयोग करताह । नामी क्रिमिनल वकील श्री आर.पी. सिंह, अभि बाबू केर विशेष आग्रह पर स्वयं उपस्थित भेल छलाह । अभि बाबू केऽ ज्ञात छलनि जे कऐक बेरि नामी चेहरा अगर केस केऽ पैरवी करैछ तऽ ओकर प्रभाव अलग रहैत अछि । माया अत्यंत कृतज्ञता व्यक्त करैत भागि कऽ घर पहुँचलीह, जे ओ स्वयं कोन मुँह लऽ एतऽ हाजिर होयताह । थुथमा साहेब पांच–सात दिन सॅऽ फटेहाल दर–ब–दर भागितॅहि छलाह । मन पर एहि घटना केऽ गंभीर प्रभाव पड़लनि । आब मतसून किछु भऽ गेलाह । भोजन भेटल तऽ खा लेब नहि तऽ शिकायत नहि । किछु कहि दिऔन प्रतिरोध नहि । हिनक हाल ओहि व्यक्ति सन भऽ गेल रहनि जे शेर सॅऽ बॉचऽ हेतु भागैत–भागैत हताश भऽ समर्पण कऽ दैत अछि । दबाव देला सॅऽ शांत भावें आफिस जायब शुरू कयलनि । निश्चित समय पर वापस घर । ईएह हिनक दिनचर्या निर्धारित भऽ कऽ रहि गेलनि । बीच–बीच मे थाना सॅऽ बुलावा अयला पर जा कऽ हाजिरी दर्ज कऽ अबैत छलाह । किछु मास तदनुसार बीतल ।

नवरात्रि के महीना प्रारंभ भऽ चुकल छल । अभि बाबू भगवत्ती के सुमिरन करैत मोमिनपुर पहुँचि गेलाह । रायजी के बारम्बार कष्ट देब अनावश्यक छल । पुनः कार्य तऽ भगतजीए केऽ कर’ केऽ छल, किएक आन के कष्ट देल जाय ? भगतजी एक अति सामान्य व्यक्ति

छलाह । आमदनी बड़ कम आ एक विशाल परिवार केऽ पालन हिनक जिम्मा छलनि । भगतई सॅऽ किछु विशेष आमदनी नहि होइत छलनि, साइकिल पर घूमि कऽ कपड़ा बेचि गुजन–बसर करैत छलाह । अभि बाबू के स्वागत मे आंगन मे चौकी पर चादर बिछाओल गेल । बालक दौड़ि कऽ लोटा मे पानि अनलक । स्कूल पर सरकारी–कऽल गड़ाओल गेल छलैक, ओतहि स्नान आदि सॅऽ निवृत भऽ ब्रह्म स्थान पर आबि कर–जोड़ि कष्ट–निवारण हेतु याचना करि आसन ग्रहण कयलनि । भगतजी सेहो नहा–धो कऽ स्थान पर पहुँचि जायत छथि । साथ मे दू गोटा सहयोगी छनि । धूनि रमाओल गेल – धूप, अक्षत, अगरबत्ती सॅऽ ''ब्रह्मबाबा'' के याचना प्रारंभ भेल । सहयोगी जन पचरा गाबि अदृश्य तत्व के सोझा अयबाक' ललकार देब' लगलनि । साथहि बाबा केऽ शरण ग्रहण करऽ हेतु निमंत्रण जारी छल । किछु समय बीतला पर अभि बाबू केऽ पेट फूलि डकार अनवरत प्रारंभ भऽ जात छनि । लगातार घंटो तक प्रयास भेल । एतबा मे अपस्यांत भऽ उल्टी द्वारा पानि बाहर होयत छनि फलस्वरूप चक्कर आबि गेलनि । मौका देखि भगतजी पुनः ललकारैत कहैत छथि – ''ब्रह्मबाबा के जयकार करी । एहॉ से बचि के केहू ना जा सकेला'' । राऊर उद्धार हो जाई –देखी कैसन पवित्र जगह बा । ब्रह्मबाबा के संगे रहम तऽ राऊरो पूजा होई'' ।

अभि बाबू : (ब्रह्मबाबा के जयकार करैत) ठीक बा, हमरा स्वीकार बाटे ।

भगतजी दू–चारि कसम दऽ निहुछि कऽ अक्षत ब्रह्मबाबा के सोझा राखि उठऽ लेल कहैत छथि । उठि कऽ टहलऽ लेल जायत छथि जे बेचैनी कम हुए । मन कनेक हल्लुक बुझना गेलनि । एखन धरि लोक सभक भीड़ करमान लागि गेल छल । आई–काल्हि

हताश–परेशान लोकक कोनो कमी छैक ? लोक सभ के छॅटि गेला पर भगतजी केऽ आग्रह कयलनि जे एक बेरि जॉच कऽ लिअ जे कोनो दिक्कत नहि अछि । भगतजी संध्याकाल पुनः कार्य सम्पन्न करबा केऽ आश्वासन दैत छथि ।

दोपहर के भोजन बहुत आदर सॅऽ अभि बाबू के पड़ोसल गेल । विपन्न रहला बावजूद अतिथि सत्कार हेतु प्रयास सराहनीय छल । थारी मे तरीका सॅऽ भात–दालि आ हिनका हेतु खास बनाओल गेल भुजिया ग्रहण कऽ अभि बाबू अनुग्रहीत छलाह । हिचकिचाहट तऽ भेल छलनि जे अपन काज सॅऽ आयल छी, भार हिनक किएक बढ़ाएब, मुदा एतेक बज्र देहात मे होटल–ढ़ाबा नहि भेट सकैत छलनि । अतः भगतजी के आग्रह स्वीकार कऽ रात्रि–विश्राम तय भेल । रात्रि मे पुनः प्रयास जारी भेल । सब प्रक्रिया फेर सॅऽ दोहरायल गेल । आ भगतजी घोषणा कयलनि जे दू टा चोर छल जे काबू भेल ।

अभि बाबू अत्यंत प्रसन्न भऽ भगतजी केर प्रणाम करि भरपूर दान–दक्षिणा दऽ वापस होमऽ चाहैत छथि, मुदा रात्रि भोजन बाद पुनः डकार आ नींद मे विचित्र स्वप्न प्रकट भेलनि तऽ हताश भऽ भगतजी केऽ कहलनि । आब ओ बेचारे किंकर्त्तव्यविमूढ़ भऽ गेलाह । कहैत छथि जे मुख्य ब्रह्म स्थान बलिया सॅऽ पंद्रह कोस उत्तर अछि, चलऽ पड़त । बहुत गंभीर तरीका सॅऽ किरदानी भेल अछि जे आराम नहि भऽ सकय, मुदा बह्मस्थान पर गेला सॅऽ कोनो प्रकारक विकार दूर होयत । प्रातः काल सब विदा होयत छथि । मुख्य ब्रह्मस्थान आबैत–आबैत सांझ भऽ गेलनि । मंदिर पर टेन्ट सब लागल छल जतय लोक रात्रि विश्राम कऽ सकय । नवरात्रि मे एहिठाम भारी भीड़ रहैत अछि । तात्कालिक भोजनालय इत्यादि

लागि गेला सॅऽ होटल वा विश्रामालय केर कमी नहि खलैत अछि । कऐक ठाम चापाकल गाड़ल गेल अछि । कतहुँ नहा–धो लिअ, भोजनालय मे बिछा कऽ सूतऽ हेतु जगह भेटि जायत । चारू कात ओझा–गुणी सब पीड़ित केऽ सेवा मे प्रयत्नशील छथि । एहि ठाम विभिन्न प्रकारक विकार हेतु अलग–अलग स्थान अछि । कहल जाइत अछि जेहन विकार अछि ओहि स्थान पर प्रयत्न कयला सॅऽ छुटकारा भेटत । पूर्ण मनोयोग सॅऽ ब्रह्म बाबा केऽ अराधना भेल, दू दिन तक विभिन्न स्थान पर प्रयास कयल गेल । कहल गेलनि एक टा विकट दुष्ट बॉचल छल जाहि सॅऽ मुक्त भेलहूँ । दान–दक्षिणा दऽ प्रसन्नचित्त अभि बाबू वापस अयलाह । किछु दिन तक आराम बुझना गेलनि मुदा आठ–दस दिन बाद फेर ओएह परेशानी । हिनक आकलन छलनि जे एकर बावजूद अब कष्टक आवेग बड़ कम अछि । फलतः निष्कर्ष निकाललनि जे भऽ सकैत अछि किछु अवांछनीय तत्व आओर रहि गेल होयत । भगतजी एहि बेरि असमर्थता व्यक्त करैत कोनो सिद्ध व्यक्ति सॅऽ संपर्क करबा के सलाह देलनि कारण ब्रह्म स्थान सॅऽ छूटि सकऽ बला तत्व एहन–ओहन नहि भऽ सकैत अछि । अभि बाबू केर हालत दलदल मे धॅसल ओहि व्यक्ति समान भऽ गेलनि जे निकलअ हेतु जतेक हाथ–पैर मारैत अछि ओहि मे आओर धॅसल जायत अछि । ''व्यक्ति कतेक प्रतुद्ध किएक नहि होथु सफलता तखन भेटि सकैत अछि जखन कएल गेल प्रयास सार्थक दिशा मे होए'' ।

अभि बाबू के संग–संग व्यथित भेल रहथि जगलाल राय आ हुनक धर्मपत्नी । राय जी सांत्वना दैत कहैत छथि – अहां चिंता जुनि करू । हम आ हमर परिवार एहि तरहक उपद्रव सॅऽ जतेक कष्ट उठौलहुँ अछि ततेक अहॉं नहि । एहि लाइन मे जतेक मार'

बला अछि ओतेक सम्हार' बला सेहो । हमर एकटा फरीक अछि – ओ बंगाल सॅऽ मार–सम्हारि सीखने छथि । एक समय छल गाम मे सब केओ हिनक विद्या के शिकार छल । आब उमिर भेला पर सुधरि गेल छथि । अहॉं के बारे मे हम बड़ नेहोरा केलियनि तऽ मानि गेलाह अन्यथा ओ परोपकार मे नहि रहैत छथि । अत्यंत कृतज्ञ भाव सॅऽ ओ रायजी के तरफ देखैत छथि । मन मे ईश्वर के लीला पर आश्चर्य भेलनि । अपन सहोदर दुश्मन भऽ गेल आ आन सहोदर सॅऽ बढ़ि कऽ । आई ओ अपन परिवार केऽ एक सदस्यक कमी सॅऽ उबरि रहल छलाह ।

एक बेरि पुनः उचित समय देखि रायजी हिनका साथ कऽ अपन गाम पहुँचि जायत छथि । फरीक जीबछ राय सॅऽ रायजी के रिस्ता नीक नहि छलनि । साहेब केर कार्य सिद्धि हेतु ओ जीबछ राय के हाथ–पैर जोड़ि नेहोरा कऽ मनौअने रहथि । आग्रह प्राप्त भेला पर हाथ मे लाठी टेकैत एक अंत्यंन्त वृद्ध व्यक्ति हाजिर होयत छथि । प्रारंभिक जॉच–पड़ताल पश्चात रात्रि काल कारवाई करऽ हेतु तय भेल । किछु आवश्यक सामान उपलब्ध करऽ हेतु हिदायत दऽ कार्य सम्पन्न होयबाक आश्वासन दैत छथि । निर्धारित समय पर पूजा–पाठ कऽ ओ अपन दाव–पेंच प्रारम्भ कयलनि । अभि बाबू केऽ पेट फूलऽ लगैत छनि, डकार संग दू–तीन बेरि उल्टी भेला सॅऽ अपस्यांत भऽ जायत छथि । एहि क्रम मे जीबछ राय अदृश्य शक्ति सॅऽ करार कराबैत छथि । अक्षत के मंत्र पढ़ि बोतल मे बंद कऽ मुर्दघट्टी मे गाड़' हेतु रायजी संग प्रस्थान करैत छथि । वापस आबि नहा–धो कऽ विकट सर्दी मे थर–थर कांपैत रायजी पूछैत छथि जे आब कोना महसूस करैत छी । अभि बाबू कहैत छथि जे पहिने सॅऽ तऽ बड़ हल्लुक अछि मुदा कएक बेरि पहिने सेहो ठीक भऽ एक–आध

दिन मे वापस भऽ जायत अछि तऽ निष्कर्षतः काल्हि–परसों कहि सकब । रात्रि विश्राम समय ओ पुनः अनुभव करैत छथि जे अंट–संट स्वप्न सॅऽ नींद मे विघ्न जारी अछि । पेट फूलब सेहो कमोबेश जारी छल । खिन्न भऽ ओ रायजी के चिंता सॅऽ अवगत कराबैत छथि । जीबछ राय पुनः पूजा–आराधना कऽ पता कयलनि जे एखनहुँ एकटा तत्व जे सबहक आगॉ छल विद्यमान अछि । पुनः जोर लगाओल मुदा असफलता हाथ लगलनि । एकटा ताबीज बना कऽ देल गेल, कहल गेल जे ई ओहि तत्व केऽ बस नहि चलऽ देत, किछु मास बाद ओ काबू भऽ जायत ।

एहि तरहें अनेकानेक प्रयास विफल भेला उपरांत अभि बाबू केर हिम्मत आब जवाब दऽ रहल छलनि । हर बेरि हिनका एहसास होइत छनि जे किछु आराम भेल मुदा समस्या केर पूर्ण अंत एखन धरि नदारद रहनि । हिनक मस्तिष्क मे एक गंभीर द्वन्द चलि रहल छलनि । एक अपन कष्ट केर निवारण हेतु प्रण छलनि दोसर मनुष्य जे एहि तरहक पाप अन्य मनुष्य हेतु करैत अछि, ओकर प्रति घृणा । ओ अपन निष्कर्ष पर अटल छलाह जे हमर कष्टक कारण स्वाभाविक नहि हमर भाई–भावज केर दुष्टता केर परिणाम थिक । कष्टक निवारण मे जतेक विघ्न आ देरि होईत छलनि अपन खून केर प्रति घृणा के भाव ओतेक प्रबल । वापस आबि सुलेखा सॅऽ कहैत छथि – आब लगैत अछि पाप के जीत भेल । कलियुग मे भगवान सॅऽ बेसी शैतानक पूजा करऽ बला फल–फूलि रहल अछि । दुःख अपन कष्ट सॅऽ बेसी ओकर कारण सॅऽ अछि । पापक समृद्धि हम जीबैत बर्दास्त नहि कऽ सकैत छी और नै पाप के स्वीकार । जा धरि एहि पाप के घड़ा फोड़ि नहि देब, दम नहि लऽ सकैत छी । पाप छोड़ि पुण्य के तरफ हिनका मोड़ि देब हमर वास्तविक प्रतिशोध होयत

।

सुलेखा : अहाँ जरूर सफल होयब, चिंता त्यागि दिअ । अहाँक स्वास्थ्य मे सुधार सेहो परिलक्षित भेल अछि । दुष्ट के ओकर हाल पर छोड़ि दिअ, अपन समस्या के निवारण तक प्रयत्नशील रहूँ ।

अभि बाबू : प्रयत्न तऽ जारी अछिए । एतहि अगर चुप भऽ जाय तऽ ओहि पापी आ दुष्ट के ओकर पाप केर एहसास कोना होयत ? अक्सर यैह तऽ होयत अछि लोक अपन रास्ता भरि निकालि लैत अछि, बांकी के पुछैय । दुष्ट के ओकर दुष्टता केर जखन एहसास भऽ जायत तऽ ओ अवश्य सुधरि जायत । योनि तऽ मनुष्ये के छैक, राक्षस के नहि । अतः हमरा पूर्ण विश्वास अछि, अगर प्रयास कयल जाय तऽ ओ परोपकारी मानव मे परिवर्तित भऽ सकैत अछि ।

सुलेखा : अहाँ नहि बुझैत छियैक । चोर चोरी सँऽ जा सकैत अछि, हेराफेरी सँऽ नहि । हम कतेक बेरि कहि चुकल छी – सबहक ठेका नहि लिअ । अहाँ एकसर छी, एहि प्रपंच मे अहाँ साथ के आगाँ अयलाह ? जनितो–बुझितो सब अपन–अपन कथा–कहानी मे लागल छथि ।

अभि बाबू : यैह तऽ त्रासदी थिक । हम एहि तरहक आचरण बला परिवार नहि स्वीकार कऽ सकैत छी । जखन तक समस्या केऽ मूल पर चोट नहि होयत, समाधान असंभव अछि । परिवार मे व्याप्त स्वार्थ, ईर्श्या, द्वेष ओ अनैतिकता केऽ समाप्त कऽ, पारिवारिक स्नेह ओ एकता कायम कर' हेतु कोनो कसर नहि छोड़ब । स्वच्छ राजनीति के प्रारंभ हम अपनहि घर सँऽ करब । हम गाम जा कऽ भूख हड़ताल करब जा धरि दोषी व्यक्ति के स्वयं पश्चाताप नहि भऽ जाय, हम अनशन जारी राखब ।

सुलेखा : ई तऽ अति नेक विचार अछि । पारिवारिक सामन्जस्य

स्थापित भऽ जाय एहि सँऽ बेस आर की होयत । परञ्च, अहां अपन हृदय सँऽ सोचि रहल छी । जे व्यक्ति अहां के तबाह करऽ मे आनंद प्राप्त करैत छथि ओ किएक पश्चाताप करऽ लगलाह ?

अभि बाबू : सुधार नहि होयत, ई मानि कऽ सुधावादी आंदोलन नहि चलाओल जाय से कोना होयत ?

सुलेखा : ईमानदार प्रयास अवश्य कारगर सिद्ध होयत अछि । मुदा, अहां ओतय लोक समय परिवर्त्तनक संग संवेदना मे सेहो परिवर्त्तन कऽ नेने छथि, आ अहां ओतहि ठाढ़ छी, जतय बीस बरस पहिने छलहुँ ।

अभि बाबू : समय संगे संबंध तऽ आओर प्रगाढ़ होयबाक चाही । एहि विरोधाभाष पर विराम अवश्य लागत । उचित प्रयास जरूरी अछि ।

..... एम्हर माया बड़ चिंतित छथि । हीराबाबू केऽ केस के सुनवाई प्रारंभ भऽ गेल अछि । अभि बाबू सँऽ कहैत छथि – नीक जकाँ पैरवी सुनिश्चित कऽ दियौन ।

अभि बाबू : बड़ बेस, जतेक भऽ सकैत अछि जरूर कयल जायत । बांकी सब न्यायालय के काज अछि । हम एखन सिंहजी के याद दिआ दैत छियनि ।

हीराबाबू केस के अधिवक्ता श्री आर.पी. सिंह सँऽ फोन पर आग्रह करैत अभिबाबू कहैत छथि जे आम चुनाव नजदीक रहला कारण हम बड़ व्यस्त रहब, अहां केस पर पर्याप्त ध्यान देबैक । सिंह जी प्रत्युत्तर मे कहैत छथि जे एक आध बिंदु पर हम पिछड़ि रहल छी, खास कऽ फर्जी दस्तावेज सँऽ संबंधित मुद्दा पर, अन्यथा केस मे कोनो आओर मुश्किल नहिं अछि । परञ्च, हर संभव प्रयास अछि जे अवांछनीय परिस्थिति नहि उपस्थित होय । केस आब बहस पर

लागि गेल अछि, उम्मीद अछि अगिला सप्ताह तक फैसला भऽ जायत ।

.....

१२

राजनीतिक गहमा–गहमी मे चर्चा छल जे 'जनाधार पार्टी' सॅऽ टिकट निश्चित रूप सॅऽ अभि बाबू के भेटत । पार्टी मे विरोधी स्वर सेहो प्रबल भऽ रहल छल । वरिष्ठ नेतागण क्षुब्ध छलाह जे हम एतेक सीनियर छी, पार्टी हेतु अनवरत परिश्रम कयने छी, मुदा फसल काटऽ काल पैराशुट प्रत्यासी आनल जा रहल अछि । हम अपन सदस्यता सॅऽ त्यागपत्र दऽ देब । अपन हजारों समर्थक केऽ संग श्री नृत्य गोपाल यादव पार्टी कार्यालय पर धरना पर बैसि गेलाह । पार्टी प्रबंधन अत्यंत पेशोपेश मे पड़ि गेल छल, अगर श्री यादव के खिलाफ कारवाई होयत तऽ बहुसंख्यक यादव वर्गक संग–संग कऐक पिछड़ा वर्ग सेहो नाराज होयत, जे पार्टी हित मे नहि अछि । अभि बाबू के अनेकानेक प्रलोभन देल गेल जे – अहां के राज्य–सभा सॅऽ भेजल जायत, अथवा कोनो कमीशन के चेयरमेन बनि जाऊ, नहि होय तऽ पार्टी के प्रवक्ता पद ग्रहण करू आदि–आदि । अभि बाबू पर एहि तरहक दांव–पेंच केर प्रभाव नहि पड़ि सकैत छल । ओ स्वच्छ ओ सोझ राजनीति मे विश्वास करैत छलाह । एहन राजनीति जे जाति, धर्म, अथवा अग्रणी वा पिछड़ा वर्गक गणित पर नहि, सम्पूर्ण मानव जाति केर उत्थान पर आधारित हो । जनसेवा हेतु एहि सॅऽ पैघ अवसर प्राप्त करऽ केर अवसर आओर कोन भऽ सकैत छल, सम्प्रति अभि बाबू पार्टी सॅऽ त्यागपत्र दऽ निर्दलीय चुनाव लड़' के घोषणा कयलनि । 'जनाधार पार्टी' केर उम्मीदवार केऽ रूप मे श्री नृत्य गोपाल यादव प्रत्यासी बनाओल गेलाह । श्री यादव युवावस्था सॅऽ राजनीति मे छलाह । दशवीं बोर्ड मे नकल कर' समय

धरा गेल छलाह तखन सॅऽ पढ़ाई केऽ सदिखन हेतु तिलांजलि दऽ देलनि । आओर कोनो काज नहि छलनि तऽ नेता लोकनि संग लागि गेलाह । स्नैः स्नैः राजनीतिक दांव–पेंच मे माहिर भऽ गेलाह । कऐक बेरि आपराधिक केस मे मुकदमा चललनि मुदा गवाह ओ सबूत केर अभाव मे छूटि गेल छलाह । टिकट हासिल भऽ गेला पर आत्मविश्वास मे अप्रत्यासित वृद्धि भेल छलनि कारण पहिल बेरि कोनो प्रबुद्ध वर्ग पर राजनैतिक विजय भेल छलनि । हालांकि टिकट केर जंग मे जीत के प्रति ओ आश्वस्त नहि छलाह किएक तऽ किछु मास सॅऽ अभि बाबू के प्रसिद्धि अनवरत बढ़ि रहल छल, पार्टी एहि अवस्था मे हुनका छोड़ि सकैत अछि से सोचि लेब मुश्किल छल ।

चुनाव पूर्व अभि बाबू के ग्राफ कऽ खसायब आवश्यक समझि ओ अपन हमला हिनका पर जारी कऽ देलनि । अभि बाबू के भगोड़ा, गैर–अनुशासित, नौसिखिया इत्यादि संबोधित कऽ प्रतियोगिता सॅऽ बाहर करऽ के प्रयास भेल । ओ बुझैत छलाह जे अगर अभि बाबू पर काबू भऽ जाय तऽ जीत सुनिश्चित अछि । अभि बाबू एहि प्रकारक राजनीति सॅऽ पहिले सॅऽ आक्रोशित रहैत छलाह । आजुक राजनीति मे जीतऽ हेतु कार्य आ ईमानदारी पर ध्यान केंद्रित करऽ के बजाय प्रतिद्वंदी के कोनो तरहें अयोग्य साबित करऽ के प्रचलन अछि । अभि बाबू एहि राह के त्यागि जनता के विश्वास ओ आस्था हासिल करऽ तरफ उन्मुख छलाह । प्रत्युत्तर मे घर–घर तक पहुँचाब' हेतु एक जन–संदेश एहि रूप मे तैयार कयलनि :

प्रिय बंधुजन,

हम राजनीति करऽ एहि क्षेत्र मे नहि आयल छी । हम मुख्यतः प्रत्यासी द्वारा हवाई किला बना कऽ जनता सॅऽ वोट केर ठगी आ तदुपरांत ओहि प्रतिनिधि द्वारा साढे चारि

साल तक मौज–मस्ती मे लिप्त भऽ जायब, एहि सँऽ क्षुब्ध छी । जनता केऽ ओ प्रतिनिधि पुनः अंतिम छओ मास मे सुगबुगाइत छथि आ जनता केऽ सोझा सरकारी फंड द्वारा किछु प्रलोभनकारी कार्य के सिर्फ प्रारंभ करि ताल ठाकऽ लागैत छथि जे हम विकास कऽ रहल छी । जनता के सामने एक टुकड़ा फेंकि कऽ चाहैत छथि ओ हिनका आगां नांगरि डोलाबैत रहथु । हम एहि क्रम केऽ तोरऽ चाहैत छी । चुनाव बादो जन–जन केर आत्मसम्मान बरकरार रहय हमर ई प्रयास अछि । एहि हेतु सर्वप्रथम प्रत्यासी केर चुनाव मे सावधानी आवश्यक अछि, किएक तऽ बिल्ली सँऽ दूध केर रखवाली करऽ हेतु नहि कहल जा सकैत अछि । हम चाहैत छी जे अहां सब एहि बेरि सँऽ ओ प्रत्यासी के विजय घोषित करी जे सिर्फ छओ मास नहि बल्कि सम्पूर्ण पांच साल तक अहां सबहक सेवा मे समर्पित रहथु । जन–जन केर सुःख–दुःख मे भागीदार बनि अत्याचारक’ खिलाफ आगां आबि जनता के रक्षा मे समर्पित रहथु ।

ई बात सच अछि कि हर चमकऽ बला चीज सोना नहि होयत अछि मुदा इहो सत्य अदि जे सोना अपन चमक बरकरार रखैत अछि । अहां सब अगर एहन प्रतिनिधि चुनि जे जाति, धर्म आ क्षेत्रवाद सँऽ ऊपर उठि हर व्यक्ति केऽ एक समान मनुष्य समझि सकय तहन सही अर्थ मे अहां के वोट सकारथ होयत । हम सिर्फ अपने हेतु नहि, अपितु अपील करैत छी जे उपर्युक्त कसौटी पर खरा उतरऽ बला प्रत्यासी के हर क्षेत्र सँऽ विजय बनाऊ चाहे ओ कोनो दल सँऽ सम्बद्ध होथु वा नहि । जाहि दिन देश मे एहन प्रतिनिधि

बेसी संख्या मे सदन मे एकत्र भऽ जयताह, देशक कायाकल्प निश्चित अछि । अतः अहां सब सॅऽ आग्रह अछि एहि बेरि हमरो पर रिस्क लऽ लिअ, निराश नहि होमअ पड़त ।

अपन संदेश घर–घर पहुँचाब' हेतु 10–15 लोक केऽ टोली बनौलनि । निर्धारित कयलनि जे प्रत्येक घर तक पहुँचि स्वयं अपन बात राखल जाय । लक्ष्य छल ''हर एक घर –प्रत्येक वोटर'' । भोर सॅऽ सांझ धरि अनवरत संपर्क अभियान चलल । कर्मचारी वर्ग सॅऽ विशेष आग्रह करैत कहैत छथि – हम अहॉ सभहक प्रतिनिधि बनि संसद मे जाय चाहैत छी । एहन प्रतिनिधि जे सरकार द्वारा

एहि वर्ग प्रति भऽ रहल मनमानी के विरूद्ध आवाज उठा सकय । एक एहन व्यक्ति संसद मे खोजि दिअ जे कर्मचारी वर्गक आवाज केऽ सुनऽ केर कष्ट करैत हो । कर्मचारी वर्ग सॅऽ संम्बद्ध रहला सॅऽ हम एहि वर्गक हमदर्द बनऽ के दावा कऽ रहल छी । राजनीति सॅऽ उदासीन रहऽ के प्रतिबद्धता कारण एहि क्षेत्र मे कर्मचारी वर्गक भागीदारी शून्य रहैत अछि, मुदा राजनीति समाजक हर क्षेत्र के प्रभावित करैत अछि ।

स्वाभाविक रूपे अभि बाबू केर समर्थन मे कर्मचारी वर्गक उत्साह अभूतपूर्व छल । सामाजिक क्षेत्र सॅऽ जुड़ल रहला कारण अपन क्षेत्रक हेतु ओ नव व्यक्ति नहि छलाह । लोक हिनका एक ईमानदार आओर संवेदनशील व्यक्ति के रूप मे जानैत छनि । ओम्हर यादवजी केऽ पकड़ कुछ निश्चित वर्ग तक सीमीत छलनि । ओ अपन जातीय समीकरण एवं किछु विशेष वर्गक सहानुभूति प्राप्त होयबाक कारण जीत प्राप्त करऽ के दावा करैत छलाह । हिनकर पार्टी पिछला बेरि सरकार नहि बना सकल छल मुदा ओ अपन सीट बचाब' मे कामयाब भऽ गेल छलाह । परञ्च, एहि बेरि अभिबाबू के ''हर एक घर–प्रत्येक वोटर'' अभियान सॅऽ ओ भीतर सॅऽ कांपि गेल छलाह । आब ओहन समय नहि छल जे बूथ कैप्चरिंग वा वोअर के डरा–धमका कऽ जीत सुनिश्चित कयल जाय । फलतः पाछां कऐक मास सॅऽ शरीफ व्यक्ति जकां वर्त्ताव करब हिनक मजबूरी छलनि । भीतरे–भीतर ओहो अपन साम–दाम–दण्ड–भेद इस्तेमाल करब शुरू कयलनि । पिछड़ल वर्ग के आह्वान कयलनि जे हमर जीत समाज मे वास्तविक बदलाव आनत । सदिकाल सॅऽ शोषित व्यक्ति के अधिकार आब केओ नहि लऽ सकैत अछि । अपना के सम्पूर्ण दलित ओ शोषित वर्गक एकमात्र उद्धारकर्त्ता बना कऽ पेश

कयलनि । एहन बात नहि अछि जे एहि तरहक काट–छांटक राजनीति बिल्कुल निष्फल होयत अछि, अनपढ़ आ गरीब व्यक्ति कायाकल्प के मायाजाल मे फॅसि कऐक बेरि, झांसा मे आबि जायत छथि । यादवजी एहि कमजोरी के भुनाब' मे लागल छथि, बेशक एहि बात के उत्तर नहि छनि जे पिछला पांच साल मे कतेक दलित आ शोषित व्यक्ति के उत्थान करौलिए ।

दिन भरि केऽ दौरा कऽ वापस आबि डांड़ सोझ करऽ हेतु अभि बाबू बिछाओन पर ओठंगि गेलाह । रात्रि के आठ बाजि चुकल छल । पेट फूलि गेला कारण अत्यंत विचलित रहथि । एतबा मे सिंह जी के फोन अबैत छनि – ''हीराबाबू के केस मे निर्णय आबि गेल । हम बड़ जिरह कयलहुँ मुदा एक मासक कारावास लागि गेलनि । फर्जी दस्तावेजक साक्ष्य सिद्ध भऽ गेला केऽ परिप्रेक्ष्य मे सजा कम भेलनि यैह एक उपलब्धि अछि अन्यथा छओ मासक सजा तऽ आम बात छल'' । समाचार सुनि मन आओर व्यथित भऽ गेललि । अंदेशा तऽ एहि बात के छलनि परञ्च की कयल जा सकैत अछि – परिवार के प्रति सहानुभूति आ सहारा प्रदान करियौन, सुलेखा के सांत्वना दैत कहैत छथि ।

सजा निर्धारित भेला उपरांत थुथमा साहेब वकील सॅऽ सलाह कऽ आत्मसमर्पण कऽ दैत छथि । आजुक दिन ओ एतेक विचलित नहि छथि जतेक बेल केर प्रतीक्षा मे भेल छलाह । ओहि पांच–सात दिन मे हिनक सब बनावटी आवरण छॅटि गेल छलनि । सब केओ सब किछु जानि चुकल छल तऽ आब कोन प्रतिष्ठा, कोन प्रतियोगिता, केहन दिखावा, केहन लोक–लाज ? आब प्रकृति प्रदत्त ज्ञान केर छिपल आवरण ओहि तरह प्रकट भऽ रहल छलनि जेना जंग हटि गेला सॅऽ लोहा चमकि उठैत अछि । मन मे शांति ओ

संतुष्टि केऽ भाव उत्पन्न भेला सॅऽ बड़ आफियत भऽ रहल छलनि ।

गायत्री देवी जहन समाचार सॅऽ अवगत भेलीह जे हीरा के एक मासक जेल भेऽ गेलैक तऽ हाहाकार कऽ उठलीह । अभि बाबू के ज्ञात भेलनि जे ओ बिछाओन धऽ लेलीह तऽ योगमाया के साथ लऽ पॉकिपुर पहुँचैत छथि । बचपन सॅऽ गायत्री देवी हिनका बड़ मानैत रहथिन । एक बेरि खेत मे घुसि मटर चोरा कऽ खाइत पकड़ल गेलाह तऽ बांकी बालक सब के मारि पड़लैक । हीरा के बाल–सखा जानि अभिमन्यु के कहलनि – बा ऊ, अहां जखन मन हुए, भरि पेट खा लेल करू, अहां केऽ अपने खेत छी । दिन भरि अभिमन्यु हीरा संगे हुनके घर पर विचरण करैत रहितथि जा धरि बुलावा नहि अबितनि । एहि प्रकरण मे काकी सॅऽ बड़ स्नेह भऽ गेलनि । बाद मे अभि बाबू के पिता शहर मे बसि गेलाह तऽ बचपन केर कहानी केऽ पटाक्षेप भऽ गेल । सालों बाद आई काकी सॅऽ भेंट भेल छलनि, देखि कऽ ऑखि सॅऽ नोर बहऽ लगलनि । कहैत छथि – अहॉ के रहैत ई कोना भेल ? बौआ के किएक नहि राह देखौलिएक, जे गलत राह धएलक । आब एक मास कोना रहताह जेल मे । भोजन मे कनेको कमी रहि गेला सॅऽ पेट भरि नहि खा सकैत छथि – हे भगवत्ती, रक्षा करब हमर कोख के ! नहि तऽ हमर प्राण लऽ लिअ । अभि बाबू ढ़ाढ़स बंधाबैत छथि – जल्दी कटि जायत । ओ आब सुधरि गेल छथि, आब देखब कतेक आगां जयताह । सबहक दिन फिरैत छैक ।

राधाकांत कानैत–कानैत बेहाल छलाह । भौजी सॅऽ कहैत छथि – ''हमरा लऽ चलु, भैया सॅऽ भेंट करऽ के मोन करैत अछि । दोकान एक मास बंद रहतैक तऽ कोनो आफत नहि अबैत अछि'' । योगमाया, दीयर के सम्हारैत संग चलबाक सहमति दैत कहैत छथि

– अहां नहि चलब तऽ हम कोना एकसर एतेक बोझ माथ पर बर्दास्त करब ?

अंततः राधाकांत दूनू प्राणी माताजी समेत दिल्ली चलबाक तैयारी कयलनि । एहि आपाधापी मे कियो पाछां रह' हेतु तैयार नहि भेलथि ।

अपन तीन दिनक प्रवास मे थुथमा साहेब के पारिवारिक स्नेह, एकता आओर प्यार देखि मन भरि अयलनि । अपन गढ़ल विपत्ती बावजूद परिवार आइ हीरा के संग एकजुट अछि । केओ ई अन्वेंशन नहि कऽ रहल अछि जे ई परिस्थिति कोना आयल, सबहक चिंता एक अछि – ओ कोना सकुशल वापस अयताह । थुथमा साहेब कतेक भाग्यशाली छथि, एतय आबि पता लगलनि । परिवार के जाहि परिभाषा हिनक मन–मस्तिष्क मे छलनि एतय साक्षात पाबि ऑखि श्रद्धा सॅऽ डबडबा गेलनि । सोचऽ लागैत छथि – परिवारक एक सदस्य अगर अप्रत्याशित प्रगति करऽ लगैत अछि तऽ यैह परिवार किएक सब प्रेम, स्नेह इत्यादि बिसरि ओकर अनिष्ट तक सोच' लागैत अछि ? कि ओहि सदस्य द्वारा ई एक अपराध थिक जकर कोनों माफी नहि छैक ? पारिवारिक प्रेम ओ एकता के सीमा ओतय तक निर्धारित अछि जतय तक सभहक जीवन स्तर कमोवेश समान हो । नहिं, नहिं ई प्रेम के सीमा नहि भऽ सकैत अछि, ई तऽ मनुष्य केऽ नीचता थिक, ओछापन थिक, स्वार्थ केर पराकाष्ठा थिक । हमर अपन परिवार मे एहन क्षुद्रता – हम एहि मे परिमार्जन कऽ के रहब । एक दिन लोक के अपन ओछापन केर एहसास जरूर होयतनि आ पुनः एकजुट भऽ वास्तविक परिवार के तत्व उत्पन्न अवश्य होयत ।

.....

१३

आम चुनाव मे मात्र पंद्रह दिन रहि गेल अछि । प्रत्येक उम्मीदवार पद–यात्रा, भाषण, मीटिंग आ विभिन्न प्रकारक वोट लुभावन कार्यक्रम मे लागल छथि । यादवजी अपन प्रारंभिक तैयारी पूर्ण कऽ चुकल छथि, इंतजार छनि तऽ अंतिम क्षणक गैर–कानूनी परञ्च फलदायी तरीका केऽ जाहि सॅऽ गरीब, दलित, शोषित वर्ग के अपना तरफ मोड़ल जा सकय । पाछां तीन बेरि सॅऽ एहि पर अमल कऽ ओ विजयी भेल छथि । ई कहब तऽ मुश्किल अछि जे ओ एहि तरीका के प्रयोग नहि करितथि तऽ जीत भेटल रहितनि कि नहि, मुदा एतेक पैघ प्रयोजन मे ओ कोनो रिस्क लेबाक पक्ष मे नहि रहैत छथि । आखिर लोकतंत्र थिक । एहि मे जतेक बेसी लोक अहांक नाम लिए ओतेक नीक । लोक अहींक नाम किएक लेत ? अहां समर्थ छी तऽ लोक हेतु दसो–पांच दिन भंडारा नहि कऽ सकैत छी ? सोम–रस जकर सेवन देवता धरि करैत छथि, ओकर व्यवस्था पांच साल मे एको बेरि क्षेत्रक गरीब आ दुखियारी जनता हेतु नहि कऽ सकैत छी ? थर–थर कांपैत पटरी सेवक सभक हेतु किछु कंबल बॉटि देलियैक तऽ कोन अपराध ? एक तरफ बोरा भरल रोकड़ जमा अछि, किछु निकलि कऽ जरूरतमंद बीच बॉटि देल गेलैक तऽ केहन अपराध ? नीक कार्य सदिखन नीके रहत । डॉक्टर कोनो परिस्थिति मे मरीज केऽ इलाज कऽ सकैत अछि तऽ हम नेतागण सामाजिक बीमारी केऽ इलाज कयलहुँ तऽ परिस्थितिवश अपराध घोषित कयल जायत अछि । दान–धर्म तऽ वेद–शास्त्र आदि मे सेहो पुण्यकर्म कहल जायत अछि । वाह–रे–वाह, हम तऽ कहैत छी जे व्यक्ति एहि हेतु

असमर्थ छथि, स्वयं कंगाल छथि, एहि तरहक कानून लगा केऽ जनता के अहित करि अपन पक्ष मजबूत करऽ के साजिश रचने छथि । विभिन्न तरहक तर्क यादवजी के अधिकतम व्यक्ति द्वारा अपन नाम संस्मरण कराब' हेतु नैतिक अधिकार प्रदान करैत छल ।

अभि बाबू के चर्चा सेहो क्षेत्र मे जोर–शोर सॅऽ छनि । ई रिकार्ड अछि जे आई धरि एहि क्षेत्र सॅऽ कोनो निर्दलीय उम्मीदवार नहि जीतल अछि । यादवजी एहि बात के प्रचार–प्रसार बड़ जोड़ सॅऽ कयलनि । अभि बाबू एखन तक सम्पूर्ण क्षेत्रक दौरा कऽ चुकल छथि । ''हर एक घर – प्रत्येक वोटर'' कार्यक्रम हिट भऽ रहल छल । ओ अपन निर्दलीय उम्मीदवारी के वकालत करैत कहैत छथि – ''मुद्दा दलीय राजनीति के नहि अछि, सिर्फ राजनीति के अछि । स्वच्छ ओ सेवामयी राजनीति केऽ । जन–जन के मान–सम्मानक' रक्षा केऽ अछि । स्वच्छ मन ओ भावना लऽ नागरिक के समक्ष एखन धरि एहि क्षेत्र मे बेहतर विकल्प उपस्थित नहि भेल तऽ कोना विजयी होयतथि ? जतय–जतय सॅऽ बेहतर विकल्प जनता समक्ष उपस्थित होयत ओ अवश्य विजयी कयल जयताह किएक तऽ आब लोक जागृत भऽ चुकल छथि । कोनो दल–विशेष केर ठेका जनता नहि नेने छथि जे जिनका भेलनि उठा कऽ जनता के माथ पर लादि देलनि आ विजयी करबाक हुक्म सुना देलनि । एहि बेरि जनता दलबाजी के बता कऽ छोड़त जे आब अहां जॉचि–परखि कऽ, काज करऽ बला उम्मीदवार पेश करू नहि तऽ दोकान बंद करू । हमर जीत के माध्यम सॅऽ जनता प्रत्येक दल केऽ ई संदेश भेजत । हम सिर्फ एतेक कहि सकैत छी जे अगर हम विजयी भेलहूँ तऽ क्षेत्रक जनता के सेवा मे सदैव अग्रणी रहब, विकास के ओ क्रांति प्रारंभ करब जे आई धरि कोनो विजयी उम्मीदवार एहि क्षेत्र हेतु नहि कयने होयताह'' ।

एखन धरि अभि बाबू प्रभावशाली वक्ता के तौर पर ख्याति पाबि चुकल छलथि । यादवजी कार्यकर्त्ता सब सँऽ कहैत छथि – आब किछुए दिनक बात अछि, हिनका भड़काओल नहि जाय तऽ बेस । जतेक बेसी बजताह, हमर आधार घोसकि जायत । हिनका आर किछु तऽ अबैत नहि छनि –भाषण जतेक लऽ लिअ । लोकक कोन भरोस ? सब सँऽ बेसी दल–बदलू तऽ लोके होईत अछि । कतबो कऽ दिऔक, किछु–न–किछु कमी निकालबे करताह । जनता केऽ जरूरत आ भूतनी के पेट एकसमान होयत अछि – सार, कखनो भरि सकैत अछि । ध्यान राखू ! कोनो मुद्दा नहि दिऔन जाहि पर ओ बयानबाजी कऽ सकैथ ।

एक समर्थक बजलाह – ''सरकार, एखन धरि ओ बड़ बाजि चुकल छथि, बड़ घूमि चुकल छथि । लोको सभ मे उत्साह देखल जा रहल अछि । कोन ठीक, पाईओ बॅटि जाय, आ भोंट हुनका तरफ खसय । किछु उद्योग करऽ पड़त ।

यादवजी : तऽ तोँ कि चाहैत छह ? नदी सँऽ मगर भगाब' कम मे नदीए मे डूबि जाय । आब ओ समय छैक जे राहक कांट के उखारि कऽ कतौ फेंकि दियैक ?

समर्थक : तखन सरकार, दोसर बुद्धि लगाएब उचित ! कोहुना कऽ हिनका बैसा दिऔन तऽ बूझू अहां एखनहि जीत गेलहुँ । नहि तऽ, पंद्रह साल सँऽ चलैत हमरो काज–धंधा चौपट भेल तऽ आश्चर्य नहि ।

यादवजी : (घाम सँऽ भीजल लाल–टीका–युक्त ललाट, ताहि पर फाटल ऑखि सँऽ सोचयुक्त

मुद्रा मे)..... हौ, बुझना जायत अछि एहि बेरि फँसलहुँ । (टीका सँऽ लाल घामक धार कनपट्टी बगल सँऽ बहैत अछि) एकटा

काज करअ, एतेक खर्च तऽ भये गेल अछि, अभिमन्यू के पॉच करोड़ ऑफर करहक जे बैसि जायथ । एतेक पाई एक साथ बिनु कष्टे भेटि जयतनि तऽ किएक राजनीतिक मारामारी करताह । जीत जायब तऽ पॉच के पचास होब' मे देरी लगैत छैक ?

ऑफर भेटला पर अभि बाबू साफ तौर पर नकारि दैत छथि । हिनक प्रतिक्रिया छलनि – हम पाई कमाबऽ राजनीति मे नहि आयल छी । जनता पर केओ गॅवार, नासमझ आ असामाजिक व्यक्ति शासन नहि करय अपितु एक संवेदनशील, परोपकारी ओ प्रबुद्ध वर्गक शासन स्थापित हो, एकर आह्वान करय आयल छी । चाणक्य कहने छथि – ''राजनीति मे हिस्सा न लेने का सबसे बड़ा दंड यह है कि अयोग्य व्यक्ति आप पर शासन करने लगते हैं।'' हम यादवजी केऽ उपरोक्त अर्थ मे नहि लऽ रहल छी । हमर निवेदन जनता सॅऽ अछि जे बेहतर विकल्प के स्वीकार करू । हम अपन उद्देश्य के कोनो कीमत पर नहि छोड़ि सकैत छी । हमर जीवन निःसंदेह आब राजनीति के समर्पित अछि । अहां सॅऽ आग्रह – आब बदलाव आबि गेल अछि, जनता केऽ उम्मीद पर खरा उतरब तहन बेड़ा पार लागत । एहि हेतु हृदय–परिवर्त्तन आवश्यक अछि, एहि दिशा मे काज करू से नीक रहत ।

समर्थक दौरल आबि यादवजी के आगाह करैत छथि – ''सरकार, फेर महाराज हमरा भाषण सुना देलनि । एक पल तऽ हुनक बोल–वचनक छाप हमरो पर पड़ऽ लागल छल, अपना के ओहि तरहें बचा कऽ आनि सकलहुँ जेना कोनो बलात्कारी सॅऽ बचि कऽ युवती भागि जायत अछि'' ।

यादवजी : रौ भैंस, पहेलिए बुझौमअ कि किछु कहमे ।

समर्थक : सरकार, ओ तऽ नैतिकता सॅऽ अत्यंत ओत–प्रोत,

परोपकारी बुझना जायत छथि । जन–आंदोलन ठाढ़ करबाक भूख हिनक ऑखि मे देखि सकैत छी । साफ मना कऽ देलनि जे हमरा – पाई नहि चाहि । जन–सेवा मात्र के अपन धर्म बतौलनि आ कहलनि आजन्म ओहि प्रयास मे लागल रहब ।

यादवजी : आहि–रौ–बा, ई सत्यवादी हरिशचंदर कतऽ सॅऽ बथा गेल ऐन वक्त पर ! एकटा काज करै जाई जाऊ । पूरा पॉच करोड़ समूचा क्षेत्र मे नगद वा आकर्षक गिफ्ट के रूप मे बॅटवा देल जाय । जाहि क्षेत्र मे शंका अछि ओतय कने विशेष ध्यान देबनि । प्रचार–प्रसार दुगना उत्साह सॅऽ जारी रहबाक चाही, बुझना जाय हमर जीत निश्चित अछि, हम तऽ सिर्फ खानापूरी कऽ रहल छी ।

चुनाव आचार–संहिता लागू भऽ गेल छल । ई कहि सदाचारी हेतु आचार–संहिता लागि गेल छल । दुराचारी तऽ आचार–विचार केऽ सीमा सॅऽ स्वच्छंद रहैत छथि । आचार–संहिता हुनके बांन्हि सकैत अछि जे शिष्टाचार जनैत छथि, अन्यथा चोरक लेखे ताला की – बेईमान लेखे केवाला की । राति–दिन, चोरी–छिपे यादवजी के तरफ सॅऽ माल–असबाव बॉटल जा रहल छल । जखन कोनो चीज मुफ्त मे बॉटल जा रहल अछि तऽ नीक–नीक लोक लोभ संवरण नहि कऽ सकैत छथि । अगर कियो जहरो बॉटऽ लागय तऽ भीड़ जुटि जायत कि किनसाइत आत्महत्या करऽ पड़य तऽ कीनअ नहि पड़त । लूटक माल ग्रहण करऽ मे लोकक उत्साह देखि अभि बाबू सेहो किंकर्त्तव्यविमूढ़ भऽ गेलाह, कारण कखन लोकक सहानुभूति दाता केर पक्ष मे परिवर्तित भऽ जाय के जानय ? कतेक ठाम शिकायत दर्ज भेज, छापा पड़ल मुदा ठोस सबूत आ गवाह कतऽ सॅऽ भेटत ? यादवजी केर सभा मे भाड़ा पर सेहो लोक सभ जमा कयल जाइत छल ताकि बुझना जाय हिनक लोकप्रियता बढ़ल

अछि ।

अभि बाबू विचलित नहि भेलाह । ओ तऽ मंजिलक लोभ सॅऽ परे राह तय करऽ मे विश्वास रखैत छथि । जीतक अवस्था होय वा नहि, सम्पूर्ण शक्ति सॅऽ प्रयास हिनक मूल मंत्र छलनि । जखन अहांक मन मे ईमानदारी रहत तऽ मुखमंडल प्रकाशमान आ वचन प्रभावशाली भऽ जायत । जन–जन कॅं अपन उद्देश्य ओ कार्यक्रम बुझाय जनसम्मानक रक्षा ओ विकास हेतु अपन प्रतिबद्धता दोहरौलनि । लोक सभ सॅऽ कहैत छथि – ''एहि परिस्थिति के भॉफि कऽ मतदान गुप्त राखल गेल अछि । अहॉ सब के आगां टुकड़ा फेंकल जा रहल अछि । अगर एहि ठाम चालाकी सॅऽ काज नहि लेब तऽ ओ व्यक्ति एहि बल पर पांच साल तांडव करताह । जतेक खर्च कऽ रहल छथि तकर लाखगुना अवैध तरीका सॅऽ वसूलि लेताह । अहां सबहक भोंट एतेक तुच्छ नहि अछि जे कौड़ी केर कीमत मे खरीदल जा सकय । एकर दाम कौड़ी मे लगाब' बला केऽ बता दिऔन । एहि बेरि कऽ दिऔन कंगाल – जनता के खून–पसीना के कमाई बहुत दिन सॅऽ बटोरने छथि । अगर फेरि जिता देबनि तऽ सबटा लूटि कऽ खा जयताह । एहन लोकक मन मे रहैत अछि जे खर्च अपन घर सॅऽ करब ? लगौने छी, वसूल तऽ करबे करब । चंद रूपया, दारू आ कंबल फेंकि कऽ अहां सबके ओ इज्जत नहि दऽ रहल छथि बल्कि अपमान कऽ रहल छथि । अतः चाहे जतेक माल हाथ आबय भोंट ओहि सहीस के नहि दिअ जे मुट्ठी भरि दाना खुआ कऽ भरि दिन चाबुक सॅऽ वसुल करैत अछि । मतदान गुप्त अछि – फेरि कोन फिकिर'' ।

एहि पोल–खोल अभियान केर प्रभाव जनता पर कतेक पड़ल से तऽ नहि कहि मुदा यादवजी आ हिनक समर्थक व्याकुल भऽ गेलाह

। कनेक काल अगर बिजली गुल भऽ जाय तऽ विवाह निमित्त नख सँऽ शिख तक रंगरोगन सँऽ झांपल कन्या के असलियत खुजऽ मे कतेक काल लगैत अछि ! रंग–रोगन केऽ प्रथा बेशक हवेली सँऽ शुरू भेल हो, फिल्मी परी के द्वारा पसरल हो, आब तऽ ई चोर–उचक्का, तड़ीपार आ ताड़ीपार अथबा एड्स के रोगी तक के विवाहक शोभा बनि गेल । धन्य अछि प्रजातंत्र ! कनिया फिल्मी रूप धरि कऽ नहि बैसतीह तऽ विवाहक कोन मजा । कोन बालक सामान्य कन्या सँऽ विवाह करऽ के स्वप्न चेतन वा अचेतन अवस्था मे देखैत छथि ? ई तऽ कन्यापक्षक महानता थिक जे बेलगोबनो बर हेतु कन्या के रूप मे फिल्मी परी केऽ इंतजाम, कम–सँऽ–कम एक रात्रि हेतु करैत छथि । होस सम्हारताह तऽ गृहस्थ जीवन केऽ चमरछोंच मे एना पड़ताह कि मजाल अछि पड़ा सकैत छथि । दूनू पक्ष मे ई निश्चिंतता फैल जायत अछि जे सिंदुरदान तऽ होभऽ दिअ, महान पेंटरक कारीगरी उतरि कऽ ओहि फिल्मी परी के सामान्य आ प्राकृतिक अवस्था मे आबि गेला सँऽ कोनो कुप्रभाव नहि पड़त । कोना पड़ि सकैत अछि ? तखन तक बरात भागै केऽ डर खत्म । आब बजताह तऽ कहि देबनि लड़को के खून टेस्ट कराऊ । एहन 'टारजन' हेतु कोन लड़की भेटत । हमरा तऽ कने जल्दी छल, नहि तऽ किओ बारातक दरबान मे हिनका नहि घुसऽ देतनि । परञ्च, दूनू पक्षक समान अवस्था भऽ गेला कारण ई स्थिति उत्पन्न नहि होयत अछि ।

कन्या जखन स्वमेव आकर्षक अछि तऽ उपरोक्त स्थिति लागू कम होईत अछि । यादवजी संग पहिल जकां स्थिति छल । रंगरोगन अतिआवश्यक छल । सिंदुरदान केऽ प्रथा राजनीति मे सिर्फ पांच साल हेतु मान्य रहैत अछि । फलतः यादवजी केऽ व्याकुलता

जायज छल । खेमा मे चर्चा उठि गेल जे साँच मे कतहुँ कंगाल ने भऽ जाई । जनम भरि के कमाई लुटा रहल छी, हारि गेलहुँ तऽ 'डगरा के बैंगन' बनि जायब । आब भविष्य हेतु ध्यान खुजलनि । नतीजा गैर कानूनी दान–दक्षिणा मे कमी भेल । अभि बाबू के विश्वास वृद्धि भेलनि हालाँकि बँटवारा के राजनीति बदस्तूर जारी छल ।

सम्पूर्ण अभियान मे अभि बाबू के पत्नी सुलेखा के सहयोग अविश्वसनीय छलनि । सिर्फ नैतिक ओ परिवारिक नहि अपितु हुनकर राजनीतिक प्रौढ़ता देखि ओ हतप्रभ छलाह । जनता के आंदोलित करऽ मे जतेक नीक जकां ओ भाषण, विचार–गोष्ठी आयोजन आ प्रश्नोत्तर कार्यक्रम के सफलतापूर्वक संचालित कयलनि, अभि बाबू एहि बात के मुरीद भऽ गेलाह । अर्द्धांगिनी भेला कारण ओ हिनकर आंतरिक विचार, क्षमता ओ ईमानदार सोच सँऽ पूर्णरूपेण परिचित छलीह फलतः अधिकारपूर्वक वक्तव्य देब' मे कोनो कष्ट नहि भऽ रहल छलनि । उपरोक्त गुण दूनू प्राणी मे सामान्य रूपें वर्त्तमान छल । सुलेखा अंग्रेजी सँऽ बी.ए. कयने छलीह । परीक्षा मे शुरू सँऽ चोरी चलबाक प्रथा छल । पारंपरिक माता–पिता ज्ञान देने छलनि – चोरी चलऽ दहक, जतेक जमात तक स्वयं पढ़ि सकब पढ़ू, थाकि जायब तऽ पढ़ाई छोड़ि अपन घर सम्हारब । बाकी, बर जेना सोचथि । जोर लगा कऽ बी.ए. फर्स्ट क्लास भेटलनि । प्राइभेट स्कूल सँऽ पढ़ि देहाती झिझक दूर कयने छलीह । लोक–वेद लग कोना वर्त्ताव करी, ई सिखक लेल भतबरीयो फरीक अपन कन्या के ईशारा करैत छलाह । पढ़ल–लिखल कन्या के आजुक जुग मे अभाव अछि । स्मार्ट आ तीक्ष्णबुद्धि कन्या सँऽ विवाह कोनो दूर–दराजक लड़का कऽ लिअ मजाल अछि । छीना–झपटी तऽ गतातीये मध्य

प्रारंभ भऽ जायत अछि । सेह भेलनि सुलेखा संगे । मामी अपन भतीजा सँऽ कथा निश्चित करौअलनि । अभि बाबू सरकारी महकमा मे ऑफिसर छलाह । दूनू पक्ष धन्य भेलाह । सुलेखा के व्यक्तित्व परीक्षण बदस्तूर जारी छल । जिम्मेदारी के बँटवारा कऽ दूनू गोटे प्रचार अभियान तेज चलौअने छलाह ।

गाम पर पता चलल अभिमन्यु दिल्ली मे आम चुनाव लड़ि रहल छथि तऽ मातम सन नीवरता पसरि गेल । जेना सांप सूंघि गेल हो । सदियों बाद कोनो बांझिन के बच्चा भेल हो आ ओ बच्चा कियो छट्ठिए दिन चोरा गेल हो । धर्मनाथ बाबू सपत्नी पेट–कुनिया लादि लेलनि । कनेक ढ़ांढ़ँस छलनि जे एहि आफत मे हम एकसरे नहि छी । आन दूनू भाई सँऽ तऽ सेहो भतबरीए छनि । नदी मे डूब' बला व्यक्ति जखन एकसरे डूबैत अछि तऽ ओकर पीड़ा असहनीय भऽ जायत अछि आ साथ मे डूब' बला व्यक्ति के संख्या देखि ओकर पीड़ा तदनुसार कम होयत अछि । किछु पीड़ा हिनको कम भेलनि मुदा नदी मे चारू कात भँवर के तांडव साक्षात देखि निराशा बढ़ल जाइत छलनि । केऽ चाहैत अछि दुश्मन बरबरीक जकां ताकतवर भऽ जाय जे फूँकि देत तऽ उड़ि जायब ।

यमराज के सोझा मे ठाढ़ देखि कतेक टा चंगेज खां किएक नहि होथि अपन पाप आ पुण्य ऑखि केऽ सोझा चलचित्र जेकाँ घूमअ लगैत छनि । एहि आधार पर ओ निर्धारित करऽ लागैत अछि जे स्वर्ग भेटत अथवा नरक । नरकक स्वरूप आब हुनका बेसी वीभत्स प्रतीत होमऽ लगैत छनि । बचपन सँऽ सुनल ई दूनू घोर विरोधी शब्द केर शाब्दिक अर्थ मे अंतर एतेक विकराल अछि, एकर एहसास हुनका आब भेलनि । एहि बातक अंदेशा पहिले भऽ गेला सँऽ कदाचित ओ पहिने सम्हरि गेल रहित आ एहन दुर्भिक्ष उपस्थित

नहि होमअ दैत । एहि सॅऽ पहिने ई दूनू शब्द कोनो तवायफ केर संतान सन छल जे लाख विलखि–विलखि कानय, केओ ओकर बाप बनि जिम्मेवारी उठाब' हेतु तैयार नहि रहैत अछि ।

धर्मनाथ बाबू एखन एहि मानसिक अवस्था सॅऽ गुजरि रहल छलाह । यमराज के दरबरिया मारि अपना दिश दौरल अबैत देखलनि । स्वर्ग के अनंत लालसा आओर प्रगाढ़ होम' लगलनि । जाहि वस्तु के बेसी लालसा करब ओ ओतेक दूर भागऽ लगैत अछि । एहि बातक सत्यता कतेक प्रेमी युगल प्रमाणित कऽ चुकल छथि । ओ जाहि युवती सॅऽ प्रेम करऽ लगैत छथि आ प्राप्त करऽ के लालसा प्रबल भऽ जायत छनि ओहि युवती सॅऽ हजार गुणा सर्वगुण सम्पन्न युवती केर कथा आब' लगैत छनि मुदा मनवांछित प्रेमिका कोसों दूर । धर्मनाथ बाबू केऽ स्वर्ग एहने प्रेमिका सन प्रतीत होम' लगलनि । वर्त्तमान धर्मसंकट हेतु कखनहुँ पत्नी के दोषी सिद्ध करऽ लगलाह तऽ कखनहुँ अपना आप केऽ । खिन्न भऽ पत्नी सॅऽ कहैत छथि – ''अहां के कतेक बेरि कहलहुँ, लोक जकां रहू, ई जरन्त विद्या छोड़ि दिअ मुदा, अहां ककरो वृद्धि देखि कऽ संताप सॅऽ कोना वंचित रहब'' ?

ललिता : हॅ–हॅ, किएक नहि कहब । अपन बाबूजी के अर्जल लाखों के सम्पत्ति हजम करऽ के उद्योग हमीं कऽ रहल छी किने । अहां तऽ गाय के गोबर छी, पूजा घर मे नीपल जायब ।

धर्मनाथ : मुदा अहां जनैत छी – अभि किएक गाम छोड़लाह । केओ हंसी–खुशी रहै अछि तऽ अहां के कतेक सोहायत अछि । डाहक घनघोर घटा चहुँओर पसारऽ लगबनि कि मनुक्ख–तऽ–मनुक्ख दैवो डेरा जाय । आनक सुःख सॅऽ खुशी नहि होय तऽ कम–सॅऽ–कम दुःखो तऽ प्रदर्शित नहि कयल करू । विकराल मुँह भऽ जायत अछि

। लोक स्वाइत डायन कहैत अछि किनै ।

ललिता : ई तऽ हमर अपन अवस्था थिक – कखन खुशी भेटय, कखन दुःख । जिनका जे सोचैक छनि से सोचऽ दिऔन । हमरा एहि सँऽ फर्क नहि पड़ैत अछि – केओ गाम आबै छथि कि नहि ।

धर्मनाथ : से तऽ ठीक अछि, मुदा लोकक हाय सेहो लागि जायत छैक । किओ अपन मेहनत सँऽ आगां बढ़ल तऽ अहां के मिरचाई किएक लगैत अछि । सदिखन कानिते रहैत छी – फलां, फलां काज कऽ लेलनि । फलां के घरबास भऽ गेलनि । सदिखन टूरे चलैत छैक । फलां के कनियां लखटकिया हार लेलनि । गाम–घरक सुधि किओ किएक लेताह, अपने–अपने मे लागल छथि ..... इत्यादि, इत्यादि । एहिना रहत तऽ कखनो खुश नहि होयब । ककरा–ककरा रोकबैक, अहूँ अपने दिश ध्यान दैत छी तऽ आन पर किएक नजर अछि ? अहां काहि काटऽ लगैत छी, लोक अहीं पर आंगुर उठबैत छथि ।

ललिता : वाह रे काजीरंगा केऽ काजी ! जाने कतेक मूस खाऽ कऽ ई काजी हज करऽ चललनि । आई केओ जोगार बता दिए कि कोना सब टा डीह हाथ आबि जाय तऽ हुनका देवता मानि लेब । चललहुँ धर्मक अवतार बनऽ । अपना सँऽ मतलब राखू । अहां कोनो बाशुदेव नहि छी जे अर्जुनक सबटा झमेला मोल लैत रहब । हमरा नहि डर अछि केओ मंत्री बनैत छथि वा संतरी ।

आरोप के सब सँऽ नीक उपाय प्रत्यारोप बनि कऽ उभरल अछि । जखन अहां आरोप लगाब' बला व्यक्ति केर कमजोरी जनैत छी तऽ ओहि पर आक्षेप करैत प्रत्यारोप लगा दिऔक, अहां विजय भऽ जायब । सेह स्थिति मे धर्मनाथ बाबू पड़ि कऽ चुप भऽ गेलाह । धर्म केऽ रक्षा नहि कऽ सकलनि । कोना करितथि ? शुरूआत तऽ

स्वयं सॅऽ करऽ पड़ैत । एहि हेतु अपन मनःस्थिति पर विजय प्राप्त करब आवश्यक छल, जे पारिवारिक परिप्रेक्ष्य मे बड़ कठिन कार्य भऽ गेल अछि । परञ्च, हाहाकार करैत आगू बढ़ल दावानल सॅऽ अपन सुरक्षा आवश्यक छल । अतएव तीन प्रबुद्ध, सजग आ महत्वाकांक्षी भ्रातावृंद धर्मनाथ (बड़का भैया), कुबेरनाथ (सुन्दर भाय) आओर अखिलेश्वर नाथ (झुलन जी) केर आपातकालीन बेठक भेल । बच्चनजी एहि बैठक सॅऽ अपना के अलग राखि गुटनिरपेक्षता केऽ भारत अभियान पर मोहर लगौअलनि ।

विवाहोपरान्त मन–मस्तिष्क के आवरण पर पड़ल मैल किछु साफ भेल छलनि । जाहि जमीन के सोना केर खान बूझि पट्टा पर लेलनि, खोजोपरांत सिर्फ कारी सोना हाथ लगलनि । जाहि ग्रंथ के गीता बूझि पढ़ब प्रारंभ कयलनि ओ महज एहन पुजारी केर धर्मोपदेश सिद्ध भेलनि जे अपन धर्म बदलि चुकल छल । अतएव, अंतरात्मा एहि प्रपंच सॅऽ बच’ हेतु संकेत कऽ रहल छलनि । ओ बूझैत छलथि भैया–भाभी किनको संग आई धरि नीक अंतरात्मा सॅऽ वर्त्ताव नहि कयने छथि । मन मे दुर्भावना, स्वार्थ आ कुटिल चाल ओ लोकनि आत्मसात कयने छथि । कतेक ठाम अभि भैया ठीक प्रतिवाद कऽ रहल छथि । मुदा परिवारिक ऊँच–नीच केऽ विरोध मे खुलि कऽ सोझा कतेक व्यक्ति आबि सकैत छथि । बीच केऽ रास्ता सबसॅ उत्तम होयत अछि । पांच भाय–बहिन मे सबसॅ पैघ बबली दीदी छत्तीसम पार कऽ गेल छलीह । प्रत्येक साल अनेको कथा–प्रस्ताव आयल छलनि । भागीरथ काका आ काकी के मनवांछित बर नहि भेटि रहल छलनि । ने मन मे कोनो चिंता ने शिकन । सत्तर पार कऽ गेल छलथि, दौड़ धूप नहि भऽ रहल छलनि, परञ्च प्रत्येक जगह कोनो नुक्स निकालि कथा वापस । रिस्तेदारी

मे कहैत छलाह कोनो नीके कथा हेतैक, लोक–वेद कहऽ लगलनि पाई खर्च होम’ केऽ डर सॅऽ कथा निश्चित नहि कऽ रहल छथि । बबली दीदी एहि पर विचार कयलीह तऽ ऑखि खुजलनि आ आगु बढ़ि एक गुआर दुतिबर व्यक्ति सॅऽ विवाह कऽ गृहत्याग कयलीह । एतेक सामाजिक लांछन भेलनि कि घुरि कऽ गाम नहि अयलीह । कतेक सभ्य ओ सुसंस्कृत छलीह बबली दीदी – मोन पड़ि ऑखि सजल भऽ गेलनि बच्चन जी केऽ । परञ्च, एतेक हिम्मत आ दुःसाहस नहि कऽ सकैत छलाह । हिनक मन पिंजड़ा मे सेवित ओहि सुग्गा सन रहनि जे पिंजड़ा सॅऽ बाहर निकलि अपन जीवन–यापन नहि कऽ सकैत अछि ।

अंततः आपातकालीन बैठक केर समाप्ति एहि निष्कर्ष पर भेल जे चुनाव मे निर्दलीय उम्मीदवार तऽ केओ ठाढ़ भऽ सकैत अछि, जीत जायब बड़ कठिन बात । एहि सॅऽ विचलित होयबाक आवश्यकता नहि । विपत्ति केऽ घड़ी मे आशावादी सोच विकलता सॅऽ मुक्ति प्रदान करैत अछि । से मुक्ति पाबि सभा विसर्जन भेल ।

.....

१४

अभि बाबू प्रातः काल उठि, पूजा–अर्चना कऽ तैयार भऽ गेलाह । कार्यकर्त्ता सबहक उत्साहवर्धन हेतु चुनाव केन्द्र पर दौरा अति आवश्यक छल । सालों के मेहनत आई अपन मजदूरी निर्धारित करत । पांच चरण मे समाप्त होमऽ बला चुनावक प्रथम चरण आई अछि । अभि बाबू केर चुनाव क्षेत्र प्रथम चरण मे शामिल छलनि । चुनाव कार्यालय सॅऽ तालमेल, चुनाव–खर्चक ब्यौरा, पोलिंग एजेंट के निर्धारण इत्यादि मुख्य कार्य सुलेखा स्वयं अपन देख–रेख मे सम्पन्न कऽ रहल छलीह । अभि बाबू अपन भोंट खसा कऽ प्रत्येक बूथक आनुक्रमिक दौरा प्रारंभ कयलनि ।

दिन–भरि केर अफरा–तफरी, दौड़–भाग, हाजिर–हुक्काम आ चुनावी रेलमपेल सॅऽ निबटि रात्रि आठ बजे घर पहुँचलाह । सुलेखा चुनावी आबोहवा केर जिज्ञासा करैत छथि – ''तखन ऊँट कोन करवट बैसत, किछु अनुमान भेल'' !

''टक्कर तऽ जरूर अछि । उम्मीद सेहो नीक बुझना जायत अछि । मुदा समय सॅऽ पहिले परिणाम के कहत । अहां तऽ सब नीक–बेजाय बुझिते छी । हमरा सॅऽ बेसी तऽ चुनावी काम–काज अहीं सम्हारने छलहुँ । अहां सन चुनावी कौशल तऽ हमरो मे नहि अछि''। स्नेहातुर भऽ नजरि सॅऽ धन्यवाद दैत कहैत छथि ।

''चलू, महीनों केर परिश्रम सॅऽ निपटि गेलहुँ । आब किछु मास आराम करू । अपन स्वास्थ्य पर ध्यान दिअ । परीक्षा समाप्त भेल'' । विद्यार्थी सन दीर्घश्वांस लऽ सुलेखा सलाह दैत छथि ।

''आराम तऽ तखन होइछ जखन मानसिक रूप सॅऽ संतुष्ट

रहि । एकटा आओर मुख्य कार्य एखन बॉचल अछि । ओ थिक – पारिवारिक सद्भावना । जा धरि ई प्राप्त नहि होयत हम कोना निश्चिंत भऽ सकैत छी ? प्रबुद्ध होयबाक दायित्व निर्वाह हम अवश्य करब । अपन मानस पटल पर अंकित परिवार केर परिभाषा पूर्ण करऽ केर कर्त्तव्य–बोध हमरा प्रतिपल गाम बजा रहल अछि'' – सुलेखा केऽ अंक मे भरि तात्कालिक शांति मे खलल उत्पन्न करैत छथि ।

''गाम ! मुदा अहां तऽ गाम नहि जयबाक सपथ नेने छी'' ।

''ओहि सपथ के निर्वाह हेतु एक बेरि गाम अवश्य जाय पड़त'' ।

''हमरा बड़ डर लागि रहल अछि । एखनहुँ अहां नीक जकां स्वस्थ्य नहि भेलहुँ । गाम जा कऽ किएक खतरा मोल लेब । राजनीतिक व्यक्ति भऽ कऽ एतेक सेंटीमेंटल होयब ठीक नहि'' ।

''राजनीतिक सॅऽ पहिने पारिवारिक व्यक्ति छी । परिवार मे व्याप्त कुचक्र, स्वार्थ, घाती–व्यवहार समाप्त होय – एहि हेतु उदाहरण प्रस्तुत करऽ पड़त । एखन तऽ राजनीति मे नाम लिखाओल । पाठक' आरम्भ घरहि सॅऽ करब अति सुंदर किनै'' !

''अहां कोन पहेली बुझा रहल छी से नहि कहि'' ।

''हम गाम पर जा कऽ आमरण अनशन करब, भूख हड़ताल करब – जा धरि दोषी व्यक्ति अपन अपराध स्वीकार कऽ आचरण शुद्धता के प्रति हाथ मे गंगाजल लऽ सपथ नहि लऽ लेथि – हमर अनशन जारी रहत । हम उम्मीद करैत छी खून के चिंनगारी ईर्ष्या, द्वेष, डाह, स्वार्थ इत्यादि सन भषनासुर के' जारि कऽ राख कऽ देत'' ।

''नहिं–नहिं से नहि भऽ सकैत अछि । अहां ओहि चक्रव्युह मे नहि जा सकैत छी । खूनक एतेक मान–मर्यादा अगर भेल रहित तऽ अभिमन्यु चक्रव्यूह मे किएक मारल गेलाह'' । एक अनजान डर सँऽ सुलेखा भयाक्रांत भऽ जायत छथि ।

सुलेखा के माथ पर ऊभरि आयल घाम केऽ रूमाल सँऽ पोछि कऽ अभि बाबू कहैत छथि – ''अभिमन्यु के त्याग अकारथ नहि गेल छलनि । हमरो त्याग ओहि प्रकार मंजिल प्राप्त करत । एहि हेतु कोनो त्याग व बलिदान पैघ नहि होयत'' ।

''अहां परिवारक परिभाषा सँऽ कदाचित हमरा किएक वंचित करऽ लगैत छी ? बिछुड़ल सदस्य के जोड़ के उपक्रम मे वर्त्तमान के नहि बिसरक चाही । दैवक कृपा सँऽ दिन फिरल जा रहल अछि । आब बिसरि जाऊ बीतल पीड़ा केऽ आ स्थिर भऽ जाऊ'' । – सुलेखा अपन शिकायत आखिरकार दर्ज कराबैत छथि ।

''पीड़ा केऽ बिसरि सकैत छी । बीस–बाइस बरख सहोदर सभहक संग बीतल अछि, संगे–संग बचपन सँऽ युवावस्था प्राप्त भेल – से कोना बिसरि सकैत छी । जिनक शुभ हेतु हृदय एतेक साल अनुबंधित छल आब हुनक अशुभ कोना सोचि सकैत छी ? अतः परिस्थिति मे सुधार आवश्यक अछि । अगिला सप्ताह हम कटिहार जायब'' ।

''हम संगे चलब । पारिवारिक सद्भावना केर खोज मे स्वयं पर आंच आबय ई हम नहि होभ देब । अहां जे राह पर चलऽ चाहैत छी ओ अंगार देने जायत अछि । पेड़ सूखि जाय तऽ खाद–पानी दऽ पुनः हरियर भऽ सकैत अछि मुदा आंखिक पानि सूखि जाय तऽ ओकर डबडबाएब मुश्किल'' ।

''अरे ! अहां व्यर्थ चिंता करैत छी । सब सौहार्द्रपुर्ण रहत

। फेरि, अहां रहब तऽ हमर तपस्या भंग भऽ सकैत अछि । अहां एहि ठामक हालात पर नजर राखब । चुनाव परिणाम अहांक मुख सॅऽ सुन' चाहैत छी । ओना एखन एक मास सॅऽ बेसी अछि काऊंटिंग होम' मे । तखन तक सब सुलझि जायत । जीत गेला पर हम मॉ आ ज्येष्ठ भ्राता सॅऽ आशीर्वाद प्राप्त कऽ शपथ ग्रहण करऽ चाहैत छी । मुदा से आशीर्वाद अंतःकरण सॅऽ उच्चारित होय'' ।

''आब हम की कही । एकटा आग्रह अछि – मनटुनमा के संग नेने जाऊ । योगमाया केऽ कहि देबनि किछु दिन वास्ते जाय देथि । संग रहत तऽ बेर–बेकाल काज आयत'' ।

''ठीक अछि । ओ हमर संगे रहत । आब अहां निश्चिंत भऽ जाऊ'' ।

प्रातःकाल सॅऽ मित्र ओ शुभचिंतक सभहक शुभकामना प्राप्त होम लागलनि । वोट प्रतिशत मे वृद्धि होयब कियो नीक कहलनि तऽ केयो जनता द्वारा वर्त्तमान परिस्थिति सॅऽ ऊबि गेनाय हिनक पक्ष केऽ मजबूती के कारण निर्धारित कयलनि । सुलेखा केऽ हृदय प्रफुल्लित भऽ रहल छलनि । अभि बाबू के प्रस्तावित गाम यात्रा सॅऽ हालांकि ओ सशंकित भऽ जायत छलीह मुदा वर्त्तमान आनन्द मे सब आच्छादित भऽ गेल छल । घनघोर बारिश मध्य बिजली केर चमक सॅऽ व्यक्ति किछु पल डरि जायत अछि मुदा तप्त घरती पर घटाटोप बारिश सब कसर बिसारि दैत अछि । बारिश के बूंद गृहस्थ हेतु अमृत तुल्य होयत अछि । ओ बिजली गर्जन के रत्ती भर परवाह नहि करैत बूंद के साथ मदमस्त भऽ जायत अछि । सुलेखा केऽ अवस्था एखन ओहि गृहस्थ समान छलनि । अपन संभावित खुशी मे ओ मगन छलीह ।

जनवरी मासक सर्द प्रातःकाल । आकाश कुहासा सॅऽ कनेक

साफ होम केऽ तैयारी कऽ रहल छल । ओसक बूंद पायर मे सटला सॅऽ एक नव रोमांच केर सृजन कऽ रहल छल । सूर्यदेव लाल रक्तिम छटा बिखेरि ओहि रोमांच के नवीन चेतना प्रदान कयने छलथि । मध्यम सर्द हवा देह केऽ छू कऽ मधुर सिहरण प्रदान करैत छल । गोल–गोल लालिमा नेने सूर्य केऽ प्रथम उत्थान मानू प्रकृति अपन मस्तक पर लाल बिंदी केर श्रृंगार कयने हो ।

कमरा केर सामने बरामदा । सोझ चलि कऽ हरियर घास पसरल लॉन । चारू कात छहरदीवारी लॉन मे आरामकुर्सी पर पुरान फोटो सॅऽ अपन बीतल दिनक याद सॅऽ स्फूर्ति ग्रहण करैत अभि बाबू । किछु काल पश्चात् चाय लऽ सुलेखा उपस्थित भेलीह । अभि बाबू कऐक बेरि बरामदा तक नजर दौड़ा कऽ चाहक व्यग्रता जाहिर कऽ चुकल छलाह । वास्तव मे ई व्याकुलता चाह केर छल वा सुलेखा केऽ उपस्थिति केर से नहि कहि । पति द्वारा विवाहक फोटो अवलोकन मे एतेक दिलचस्पी देखि सुलेखा अभिभूत भऽ गेलीह । सालों बाद पति केर रूचि पुरान आ व्यक्तिगत फोटो मे बरकरार अछि – ई देखि कोनो पत्नी एहि तरह प्रफुल्लित होयतीह । पत्नी के मुफ्त मे प्रसन्न करऽ हेतु एहि सॅऽ नीक उपाय नहि अछि ।

चाह टेबुल पर राखि कुर्सी केऽ पाछां सॅऽ पति के गला मे बांहक हार डालि प्रेमपाश मे जकड़ि लैत छथि । अभि बाबू एक सुःखद अनुभव सॅऽ मदहोंश भऽ एक फोटो दिश पत्नी केऽ ध्यान आकर्षित करैत छथि । जयमाल के फोटो छल । पुष्प केर माला बांहक हार मे स्थानांतरित भऽ ओहि चित्र केऽ जीवंतता प्रदान कऽ रहल छल । एहि बात केऽ सहमति दूनू गोटा देलनि । चित्रक पिटारा मे चतुर्थी राति के एक फोटो छल जाहि मे वातावरण सॅऽ अनभिज्ञ अधरपान केऽ एक चित्र पर आबि अटकि गेलाह । चोरा कऽ सारि

ई फोटो खींच नेने छलीह । मधुर गुसताखी पर असहजता व्यक्त करैत सारि के पकड़ि सीन दोहराब' के इच्छा व्यक्त कयलनि । बेचारी अनुनय करि हड़बड़ा कऽ भाग' केर प्रयास कयलनि जाहि मे हारि कऽ अभि बाबू जीतक अनुभव कयने छलाह । फोटो देखि सुलेखा कनेक सकुचाइत छथि । आब बारी अभि बाबू के छलनि । दूनू फोटो के एकाकार कऽ एक नवीन आ तरूण चित्रक निर्माण मे रमि गेलाह । सुलेखा प्रतिरोध नहिं करऽ के मुद्रा मे प्रतिरोध कऽ स्त्री धर्मक पालन करऽ मे तल्लीन भऽ गेलीह । प्रकृति के आलिंगन मे आलिंगनबद्ध दू प्राणी एक घड़ी देश–दुनियां के बिसरि व्यक्तिगत पलक चरमोत्कर्ष पर पहुँचि निःशब्द, शांत ओ संतृप्त छथि । एक–दोसरक ऑखि मे अपन नवीन चित्रक तलाश कऽ रहल छथि । मध्यम सर्द मौसम मे यौवनक तूफान पर्याप्त गर्मी प्रदान करैत अछि । ललाट ओ छाती पर व्याप्त घाम एहि बातक गवाही दऽ रहल छल । टेबुल पर राखल चाह ओहि गर्मी सॅऽ अप्रभावित रहि सेरा गेल छल ।

तूफानक पश्चात शांति तऽ सामान्य गप थिक । मुदा एक तूफान विनाशक परिचायक थिक । सब तरफ जीवन–मृत्यु केऽ बीच द्वंद केर साक्ष्य छोड़ैत अछि । धनी व्यक्ति क्षणभर मे निर्धन भऽ जायत अछि । दोसर तूफान सिर्फ जीवन केऽ संदेश दैत अछि । उत्साह ओ उमंग केऽ, प्रेम ओ मिलन केऽ । निर्धनतम व्यक्ति एक क्षण मे अतिसम्पन्न भऽ जायत छथि । प्रथम प्रकारक शांति तूफानक पश्चात प्रारब्ध द्वारा बकसि देल गेल मंजर केर उवलोकन कऽ दुःख पर विजय प्राप्त करऽ हेतु होइत अछि, जबकि दोसर प्रकारक शांति एक संतृप्त ओ संम्पूर्ण क्षण सॅऽ किछु मोती चुनि अपन जीवन के कृतार्थ करऽ हेतु ।

दोपहर तीन बजे डी.डी. न्यूज सॅऽ एक पत्रकार मृदुला चौधरी चुनाव समीक्षा आओर उम्मीद पर टिप्पणी करऽ पहुँच गेलीह । चहुँ ओर चर्चा छल–टक्कर जोरदार अछि । कोनो आश्चर्य नहि एहि बेरि नृत्यगोपाल बाबू लोकसभा केर बजाय अपन चौपाल पर नृत्य करथि । भोंटक दिन तऽ किछु विशेष नहि ज्ञात भऽ सकल मुदा दिन बीतला सॅऽ एक भोटर दोसर के संपर्क मे प्रतिक्रिया केर आदान–प्रदान करैत अछि तऽ किछु संकेत भेटैत अछि ।

मृदुला अभि बाबू सॅऽ कहैत छथि – ''चर्चा जोरों से है आप रेस मे बने हुए हैं'' । ''सिर्फ बने हुए नहीं बल्कि आगे चल रहे हैं '' । ''लेकिन यह भी सामने आया है कि लोग यादवजी से उब कर आपकी ओर झुके हैं । कई लोग तो इस बात से चैन मे थे कि यादवजी के लिए आसान नहीं होगा । इसका मतलब ऐसे लोगों ने विरोध मे मतदान किया है । आपके पक्ष और यादवजी के विरोधी पक्ष का भोंट जोड़ने से आपकी ओर झुकाव बन रहा है'' ।

''यह तो होता ही है । कोई भी सिटींग एम.पी. अगर हारेगा तो विरोधी वोट तो होगा ही । अगर यह विरोधी वोट मुझे मिला है तो मैं जनता का आभारी हूँ । वैसे तो कुल बाइस प्रत्यासी मैदान मे थे'' –चाय के कप तरफ ईशारा करैत अभि बाबू उत्तर देलनि ।

''आप अगर जीत भी गए तो निर्दलीय रहकर क्षेत्र के लिए क्या कर पाएँगे ? यह क्षेत्र की जनता को उपेक्षित होने का कार्यकाल नहीं होगा'' । शरारत भरल निगाह सॅऽ मृदुला पूछैत छथि ।

प्रश्नक पूर्वानुमान रहला सॅऽ विश्वासपूर्वक बजलाह – ''क्षेत्र के लिए कार्य, दल नहीं जन–प्रतिनिधि करता है । आपने तो सुना होगा कि निर्दलीय प्रत्यासी मधु–कोड़ा मुख्यमंत्री तक बन चुके थे । बात सिर्फ इरादा का है, ईमानदार प्रयास का है'' ।

मृदुला चौधरी बड़ सिद्धहस्त पत्रकार छलीह । पिता पॉच बेरि विधायक रहि चुकल छलाह । राजनीतिक धांधलेबाजी, मोलभाव, गंदगी सॅऽ नजदीक सॅऽ अवगत छलीह । पिता राधेश्याम चौधरी शुरू सॅऽ बेटी के एहि झमेला सॅऽ दूर अपन अलग पहचान बनाब' कहने छलनि । एतेक दिन तक राजनीति मे सक्रिय रहि राधे बाबू देखि चुकल छलाह कोनो सुधारक लक्षण नहि अछि । बल्कि पहिल बेरि जखन विधायक बनल छलाह ताहि समय किछु नैतिकता, मानवीयता, आओर संवेदना छिटपुट विद्यमान छल । अपन अंतिम कार्यकाल आबैत–आबैत राजनीति सॅऽ विक्षुब्ध भऽ गेल छलाह । कहैत छलाह हर तरफ फरेब, जालसाजी, सिद्धांतहीनता, आ सभक उद्देश्य कहुना राज–पाट बनल रहय । जनसेवा, प्रगति, कानून–व्यवस्था एहि सभहक दायित्व तऽ जनता पर रहि गेल अछि । जन प्रतिनिधि सिर्फ पद, पावर, पैसा आ ऐशोआराम तक सीमित छथि जकर प्राप्ति हेतु कोनो कुकर्म बांकी नहि रखलनि । एहन अपवित्र जगह कदम किएक राखब । पिता केर विचारधारा दिनानुदिन उपस्थित होम' बला वैचारिक वैमनस्य आ जिम्मेदारी पालन मे उपस्थित कठिनाई पर आधारित छलनि । ओ ईमानदारीपूर्वक जन–सेवा मे तल्लीन रह' बला व्यक्ति छलाह । विधायक फंड मे घोटाला केर सांकेतिक आदेश पार्टी अध्यक्ष सॅऽ भेटल छलनि जाहि मे कर्त्तव्यहीनता बरतने छलथि । सरकार मे बाहर सॅऽ समर्थन छलनि हिनक पार्टी सॅऽ । मतभेद आ जोड़–तोड़ एकहि साल मे प्रारंभ भेल । मुख्य विरोधी पार्टी सॅऽ पचास करोड़ केर सौदा भेल समर्थन वापस लेब' हेतु जाहि कारण फेर चुनाव भेला सॅऽ हारल व्यक्ति अपन स्थिति मजबूत कऽ सकथि । पार्टी व्हिप के त्यागि अपन अंतरात्मा सॅऽ सरकार के समर्थन मे वोंट देलनि । परिणामस्वरूप

एक वोंट सॅऽ त्रिशंकु सरकार बॉचि गेल छल । पार्टी विरोधी गतिविधि मे ओ निष्कासित भेलाह । मगर क्षेत्रक जनता बीच हिनक सम्मान बढ़ि गेलनि । सदाचार आधारित राजनीति के एहन मिशाल पर लोकक मध्य अत्यंत प्रशंशनीय भेलाह । दुर्भाग्यवश, किछु मास पश्चात् हिनक कार मे पाछां सॅऽ एक लॉरी द्वारा जोड़दार टक्कर भेलनि जाहि दुर्घटना मे ओ दिवंगत भऽ गेलाह । भीतरे–भीतर चर्चा छल जानि–बूझि कऽ दुर्घटना कराओल गेल । सोलह साल के छलीह ओहि समय मृदुला । अवस्था नै बेसी छोट नै बेसी पैघ । मुदा ओहि तरूणावस्था मे तय कयलीह जे राजनीति मे व्याप्त गंदगी के पर्दाफास करैत रहब । पत्रकारिता एहि पृष्ठभूमि केर देन छल ।

प्रश्नक कड़ी आगू जोड़ैत मृदुला बजलीह – ''मधु कोड़ा के भ्रष्टाचार ने तो कोई सीमा नहीं छोड़ी । निर्दलीय को चुनकर जनता अपने पैर मे कुल्हाड़ी नहीं मारती'' ?

''चाहे निर्दलीय प्रत्यासी हो या दलीय, भ्रष्टाचार से विमुक्त रहने का दावा सिर्फ इसी आधार पर नहीं किया जाता है । जहां तक नेक व्यक्तित्व और इरादा का प्रश्न है यह तो समय आने पर ही साबित किया जा सकता है और फिर जब कोई रास्ता मंजिल तक न पहुँच रही हो तो उसे बदलने मे भलाई है । अंधेरी वीरान राह दुःखदायी होती है'' – संतुलित मुस्कान के साथ अभि बाबू उत्तर दऽ चाय के प्याला राखैत छथि ।

''यह देखा गया है कि कई बार लोग ईमानदार छवि लेकर आते तो है, मगर मौका मिलते ही अपने स्वार्थ और ऐशो आराम मे मशगूल होकर रह जाते हैं ।''

''ऐसा है मृदुला जी कि आप तो अब तक घटित हो रही घटना का चित्रण कर रही हैं । खुद को साबित करने के लिए बिना मौका

मिले मैं क्या कहूँ ? अपनी प्रशंसा मैं खुद नहीं करता । हॉ, लोग अगर कार्य की प्रशंसा करे तो मुझे अच्छा लगेगा । परन्तु यह तो वक्त के गर्भ मे है । इंतजार कीजिए ।''

मृदुला अपन आखिरी प्रश्न हेतु आग्रह करैत कहैत छथि – ''यदि आप जीत जाते हैं तो किस सिद्धांत पर कार्य करेंगे ?''

''अत्यंत व्यग्रता सॅऽ उत्तर दैत छथि, जेना एहि प्रश्न हेतु तत्परता सॅऽ इंतजार होइनि – सिर्फ एक तत्व कहा जाय तो वह है – मानवीय संवेदना या सेवा भाव जिसे मैं अपनी कार्यशैली का आधार समझता हूँ'' ।

मृदुला कतेक नेतागणक पर्दाफास कऽ चुकल छलीह । बिन पेंदी लोटा टाइप नेता हिनका सॅऽ बात करऽ मे आनाकानी करैत छलाह । अभि बाबू के आत्मबल, विश्वास आ हावभाव सॅऽ ओ आश्वस्त भेलीह । कतेक प्रशंसा मूलक विशेषण सुनि चुकल छलीह । नेतागणक दोसर पहलू अक्सर अलग रहैत अछि जे उचित समय सॅऽ पहिले उजागर नहि होयत अछि । मृदुला वास्तव मे आश्वस्त होमय आयल छलीह । भऽ गेलीह । शुभकामना दैत प्रस्थान करैत बजलीह – मुझे तथा क्षेत्र की जनता को आपसे काफी उम्मीद है, सर ! निराश मत कीजिएगा । मैं सोचती थी, पिताजी के आदर्शो और नीतियों पर चलने वाले वे आखरी व्यक्ति थे आज के दौर मे । शायद मैं गलत थी । मैं आपकी सफलता की कामना करूंगी ।

अभि बाबू के भाषा मे मृदुला अपन पिता के स्वर पाबि अश्रुपूर्ण चक्षु सॅऽ हिनक ओर देखैत छथि । पिता केर अंतिम संस्कार बाद ऑखि सूखि चुकल छलनि, बाट जोहि रहल छल राजनीतिक गंदगी के पर्दाफास हेतु अपन संकल्प मे । ओ गंदगी जे हिनक पिता केर नेक आदर्श ओ आत्मीयता केर खून कयने छल । हठात अनाथ

भऽ गेल छलीह बेचारी मृदुला । मॉ–बापक एकसर संतान; मिरांडा हॉउस,
बी.कॉम. के विद्यार्थी मृदुला । माताजी आंत कैंसर सॅऽ पीड़ित, बिगड़ल केस । डाक्टर साल–डेढ़ साल उच्चारित कऽ देने छल । राधे बाबू बीस साल मे अरजने छलाह आदर्श, ईमानदारी, लोकसेवा वगैरह–वगैरह सन मेडल । सोना के रहित तऽ नीक मोल बिक सकैत अन्यथा अनमोल । नोएडा सेक्टर 112 मे दू रूम केर एकटा घर बैंक सॅऽ किस्त पर लऽ गृहस्वामी बनऽ मे झेंप महसूस कयने छलाह । बैंक मे कुल बासठ हजार टाका राखि गेलाह । ट्यूसन दऽ मृदुला अपन पढ़ाई आ घरक जिम्मेदारी वहन कयलनि । विधायक फैमिली पेंशन द्वारा पूर्ण जीर्णोद्धार संभव नहि छल । ओहि समय ठानि लेलीह, राजनीतिक भेड़िया सब पर सिंह जकां प्रहार करब । मन मे शांति अनुभव होइत छलनि कोनो नव शिकार पाबि । मुदा, पहिल बेरि कोनो एहन राजनीतिज्ञ सॅऽ मुलाकात भेलनि जतय ओ अपन पिता के आदर्श ओ भावना केऽ साक्ष्य पाबि रहल छलीह । मन मे संकेत भेलनि कि ओ जाहि अनबुझ पहेली मे उलझि गेल छलीह ओ सुलझि गेल अछि । श्रद्धा उत्पन्न भऽ गेलनि अभि बाबू केऽ प्रति । शायद ओ श्रद्धा जे अपन पिता के पश्चात् कोनो दोसर व्यक्ति हेतु एखन धरि उत्पन्न नहि भेल छलनि ।

.....

१५

प्रातःकाल 9 बाजि कऽ 10 मिनट पर गौहाटी राजधानी कटिहार स्टेशन पर पहुँच रहल छल । कुली सबहक दौड़ भाग । अपन–अपन ग्राहक हेतु विकल भऽ रहल छलाह । अभि बाबू खिड़की सँऽ झांकि कऽ निश्चित करऽ चाहैत छथि कोन प्लेटफार्म पर गाड़ी लागि रहल अछि । ओहि समय मे राजधानी के प्लेटफार्म 12 नं. तय रहैत छल । आब सब किछु परिष्कृत भऽ गेल अछि । स्टेशन कतेक विशाल ओ भव्य बनि गेल । प्लेटफार्म सुनैत छीयैक सोलह टा भऽ गेल अछि । गाड़ी प्लेटफार्म पर घुँसि चुकल छल मुदा एखन धरि ओ निश्चित नहि कऽ सकल छलाह कोन नम्बर अछि । झुंझलाहट भऽ रहल छलनि – कतेक बदलि गेल अछि रंग–रूप । बीस–पच्चीस साल पहिने सीमेंट के प्लास्टर आब उज्जरि रंगक फैंसनेबुल टाइल्स नेने अछि । प्लेटफार्म पर एक पुलिस सहायता केन्द्र के अलावे एकटा बुकस्टाल, एक खान–पान भेंडर आ किछु खोमचावाला आवाज लगबैत भीड़–भाड़ मध्य शांतिमय वातावरण स्थापित करैत छल । आब तऽ डेगे–डेग पर पूरी–सब्जी बला भेंडर, कार्यमग्न सफाई कर्मचारी, दवाई दुकान आ अन्य सुविधा उपलब्ध अछि । प्लेटफार्मक ऊपर छत पहिने आध दूरी तक छल से पूर्ण भऽ गेल अछि । एसबेस्टस के स्थान आब गुम्बदाकर छत लऽ लेने अछि । बनावट एहि तरीका सँऽ कि दू टा प्लेटफार्म एक साथ लाभित हो । प्रारंभहि सँऽ कटिहार स्टेशन प्रांत मे विख्यात छल पैघ जंक्सन के रूप मे । स्वरूप आब लागि रहल अछि पैघ सन । ट्रेन आवाजाही केर रूट तऽ वैह अछि । चारि दिशा हेतु ट्रेन एतय सँऽ खुलैत अछि

जे बाल्यकाल मे अत्यंत गर्वक विषय छल । आब तऽ एकर स्वरूप विक्टोरिया टर्मिनस सँऽ किछुए कम रहि गेल अछि । आधुनिकता केऽ असर प्रलक्षित भऽ रहल छल । गाड़ी रूकि गेल । अन्य सुविधात्मक संकेत यथा, सामान घर, बाहर जयबाक रास्ता, विश्रामालय, प्रतीक्षालय इत्यादि सेहो आब प्रदर्शित भऽ रहल छल । संभवतः एहि कारण सँऽ 12 नं. के संकेत जल्दी नहि भेटलनि । चौंकैत छथि – अरे ई बारह नं. थिक । वैह बारह नम्बर जकरा टपि कऽ रोज स्कूल जायत छलहूँ । स्कूल चारि किमी. छल । अगर स्टेशन पार कऽ कऽ जाऊ तऽ मात्र अढ़ाई किमी. । प्लेटफार्म टिकट नामक शब्द तऽ निर्मित भऽ चुकल छल मुदा प्रयोग हेतु आधुनिक युगक इंतजार छल । बारह टा प्लेटफार्म मध्य अगर ऑखि बंद कऽ 12नं. पर सँऽ गुजरितहुँ तऽ पता लागि जायत । मुदा आई पहचान कतेक दुर्लभ भेल । व्यक्ति केर पहचान सेहो एहि प्रकार सँऽ कठिन भऽ गेल अछि । लाल ओ कारी धारीदार शर्ट पहिरने किओ आबि रहल अछि तऽ चलित्तर मंडल नामक भूगोलक शिक्षक होयताह । खादी बला कुरता–पायजामा – निश्चित वंशीधर झा – मैथिली शिक्षक छथि । ओहि समय खतरा के घंटी लाल रंग नहि, नेभी ब्लू रंग होयत छल । अगर ई रंगक सफारी सूट दृष्टिगोचर भेल तऽ अहां अविलंब भागि सकैत छी अन्यथा प्रधानाचार्य श्रीमान दशरथ शर्मा केर बेंत ठीक ओहि प्रकार एकाध कमी निकालि चालान करत जेना कोनो ट्राफिक पुलिस वाहन चालक के रोकि करैत अदि । परञ्च, आब तऽ आधुनिक युग आबि गेल अछि । बाहरी रंग–रूप आ परिधान मे परिचय खोजब तऽ धोखा होयत । आंतरिक ओ बाह्य अवस्था मध्य आधुनिकता केर चादरि शायद लाजक परदा बनि उपस्थित अछि । विडंबना जे एहि चादरि प्राप्त करऽ हेतु कोनो कीमत

लागि जाय । लोक देब' हेतु प्रस्तुत छथि ।

गाड़ी रूकितहिं भीड़ उतरऽ आंओर चढ़ऽ हेतु प्रतिस्पर्धा मे लागि गेल । मनटुनमा दूनू कात बेग लटका चुकल छल । हाथ मे एकटा अटैची लऽ दूनू गोटा प्लेटफार्म नं. 12 पर दाखिल भेलाह । आगू जाय बला यात्री सब पूरी–तरकारी पर टूटि पड़ल छलाह । किछु व्यक्ति दही–चीनी पर आक्रमण कऽ रहल छलाह । ट्रेन मे खाना के स्तर अतिनिम्न भऽ गेल अछि । बुझना जाइत अछि एहि तरफ आधुनिकता केर प्रवेश नहि भऽ सकल अछि । परञ्च, अन्वेंशन करी तऽ ज्ञात होयत ई आधुनिकते के शिकार अछि । हरेक शर्त्त पर मुनाफा बेसी चाही, तखन तऽ आधुनिकता के निर्वाह जीवन मे संभव होयत । बेसी लाभ तखन होयत जब लागत कमतर आ दाम बेसी होय । खाना केऽ ठेका प्राप्त करऽ सॅऽ खाद्य–पदार्थ यात्री तक पहुँचाबऽ दरम्यान कतेक कमीशन बॉट' पड़ैत छैक – सोचऽ सॅऽ खाना आधुनिक सांचा मे फिट भेटत । पुरान बिल्डिंग तरफ सॅऽ निकास कऽ रिक्सा पर दूनू गोटा बैसि मिरचाई बाड़ी दिश चलऽ हेतु आग्रह कयलनि । कनेक बाहर आबि चौराहा पर अवस्थित काली–स्थान ई सुनिश्चित कऽ रहल छल अहां ठीक राह पर छी । वैह गेट, वैह मूर्ति, वैह दीवार जाहि पर मूत्र विसर्जन इत्यादि मनाही के आग्रह । शायद ईश्वर के आधुनिकता बेसी पंसंद नहि छनि ।

''धर्मसभा''
गली नं.–2, कुँवर सिंह टोला,
मिरचाई बाड़ी, कटिहार

मकानक बाहर लागल पता अभि बाबू हेतु कोनो नव नहि छल । रिटायर भेला पर बाबूजी सरकारी जमीन पर बनल खरफूस

के पुरान ओ जर्जर घर के अपन श्रम, बचत, अरमान अथवा कहल जाय सर्वस्व न्यौछावर कऽ नव–गृहप्रवेश कयलनि । नौकरी के प्रारंभ मे अभि बाबू जखन अबैत छलाह तऽ नव घरक आनंद दू–चारि दिन लऽ आनंद सागर मे उत्प्लावित भऽ प्रस्थान करैत छलाह । घरक नाम तय करऽ समय बड़ घमर्थन भेल । अंततः बाबूजी निष्कर्ष निकाललनि जे हम तऽ बूढ़ भेलहूँ । हमर बाद छोट–भाई सबहक देख रेख धर्मनाथक ऊपर रहत । सबके अपन पुत्र ओ प्रजा मानि चलब ओकर धार्मिक ओ नैतिक कर्त्तव्य थिक । फलतः ''धर्मसभा'' नाम तय भेल । छओ मास नहि बीतल होयत कि बेचारे ''धर्मसभा'' सॅऽ उठि कऽ सर्वदा हेतु प्रस्थान कऽ गेलाह ।

तीस साल पहिले लागल लेबल आब पुरान भऽ चुकल छल । चमक फींका पड़ि गेल छल । नजरि गड़ा कऽ देखब तखन निश्चित होयत । बुझि पड़ैत अछि सालों सॅऽ एकर रखरखाब तरफ कोनो ध्यान नहि देल गेल अछि । अभि बाबू हाथ सॅऽ स्पर्श कऽ आश्वस्त होमऽ चाहैत छथि । हाथ खराब भऽ गेलनि । अक्षर साफ तऽ भेल मुदा लेबल के आरम्भ में कोनो शब्दक आकृति सन बनि गेल छल जे रगड़ि देला उपरान्त साफ नहि भऽ सकल छल । ''अ'' सन आकृति अगर दृष्टिगोचर भेल तऽ
जगहॅसारथ होयत एकर एहसास ''धर्मसभा'' सदस्य मे नहि देखि आश्चर्य भेलनि ।

मनटुनमा कॉलबेल बजा चुकल छल । किछु क्षण पश्चात् एक बूढ़ सन महिला किवाड़ खोलैत छथि । मॉ के चरण–स्पर्श करैत कुशल–क्षेम पूछैत छथि । माताजी विस्फारित नेत्र सॅऽ देखि रहल छथि । कहैत छथि – ''आब तऽ उम्मीद नहि छल एहि जनम मे तोरा सॅऽ भेंट भऽ सकत ! अचानक कोना सद्बुद्धि जागल'' ?

''हम तऽ कोनो विशेष कारण आ मतभेद सँऽ अलग पड़ि गेलहुँ । तोरा के रोकने छलहुँ दिल्ली आबि कऽ रहऽ सँऽ आओर भेंट करऽ सँऽ । झूठ प्रतिष्ठा कारण आपत्तिजनक व्यवहार आ स्वार्थी तत्वक सहायता अप्रत्यक्ष रूप सँऽ कऽ हमरा हेतु किबाड़ बन्द करऽ के दोषी तोरा किएक नहि कहल जाय'' । एक श्वांस मे अपन बात कहि मानसिक शांति प्राप्त भेलनि ।

माताजी के ऑखि सँऽ नोरक धार बहैत देखि आओर किछु पूछऽ आओर कहऽ हेतु नहि छलनि । कुंती द्वारा कर्ण त्याग समय विवशता केर एहसास सहज कऽ सकल छलाह अभि बाबू । कुंती के ऑखि सँऽ बह' बला नोर स्थिति बदलितऽ नहि सकल अपितु धार मे अनवरत नोर मिश्रण पानी केर मात्रा वृद्धि अवश्य कऽ सकल छल । परिस्थिति पर सब व्यक्ति एकहि ढ़ंग सँऽ प्रतिक्रिया नहि करैत अछि । माताजी के मन सदा किछु आओर कहैत छलनि मुदा ओ धर्मनाथ बाबू के लादल रणनीति के विरूद्ध नहि चलि सकैत छलीह । पति द्वारा निर्मित घर मे रहऽ हेतु वर्त्तमान व्यवस्था विरूद्ध नहि जा सकैत छलीह । दोसर पक्षक संवाद बंद भऽ गेला सँऽ धरम बाबू केऽ कार्य बेसी आसान भऽ गेल छलनि । खूब कान भरल गेल अभिमन्यु आ हुनक पत्नी केऽ खिलाफ । कहलनि ओकर नजरि अहांक पेंशन पर अछि । कहैत छथि एक भाग पर हमरो हक अछि । घरक बँटवारा हेतु विकल छथि । बस माताजी दुःखी भऽ संवाद तक बंद कऽ लेलीह । दिल्ली बात भेला पर दूनू पति–पत्नी बूढ़ी माता केऽ कटाक्षवाण सँऽ अपस्यॉत कऽ दैत छलथि । हारि केऽ बचल–खुचल व्यवहार क्षुद्रता के बलिवेदी पर चढ़ि गेल । बाबूजी कौड़ी–कौड़ी जोड़ि तीन जगह जमीन अरजि गेल छलाह । सब जगह रिहायसी छल । एकर अलावे एक बीघा जमीन मे जल जमाव कारण

माछ पोसऽ हेतु भाड़ा पर उठा देल जायत छल । साल दर साल कीमत वृद्धि भेल । धर्म बाबू सोचलनि गढ़ा पर आन सबहक नजरि कम अछि, सम्मिलित कार्य देखा कऽ बेचि देल जाय तऽ भारी रकम हाथ सँऽ गुजरत । बेटी के विवाह निपटि जायत । ओहि अवस्था मे बॉचल रिहायसी जमीन बॉटि कऽ अपन अलग घर बना निश्चिंत भऽ जायब । कतेक बेरि माताजी के हुनक इलाज हेतु एकमुस्त रकम, घरक मरम्मती हेतु रूपया केर जरूरत इत्यादि के हवाला दऽ जमीन लिखऽ हेतु जोर देलनि । बांकी सब सँऽ विचार कऽ लेब' कऽे माताजीक' सलाह पर खिन्न भऽ डोमा–डिग्री उठौना कयने छलथि । आशा छलनि एक न एक दिन ओ मानिए जयतीह । कानों कान किनको खबर नहि भेटतनि । करोड़क नफा मे उनैस–बीस तऽ रहबे करैत अछि । एतेक दिन तक जायदादक देखभाल हमरे द्वारा भेल । पैघ होयबाक किछु लाभ भेटिये गेल तऽ कोन अनर्थ ।

रबिवारक दिन छल । काज सँऽ अवकाश । अपन व्यैयक्तिक उद्देश्य पूर्ति मे प्रयासरत रहैत छलाह धरम बाबू दूनू गोटे एहि दिन । चाय काल, भोजनकाल इत्यादि उपयुक्त अवसर होयत अछि ताहि हेतु । चाहक आश मे बैठक दिश चहलकदमी कऽ रहल छलाह । माताजी संगे अभिमन्यु केऽ वार्त्तालाप देखि कऽ ठकमका जायत छथि । सुन्न जकॉ ठाढ़ भऽ गेलाह ; भेलनि कियो बायु चुषक यंत्र सँऽ प्राण सोखि रहल अछि । मनसूबा पर आफत बनि अभिमन्यु मनटुनमा के सामान बैठक हॉल मे राखि, हाथ–मुँह धोअ हेतु ईशारा कऽ रहल छलाह । सोचऽ लगलाह –''जकरे सँऽ भिन्न भेलहुँ सेह भेल बखरा'' । आन सब के' तऽ मनाओल जा सकैत अछि मुदा अभि, प्रारंभहि सँऽ जड़ि उखाड़ऽ मे लागल रहैत अछि । मन मे कोनों बात आब' सँऽ पहिलें हिनक जुबान पर चलि आबैत छनि । सबटा गुड़गोबर

भेल । मुदा ई किएक आकाश सॅऽ टूटल तारा जकॉ एहि ठाम अचानक खसलाह । स्वचालित कदम सॅऽ बैठक तक पहुँचि सकलाह । गंभीरता संग अभि बाबू चरणस्पर्श करि बजैत छथि – ''हम ओहि ज्येष्ठ भ्राता के चरण–स्पर्श कयलहुँ जे अपन छोट भ्राता के पुत्र सन प्रेम प्रदान करऽ के हृदय रखैत छथि – ओकरा प्रति डाह, ईर्श्या, द्वेष आ वैमनस्य पालि दुश्मन नहि बूझैत छथि । ई कतई नहि आभाष हो कि हम परिस्थिति वश झुकि गेलहुँ'' ।

''तोरा झुक' वा नहिं झुक' हेतु हम नहि कहलहुँ अछि । तों हमरा सब पर द्वेषवश अनाप–सनाप इल्जाम लगबैत रहल छह, से नीक गप नहि'' – भाई साहब एखन तक होश सम्हारि चुकल छलाह ।

''तऽ की ई बात गलत अछि जे अहां खजूर बन्नी बला गढ़हा जमीन बेचि कऽ वारे–न्यारे होम' चाहैत छी ? की अहां भौजी के संदेहास्पद हरकत सॅऽ वाकिफ नहि छी ? साझा संपत्ति हरपऽ हेतु नीचता के पराकाष्ठा आब कतऽ भेटत । अगर हत्या जुर्म नहि रहित तऽ अहां एहि रास्ता अख्तियार करऽ सॅऽ परहेज करितहुँ, हम कोना बूझि'' । हृदय मे चुभल शूल सॅऽ दो–एक निकालि वापस करैत क्षण अभि बाबू के चेहरा पर संतोष छलनि ।

क्रोध सॅऽ भड़कि गेलाह धरमबाबू । आक्रमण सब सॅऽ बेस बचाव थिक – एहि नीति के ओ पक्षधर छलाह । गरजि उठलाह – ''ई सब प्रपंच तों हमरा सब पर कोन दुश्मनी निकाल' हेतु मढ़ि रहल छह, से हम नहि कहि । सालों धरि चुप रहलहुँ आब नहि रहब । मानहानि के मुकदमा दायर करब तोहर विरूद्ध'' ।

''ई सब दाव–पेंच आब चल' बला नहि अछि । शौक सॅऽ केस स्थापित करू । ओहि सॅऽ पहिने हम अहां सपरिवार पर एफ.आई. आर. करऽ जा रहल छी जे सांझा संपत्ति मे हिस्सा मांग कयला

सॅऽ सब गोटे मिलि कऽ हमरा पर हमला कऽ देलनि । अहां अपन बात एहि जनम मे सिद्ध नहि कऽ सकब मुदा हमरा एहि मुद्दा के सिद्ध करऽ मे बेसी समय नहि लागत'' । नैतिकता जखन एकतरफा रहल तऽ ओ दबंगक रखैल बनि जायत अछि । घृणावश हम एतेक दिन सॅऽ दूर रही । लेकिन अहां सबहक हेतु ई एकटा वरदाने सिद्ध भऽ रहल अछि –'ब्लेसिंग इन डिसगाइज' ।

अभिमन्यु सॅ एहि प्रकारक प्रत्युत्तर पाबि भीतर तक कांपि गेलाह धरम बाबू । जानबूझि कऽ अभि बाबू हिनक परिवार के जिक्र कयने छलाह । धरम बाबू खास कऽ अपन पुत्र संतोष केऽ विशेष स्नेह ओ लाड़–प्यार प्रदान करि पितृधर्मक पालन करैत छलाह । रूपया–पैसा झोंकि देला बावजूद संतोष मौज–मस्ती छोड़ि मजदूर जकां बान्हल जिंदगी एको क्षण बिताब' हेतु तैयार नहि छलाह । इंजिनियरिंग मे फेल भऽ वापस घर पर आवारागर्दी मे लिप्त भऽ गेलाह ।

बेटा जखन अपन बूत्ता पर नहि बढ़ि सकत तऽ मॉ–बापक धन–अर्जन चिंता द्विगुनित भऽ जायत अछि । ओ सोचैत अछि एतेक छोड़ि जाय जे हिनकर जिंदगी आराम सॅऽ गुजरि जाय । नाम तऽ लेत । बस एहि ठाम अनाचार, क्षुद्रता, अमानवीयता ओ अनैतिकता प्रारंभ भऽ जायत अछि । ओ कदापि नहि सोचैत अछि जे एहि क्रम मे जीबैत मे अहां कतेक संग घात कयलहुँ, येन–केन–प्रकारेण घिनौना तरीका सॅऽ अर्जन कयलहुँ, कतेक लोकक माल हड़पि गेलहुँ । ओ सब दिल खोलि कऽ श्राप देताह । जीवैत मे गारि सुनलहुँ । मरला बाद बिगड़ल पुत्र नाम लेताह, एकर नगण्य उम्मीद रहितो ओहि राह पर चलि साबित जिंदगी बरबाद करैत छथि । सिर्फ सत्कर्म सॅऽ अर्जित नाम अनवरत चलि सकैत अछि । कुमार्ग पर चलि कऽ नाम

सिर्फ बदनाम होयत । मुदा धरम बाबू एहि पृथ्वी के लोक छलाह । बेटा बिगरि गेल ताहि सॅऽ की, छी तऽ हमरे खून । अपने खून तऽ काज आयत । जहन अभि बाबू परिवार शब्द प्रयोग कयलनि तऽ स्वाभाविक तौर पर ओ बैकफुट पर आबि गेलाह । बात सम्हारऽ चाहैत छथि – ''हमर आशय अछि जे ओ जमीन मॉ के नाम पर अछि, हम कोना बेचि खायब । भौजी पर तों नाजायत आरोप लगाबि केऽ हमर प्रति अविश्वास पैदा करऽ चाहैत छह । तोहर एकहि उद्देश्य छह अपन हिस्सा प्राप्त कऽ, बेच–बिकिन पड़ा जायब'' ।

अभि बाबू पालथी मारि चौकी पर बैसि जायत छथि । दीर्घ श्वांस छोड़ैत बजलाह –''दूधक–दूध आ पानीक–पानी भऽ जायब आब जरूरी अछि । सैह उद्देश्य लऽ हम आयल छी । अपन–अपन व्यक्तिगत स्वार्थ हेतु सब चुप छथि । मुदा हम एहि बेरि सोचि कऽ आयल छी, दोषी व्यक्ति सॅऽ गलती स्वीकार करा केऽ रहब । आगू सॅऽ सत्पथ पर चलऽ के वचन लऽ के रहब । हम देखि रहल छी सामूहिक संपत्ति पारिवारिक वैमनस्य बढ़ाब' मे आगि मे घी केऽ काज कऽ रहल अछि । प्रत्येक भाय अघवयशता पार कऽ चुकल छथि । आब समान ओ स्वीकार्य रूप मे बॉटि लेब अति आवश्यक अछि । अहां ओ सुन्दर भाय सामूहिक सम्पत्ति के स्वच्छंदता सॅऽ उपयोग कऽ रहल छी, अतः बॅटवारा सॅऽ परहेज अछि । रहल हमर बात, हम अपन हिस्सा बेचि कि राखी हमर अधिकार अछि । जा धरि सब सॉच–झूठक फैसला नहि भऽ जाय हम एहि चौकी पर काल्हि सॅऽ आमरण अनशन प्रारंभ करब'' ।

धरम बाबू आब धर्मसंकट मे पड़ि गेलाह । दूर रहि कऽ चाहे जे करितय हमरा सब पर आंगुर नहि उठैत । शुरूआते सॅऽ माछक कांट जकां अटकल रहैत अछि । आब तऽ माथ पर आबि बैसि गेल

। नहि किछु तऽ बबाल जरूर काटत, सेह तैयारी लऽ आयल अछि । किन्तु जखन ऊखरि मे मुँह दऽ देल तऽ डरब किएक । हमरा खिलाफ कोन सबूत छनि जे हम डेरायब । धमकी दऽ रहल छथि । किछुए दिन मे होश ठेकान अयतनि तऽ पड़ैयताह । मनक गुबार पर काबू कऽ सलाह देलनि – ''परिवार मे राजनीति नहि करऽ चाही । दूनू क्षेत्र अलग ओ असंपृक्त अछि । एहि ठाम मोल–भाव नहि, प्रेमभाव चलैत अछि । जहन किओ तोहर बात सँऽ इत्तिफाक नहि राखल तऽ दबाव डाल' हेतु ब्योंत रचलह अछि'' ।

धरम बाबू मुँह सँऽ परिवार प्रति संवेदनशील विचार सुनि ऑखि मिला कऽ मुस्कुरा भरि दैत छथि । धरम बाबू झेंपि कऽ रहि जायत छथि । सम्पूर्ण संवाद मे एक शब्द ''आमरण अनशन सुनि माताजी विकल भऽ वार्त्तालाप के मध्य आबि अपन सपथ दऽ दूनू गोटा के शांत कयलनि । घर भरि मे हाहाकार मचि गेल कि अभिमन्यू आमरण अनशन पर बैसि रहल छथि । एक आपदा सँऽ कम नहि मानल जा रहल छल धर्मसभा सदस्य द्वारा । प्राकृतिक आपदा तऽ समाजक सभ व्यक्ति हेतु समान खतरा उत्पन्न करैत अछि । मुदा ई तऽ एक पारिवारिक आपदा छल । एहन आपदा जे सिर्फ एक परिवार के मान–मर्यादा, आत्मसम्मान ओ सामाजिक प्रतिष्ठा पर आघात करत । किछु छुपल आंतरिक बात समाज मे उजागर होयबाक आशंका छल । एखन धरि सुविधानुसार व्याख्या व्यक्त कऽ देल जायत छल – अभि पैघ लोक भऽ गेलाह, आब किएक घर–परिवार तरफ देखताह..... वगैरह–वगैरह..... ।

मनोरमा आई भनसा मे विशेष व्यस्त छलीह । अभिमन्यु के मनपसंद व्यंजन अपन यादास्त सँऽ खोदि–खोदि कऽ बाहर कऽ रहल छथि । बेसी दिन पड़ल रहत तऽ लोहा मे सेहो जंग लागि नष्ट होम

लगैत अछि, ई तऽ सांसारिक दिमाग थिक । कतेक प्रकारक ऊँच–नीच प्रत्येक क्षण आबैत–जाइत रहैत अछि । कतेक मोन राखि ? समय केर संग व्यक्ति के पसंद–नापसंद सेहो बदलि जायत अछि । बड़की सँऽ कोनो भांज लगाबऽ कहैत छथि । ओ हाहापुर के दैत्यिन सन क्रुद्ध भऽ डपटि बजलीह – तों दूनू प्राणी अपन दुरंगी नीति पर सदिखन चलिए कऽ जग जीतऽ चाहैत छअ । हमरा संगे से नहि । दुश्मन सदिखन दुश्मने रहत । हमरा डाईन कहैत छथि । हँ ! छी हम डाइन । की कऽ लेताह हमर ? अपन जान–सम्हारौथ ग ।

मनोरमा : बुद्धिमानी कहैत अछि – जखन दुश्मन बलिष्ट भऽ जाय तऽ दोस्ती कऽ ली । आब ओ किनसाइत सांसद भऽ जयताह ।

ललिता : चाहे जे भऽ जाथि । हमरा पर कोनो फर्क नहि पड़ैत अछि । देखल जयतैक ।

मनोरमा : ओ तऽ बँटवारा हेतु सेहो अड़ल छथि । अपना सब तऽ एहि तरफ सँऽ निश्चिंत छलहूँ जे कम–सँ–कम अपन जिंनगी भरि घर–द्वार हेतु नहि सोच' पड़त ।

ललिता : ओहि हेतु माँ सेहो नहि राजी छथि । ओ कहाँ अपन जीवैत अपन हाथ सँऽ गठरी छोड़ बाली । कोनो चाल कामयाब नहि होयतनि ।

मनोरमा : हमरा तऽ शंका बुझना जायत अछि । ओ तऽ गाम तरफ मुड़ियो कऽ नहि देखैत छलथि । एहि बेरि अनशन तय कऽ आयल छथि । बड़ सोचि–विचारि तय कयलनि अछि । सबटा पेंच खुलि जायत एहि बेरि । अपन खूनक दुर्गति कतेक दिन तक बर्दास्त कऽ सकताह ई लोकनि । नीक होयत हिनका एहि पथ सँऽ मोड़ल जाय । धाखक जे ढ़ाल टूटि चुकल अछि ओ पुनः जोड़ि कऽ ई काज भऽ

सकैत अछि ।

ललिता मुँह बिचका क' मौन स्वीकृति दैऽ अपन पूजा–पाठ मे तल्लीन भऽ गेलीह ।

ड्राविंग हॉल कहि अथवा रूम एके गप । रूम आकार मे पैघ रह' कारण हॉलनुमा छल । गेट पार कऽ बरामदा । हॉल सँऽ गेट बरामदा पर खुलैत छल । भीतर सँऽ अलग द्वार हॉल के घरक अन्य भाग सँऽ जोड़ैत छल । हॉल बाहरी बैठक छल । बाहरी लोकक अनुपस्थिति मे आंतरिक सभा आयोजन ओ वैचारिक द्वंद केर गवाह ईएह हॉल छल । मनटुनमा ईशारा पाबि सब सामान हॉल मे व्यवस्थित रूप देब' मे लागल छल । टेबुल पर रेडियो, कलम–कॉपी, नॉवेल, गॉधीजी ओ स्वामी विवेकानंद संबंधित किताब इत्यादि । आइना–कंघी, पानी–बोतल, दैनिक काज मे आब' बला अन्य सब सामान दीवार मे बनल रैक पर राखल गेल छल । कुल मिला कऽ कमरा घर कम रेस्टरूम बेसी लागि रहल छल ।

गरम–गरम रोटी घी लागल, डालना, रायता, नींबू–अचार, सेबै ट्रे मे लऽ मनोरमा आवाज देलनि – कत' छी, नास्ता कऽ लिअ तखन चाह बनतैक ।

ट्रे सँऽ व्यंजन केर खुशबू उड़ि–उड़ि कऽ अपन स्वादिष्ट होयबाक प्रमाण पेश कऽ रहल छल । भौजी के तरफ देख' सँऽ पहिले एक नजर ट्रे पर मारि कऽ कहैत छथि – ''हम एहि ठामक अन्न जल ग्रहण नहि कऽ सकैत छी जखन तक हमर उठाओल प्रश्न पर फैसला नहि भऽ जाय । अहां कष्ट नहि करू, आजुक हेतु हम इंतजाम कऽ क' चलल छी । काल्हि सँऽ हमर अनशन जारी रहत'' ।

माताजी बीच मे बाजि उठैत छथि – ''किएक एहि बुढ़ापा मे हमर

सबहक माटी पलीद कऽ रहल छह । घर मे अनशन कयल जायत छैक ? आस–पड़ोस लग मुँह देखाबऽ लायक नहि बॉचब हम सब'' ।

''घर मे अनशन करऽ पड़य से तऽ स्वयं मे अपमानजनक । मगर एहि निर्णय तक आब' हेतु हम पॉच साल के समय लेलहुँ । एहि बीच कोन–कोन उपद्रव नहि कराओल गेल हमरा संगे । मुदा सब अपन इज्जत ओ स्वार्थ तक सोचि सकल । हमरा हेतु अन्याय बर्दास्त करब पल–पल मृत्यु समान अछि । अतः आब चारि लोकक सोझ मे भरसिया–बला के बजा कऽ जॉच कराओल जाय जे हमर लगाओल आरोप सांच अछि की झूठ । बाबूजी केर मृत्यु स्वाभाविक छल की करामाती । परिवार मे बढ़ल स्वार्थ पर रोक, सम्पत्ति के न्यायपूर्ण बॅटवारा भऽ गेला पर स्वयं लागि जायत । अतः ताहि हेतु उचित कारवाई अविलंब भऽ जयबाक चाही । जज हेतु मायने नहि राखैत अछि जे हत्यारा ओकर कतेक निकटतम व्यक्ति अछि । जॉच कऽ अपराधी घोषित करऽ मे ओकर सामाजिक प्रतिष्ठा हनन नहि होयत छैक'' । कृत संकल्प मुद्रा मे अभि बाबू उद्घोषणा कयलनि । ''ई कोन बात भेलैक ? हमरा हेतु जहिना तों छह तहिना धरम । कोन जरूरी जे भरसिया–बला सॉच बाजय ? बदनामी अवश्यंभावी छैक । फेर धरम कोना मानत'' ? माताजी अपन चिंता प्रकट कयलनि ।

अभि बाबू कठिन सवाल हल करऽ के प्रथम सोपान पर छथि । अतः उत्तर तक पहुँच' के एखन लालसा नहि छलनि । उदासीनता संग स्पष्ट कयलनि – ''अहॉ सब अपन–अपन काज मे लागल रहू । हम अपन पिता केऽ द्वार पर अयलहुँ अछि । ओ नहि छथि तऽ कोनो बात नहि । हुनकर उपयोग कयल ई चौकी, हुनक उपस्थिति जता

रहल अछि । भरसिया बला मोहल्ला मे प्रचलित गूणी छथि । एहि घरक कोन सदस्य अछि जे चुपचाप अपन झाड़–फूँक करा कऽ नहि बैसल छथि । डर ओ स्वार्थ सभक मुँह पर ताला लगौअने अछि । हम एहि घिनौना खेल खेल' बला व्यक्ति केऽ मुँह पर सँऽ परदा हटा कऽ रहब । चाही तऽ दू–तीन तांत्रिक संग नेने आबि सकैत छी । मुदा सत्य ओ न्याय के प्रति आंतरिक उद्वेग अपन परिवार मे जगाएब हमर उद्देश्य अछि'' । मुँह सँऽ खून बहऽ कारण उठि कऽ बाथरूम मे जा कऽ साफ करैत छथि ।

कोनो चारा नहि देखि माताजी चुप भऽ गेलीह । मनोरमा ससरि कऽ भीतर भागि जायत छथि । माताजी द्वारा आग्रह कयला पर अभि बाबू कहैत छथि – ''मनटुन गेस्ट छथि, हिनकर ध्यान राखल जाय । ऋषि के फोन कऐक बेरि आबि चुकल अछि । रात्रि भोजन बादे हम आबि सकब । हमर इलाज सिर्फ वक्त के गर्भ मे अछि, समय स्वयं समाधान बनि जायत'' ।

.....

१६

अभि बाबू के अनशन के प्रथम दिन । कोनो विशेष हलचल नहि । दिनचर्या आम दिन सन । विविध भारती सँऽ समाचार ओ सदाबहार गीत सुनि दिन आराम सँऽ बीतब प्रारंभ भेल । मैथिल घरक भीतर की भऽ रहल अछि ओ सदस्य सँऽ बेसी मैथिल पड़ोसी बता सकैत छथि । सदस्य तऽ वस्तुस्थिति पर सिर्फ एक–पक्षीय विचार रखैत छथि, दूनू पक्षक छिद्रान्वेसन कऽ वर्त्तमान ओ आदर्श स्थिति पर विचार सँऽ सराबोर रहैत छथि ओ परोपकारी पड़ोसी । समाचार जखन एहन आगिलगौन रहय तऽ ढ़ोलहा पीटब निरर्थक । चारू तरफ अनोर मचल – सालों सँऽ अदृश्य अभिमन्यु अनशन मंच पर अवतरित भऽ गेल छथि । दुपहर सँऽ जिज्ञासावश पास–पड़ोसक स्त्रीगण सभक लाइन लागि गेल । दूनू पक्ष संबंधित संतुलित एवं नियंत्रित बयान जारी होम' लागल । एहन बयान किएक दी जे कोनो पक्ष तमसा जाइथ ? आपसी झगड़ा मे हम किएक देखार होइ ? झगड़ा चलैत अछि तऽ चले । हमरा तऽ जानकारी सँऽ मतलब अछि । कोनो हम पंच छी ? नहि पांछॉ पड़ी तऽ भाफ नहि लागऽ देताह इत्यादि अनेक मनोभावना ।

हरिहर काका (सॉच कही तऽ काका के सुखौंती) पुरान छाता के एक गोट मजबूत लाठी वैशाखी रूप मे उपयोग करैत छलाह । लाठी के एक छोर मोड़ल रहला सँऽ पकड़ मजबूत रहैत छलनि । लाठी के मजबूती बेशी मायने नहि राखैत छल । जोर पड़ला सँऽ लाठी मुड़ि जायत अथवा काका, से नहि कहि । अपन जिंनगी के

आखिरी पड़ाव पर सूखि कऽ कॉट सन भऽ चुकल छलाह । छल–प्रपंच नहि छलनि ! हॅ मुँहफट अवश्य छलाह । लाग–लपेट रहित वक्तव्य तक्षण विस्फोटित करऽ कारण कियो लेभरेज नहि दैत छलनि । डाक विभागक पेंशनधारी छलाह । अभि बाबू विद्यार्थी समय मे पढ़ऽ हेतु हिनक पोस्टऑफिस केऽ स्टोर रूम उपयोग करैत छलथि । खूब पटैत छलनि काका सॅऽ । नागरिक–शास्त्र ओ राजनीति के अनेको प्रसंग वीर–रस मे लपेटि कऽ काका हिनका प्रदान कयने छलथि । संध्याकाल लाठी टेकैत अचानक हरिहर काका पहुँचि जायत छथि । हरि काका के एहि उजाड़ अवस्था मे देखि विस्मय पूर्वक अभिवादन कऽ बैसाबैत छथि । हिनका देखि कऽ अभि बाबू के चौबटिया पड़क महुआ गाछक याद आबि गेलनि । एक दिन फूल सॅऽ गमगम कर’ बला ओ गाछ आई कोना एक सुखल ठठरी सन ठाढ़ अछि । बुझना जाइत अछि सजा पूर्ण नहि भेला कारण ठाढ़ रहऽ हेतु मजबूर होय । जाहि दिन सजा पूर्ण कऽ लेत आराम सॅऽ लेटि जायत । 6 फीटक लंबाई, खादी कुरता ओ धोती पहिरने और आजुक हरि काका केर बीचक कड़ी छल । अहू मे किछु बदलाव ऊफान मारि रहल छल । झुकि गेला सॅऽ लंबाई कमतर ज्ञात भऽ रहल छल आ ऊज्जरि धोती आब वातावरणक प्रकोप सॅऽ कारी होम’ हेतु जिद कऽ रहल छल । अश्रुपूर्ण नेत्र सॅऽ हरि काका उलाहना देलनि – ‘‘बाऊ, पैघ लोक भेला पर बिसरि गेलहुँ । हम तऽ आन छी । घर सेहो त्यागि देलियैक । कोन सौभाग्य छल जे अहाँ सॅऽ भेंट भऽ गेल । मुदा जान देब’ पर किएक उतारू छी । कोन घरक हालत छिपल अछि, परञ्च अपन गलती मान’ बला केऽ भेटत आजुक समय मे ?

अभि बाबू : अहां सत्य कहैत छी । मुदा हम घर नहि छोड़लहुँ, घर

हमरा छोड़ि देलक । हिरण जखन विचरण करैत शहर पहुँच जायत अछि तऽ फेरि वापस अयला पर अपन झुंड मे स्वीकार नहि कयल जायत अछि । ओहि प्रकार, अगर अहां भेड़ चाल सँऽ भिन्न भेलहुँ तऽ परिवारक शब्द सँऽ अहां हेतु ''परि'' उपसर्ग हटा देल जायत । एक तऽ हमरा सँऽ दुष्टता कयल गेल दोसर एहि दुष्टता सँऽ स्वार्थवश आंतरिक खुशी प्राप्त करऽ बला व्यक्ति गोलबंद भऽ स्व. बाबूजी निर्मित एहि बगीचा के कलंकित कऽ देलनि । ओहि कलंक के धोअ के प्रयास कऽ रहल छी ।

हरि काका : सब किछु ठीक अछि, मुदा अनशन ! सामाजिक समस्या हेतु चौक पर भले अनशन पर बैसि जैतहुँ ओकर सफलता असंदिग्ध अछि । एहि ठाम एकर प्रयोग अटपटा लगैत अछि । दू–चारि दिन अनशन कऽ पड़ा जाऊ । बिसरि जाऊ एहि मकड़जाल के । अपन सुरक्षा करू, आ राजनीति मे संलग्न रहू । वाक्य समाप्त होमऽ सँऽ पहिले हरिकाका उकासी केऽ दौरा सँऽ बेहाल भऽ गेलथि ।

मनटुन पानि लऽ गिलास बढ़ौलनि । दोकान सँऽ चाय मंगा कऽ दूनू गोटा बांकी हाल चाल मे संलग्न भऽ गेलाह ।

हरिहर नाथ दूबे के देखि घरक सदस्य असमंजस मे पड़ि गेलथि । अभि सँऽ मिलि सब बात जानि लेताह । पेट मे किछु नहि पचैत छनि । एहि डाल पर सँऽ उड़ि तक्षण आन डाल पर बैसि कऽ सबटा कुचरि देताह । अपन बेटा–पुतोहु नहि सम्हरलनि, आन घरक पंचैती सांठैत छथि । पचहत्तर पार छथि, रामक नाम कि लेताह, ई त विभीषण खोजि रहल छथि । नाना–प्रकारक नुक्ताचीनी हरिकाका संबंधित विद्यमान छल ।

हरिकाका चलऽ काल पुनः आब' के आग्रह स्वीकार करैत कहैत छथि – आब तऽ काजे–पड़ोजन मे अबैत छी । हँ ! अहां जा

धरि छी, जरूर हाल–समाचार लैत रहब । खट .....खट..... खट.....खट.....! आवाज स्नै–स्नै मध्यम भऽ विलुप्त भऽ जायत अछि । अभि बाबू निर्निमेष बाट दिश ताकि रहल छथि । तय नहि भऽ रहल छनि – आवाज लाठी सँऽ निकलि रहल अछि कि काका के जूता सँऽ । लाठी पर एतेक जोर देब' हेतु हाथ मे शक्ति कहां छनि । सांझ मे घूर तापैत काल बाबूजी संगे आखिर तक बैस' बला हरि काका । आगि मध्यम पड़ला सँऽ कुरहरि सँऽ एकहि वार मे लकड़ी के गांठ चीर देब' बला हरिकाका । हृष्ठ–पुष्ट देह कोना एक दिन शक्तिहीन भऽ जायत अछि । शक्ति घटय वा नहि अंतिम मंजिल पर पत्येक व्यक्ति एक–न–एक दिन अवश्य पहुँचैत छथि । बावजूद एतेक दाव–पेंच मारा–मारी अहंकार, स्वार्थ, कपट ओ नीचता । धोखाधड़ी ओ कपट सँऽ अर्जित सब संपत्ति राखल रहि जायत । ऊपर सँऽ संतान ओहि संपत्ति के दुरूपयोग सँऽ बिगरि जायत से अलग ।

लोक सभहक त्वरित हस्तक्षेप सँऽ खिन्न भऽ गेलाह सब किओ । जनितो बात कोना अनजान बनि पूछैत छथि । बड़का गाम बाली कतेक नीच छथि । कहैत रहथि एहन दू–नीति अपने बेटा–पुतोहु संगे – कोना मन गवाही देलक ? बुझिऔक ! हम कोना दू–नीति कयलहुँ । हम किनकों रोकने छियनि । भाई–भाई मे नहि पटलैक तऽ माईक कोन दोख ? अपन दियादिनी केऽ कोना मारि भगोअलीह से ककरा सँऽ छिपल अछि । लोकलाज हेतु मुँह पर जबाव नहि दऽ सकला कारण माताजी मनोरमा लग अपन पक्ष प्रबलता सँऽ रखैत बजलीह । ओ जोड़ैत कहलथि – हरिकाका घंटो बैठक कऽ गेलाह । बॉचल गप बिना लिफाफक चिट्ठी जकॉ हाथों–हाथ होम' मे आब कोन देरी अछि । बड़की पुतोहु पूजा घरक हवन सामग्री उठाबैत

बजलीह – लोकक घर मे तांक–झांक करै बाली सब कि बिगाड़ि लेतीह । चारि–पांच दिनक उपासक बाद अभिमन्यु केऽ हिम्मत जवाब दऽ देतनि । झोरा–झंटा उठा दिल्ली भागि जयताह । मनोरमा आशंका व्यक्त करैत छथि – अभिमन्यु के मान–मनौव्वल कऽ उठाओल जाय । स्वंमेव तऽ ओ नहि हिलताह । बड़ हठी व्यक्ति छथि ।

समय पंख लगा कऽ उड़ि गेल । अनशन पर बैसल अभि बाबू के स्वास्थ्य दिन–प्रतिदिन गिर रहल छल । चौबीसो घंटा सिर्फ पानि पर लोक कोना रहि सकैत अछि । जिद, हठ, नादानी अथवा मूर्खता, लोक सभ अपन समझ अनुसार नाम दऽ सामाजिक कर्त्तव्य केर निर्वाह कयलनि । परिवार पर एक अदृश्य सामाजिक दबाव बढ़ल गेल । एहि बीच बेरा–बेरी सॅऽ पड़ोसक सब व्यक्ति अभि बाबू केऽ समझा–बुझा कऽ हारि गेलाह । ओ अपन निश्चय पर अटल छथि । ओझा के बजाऊ । जॉच तऽ होम' दिऔक । दोषी व्यक्ति सिद्ध भेला पर माफी मांगथि आओर आगू नेक राह ओ सतपथ पर चल' के शपथ लेथि । दूनू जेठ भ्राता ओ भावज घरक एकता छिन्न–भिन्न करऽ केऽ दोषी छथि । जा धरि मॉफी नहि मांगि लेताह आ साझा संम्पत्ति के न्यायपूर्ण बॅटवारा हेतु सहमत नहि भऽ जयताह हम हिल नहि सकैत छी ।

एगारहम दिन । पेट धॅसि कऽ पांजर संग गरा मिल' रहल छल । ऑखि निस्तेज । देख' हेतु किछु हद तक खुलब जरूरी छल, नहि तऽ बंद रहऽ चाहैत छल । धंसल गाल पर चारो तरफ बढ़ल दाढ़ी । बुझना जाइत छल दाढ़ी द्वारा गालक बदहाली नहि देखल गेल आ ओ अपन सम्पूर्ण शक्ति सॅऽ झांपन देब' हेतु प्रतिबद्ध अछि । उठ'–बैठ' हेतु सहारा मनटुन दऽ रहल छलनि । आर किनको

आदेश नहि छनि । पीब' हेतु जल पर्यन्त बाजार सँऽ मंगाओल जायत छल । साफ तर्क छलनि – अपन उद्देश्य पूर्ण होम' सँऽ पहिले हम एहि ठामक जल तक ग्रहण नहि कऽ सकैत छी । रेडियो पर भजन, समाचार ओ विविध भारती सुनब, दिनचर्या छलनि । मन भेल तऽ किछु लिखा–पढ़ी कऽ लेलनि । चौक पर प्राचीन शिव–मंदिर छल । प्रारंभ मे संध्या कालीन आरती समय पहुँच जाइत छलाह । आब शक्ति जबाव दऽ गेलनि । लाउडीस्पीकर सँऽ आरती केऽ आवाज सुनि मनमग्न ओ संतुष्ट भऽ जायत छथि ।

खतरा केर घंटी बाजि चुकल छल । हर तरहक आकलन निरर्थक सिद्ध भेल । सोलह दिन सिर्फ जल पर रहि अभिमन्यु मरनासन्न भऽ गेलाह । हड़कंप मचि गेल ''धर्मसभा'' मध्य । आस–पड़ोस सँऽ निकलि बात सम्पूर्ण परोपट्टा मे फैल चुकल छल । एक तरफ प्रचंड सामाजिक दबाव दोसर तरफ मृत्युशैय्या पर अभि बाबू केऽ शांत मगर प्रतिबद्ध ओ ओजस्वी मुखमंडल । चहुँ ओर सहानुभूति केर लहर उठि चुकल छल । रक्त–संबंधक सीमा अपन अग्नि परीक्षा दऽ रहल छल । छल–प्रपंच, स्वार्थ, घात–प्रतिघात सन दुर्दान्त ओहि परीक्षा के विफल कर मे जुटल छल । स्नैः–स्नैः मृत्यु तरफ कदम बढ़ाब' बला अपनहि निज भ्राता छथि । अन्याय ओ अनुचित आचरण रोक' हेतु प्रतिबद्ध छथि तऽ कोन अनर्थ ? एहि तरह सार्वजनिक रूप सँऽ कुर्बानी प्राप्त कऽ अगर कोनो स्वार्थ सिद्ध भऽ गेल तऽ कोन तरहें पचा सकब ? अपराध बोध भरि जिंनगी चैन नहि लेब' देत । अंतर्मन मे उठ' बला सुविचार आब भ्रातृवृंद पर मुखर भऽ चुकल छलनि ।

आखिरकार खूनक रंग लाल सिद्ध भेल । भ्राता जन आब अनशन समाप्त कराब' मे एकमत रखलनि । धरम बाबू के एक तरफ

बजा कऽ पत्नी कहैत छथि – ''अहां चाहे जे करी मुदा हमरा पर कोनो दबाव नहि दऽ सकैत छी । हम एहन गीदरभभकी सँऽ नहि डरब । जखन हम कोनो गलत काज नहि कयलहुँ तऽ किएक माफी मांगब । ओ जे कहताह से मानि लिअ । किएक ? कत' के कानून हम तोड़लहुँ अछि'' ।

धरम बाबू : ''झूठ–साँच के पुछलक ! कहि देब' मे की लगैत छैक । हठ टूटि जयतनि । जान छूटत'' ।

पत्नी : दस लोकक बीच मे कोन मुँह देखाएब ? अहाँक संबंध सहोदर अछि । हमरा पर कोनो असर नहि पड़ बला अछि'' ।

धरम बाबू निरूत्तर भऽ जायत छथि । स्वेच्छाचारी व्यवहार पर प्रारंभ सँऽ रोक नहि लगौअलनि । आई अचानक कोना संभव छल । ओम्हर, मनोरमा सेहो अपन जेठानी सँऽ सहमत छलथि ।

हारि कऽ धरम बाबू हरि काका के आग्रह कयलनि । एकटा वैह छथि जे एहि परिस्थिति मे अभि के समझा सकैत छथि । एड़ी–चोटी के जोर लगा देलनि कहुना अभि अपन अनशन तोड़ि देथि । हरि काका सँऽ विनती कयलनि – हमरा सँऽ जे सम्भव भऽ सकैत अछि हम वैह कऽ सकैत छी । आन के भागी कोना होयब । कहियौन आब अन्नग्रहण कऽ लेथि ।

हरि काका धरम बाबू के ललाट पर चिंता केर स्पष्ट रेखा महसूस कऽ रहल छथि । एहि मे सिर्फ समाजिक कोपक आशंका नहि छल । एहि मे सिर्फ एकटा आफत टार' के लालसा नहि छल । एहि मे लाखों केर सम्पत्ति मध्य बनल कंटक के विलुप्त होम' सँऽ उत्पन्न होम' बला मनोदशा सेहो नहि छल । स्नैः स्नैः मृत्यु केर आगोश मे अग्रसर अनुज के' जीवन–रक्षा के व्याकुलता अवश्य समाहित छल । अभिमन्यु केऽ जिद आखिर रंग आनि रहल अछि ।

स्वार्थ, डाह ओ वैमनस्यक बेदी पर छिन्न–भिन्न भेल परिवार, समरसता के सरोवर मे अवश्य गोता लगोओत । स्नेहक बयार जखन बह' आगल तऽ बवंडर केऽ रूप धारण करऽ मे बेसी क्षण नहि लगैत छैक । हरिकाका अबिलंब सुसमाचार सुना कऽ सामान्य रूप धारण करऽ हेतु अभि बाबू सॅऽ कहैत छथि ।

बीस दिन निराधार रहलोपरांत ओ आब बाज' के अवस्था मे नहि छथि । पांजर कत' आ पेट कत' केऽ कहत । दाढ़ी बढ़ल ! श्वेत रंगक मध्य एखनहुँ अनेक कारी रंगक मिश्रण उम्रक अंदाज लगाब' बला केऽ सचेत करऽ हेतु काफी छल । ऑखिक पिपनी अपन हरकत सॅऽ अन्यथा सोचऽ सॅऽ रोकि रहल छल । हॅ ! बीच–बीच मे पीड़ामिश्रित आह ! सुनि कऽ सहज अंदाज लगाओल जा सकैत अछि जे ओहि शब्द के रोकऽ के अथक प्रयास निरर्थक भेल अछि । हरिकाका हिनक अवस्था देखि असमंजस मे पड़ि गेलाह – हम लाचार भऽ गेल छी कि अभिमन्यु ? हम पैघ छी कि अभिमन्यु ? हरिकाका के देखि चेहरा पर हल्लुक मुस्कान लऽ बैस' हेतु ईशारा कयलनि ।

हरि काका : अभि ! एहि सॅऽ पहिले कि जल मस्तक पार भऽ जाय जल्दी चेतु । आब तऽ अहां के भ्राताजन अहां कहऽ अनुसार राग–द्वेष बिसरि गरा मिल' हेतु तैयार छथि ।

अभि बाबू के मुख पर एक पल आभा बिखरि जायत अछि । बहुत प्रयास कऽ किछु बाज' मे सफल होयत छथि – ''हमर परिवार मे सिर्फ भ्राता ही नहि भावज सब सेहो सम्मिलित छथि । परिवारक परिभाषा तऽ विवाहोपरांते बिगड़ल अछि । जा धरि सबहक भागीदारी नहि होयत, ई क्षणिक सुःख रहत'' ।

हरि काका : हौ जी, अहांक खून जखन एक भऽ रहल छथि तखन

किएक जान देब पर उतारू छी । भावज सब दोसर घर सँऽ आयल छथि । एहनो भऽ सकैत अछि किओ सोचैत होथि भऽनै चलि जाथु । जान छुटत । तऽ की जान देबैक ?

अभि : भ्राता जन सँऽ बेसी अपराधी भावज छथि । अक्षम्य अपराध कयलनि अछि । अगर अपराध स्वीकार कऽ माफी धरि नहि कबूल छनि तऽ दंडक भागी छथि । भ्राताजन मे एतेक सामर्थ्य छनि ..... वाक्य पूर्ण करऽ सँऽ पूर्व एक घूँट जल ग्रहण करब आवश्यक भऽ गेलनि । सूखि रहल होंठक तृप्ति हेतु अति–आवश्यक छल । परञ्च किछु पल बाद रक्तमिश्रित लार बाहर आबि समीपक पीकदानी लाल कऽ देलक ।

अभि बाबू विचलित नहि छथि । रक्त ओ वायु के तमाशा सँऽ ओ पूर्वपरिचित छथि । दूनू भाई समीप ठाढ़ भऽ सुनि रहल छलथि । एकाएक नजरि झुकि जाइत छनि । हरिकाका प्रश्नवाचक मुद्रा मे नजरि मिलाबि प्रस्थान करैत छथि । मुदा तक्षण मनटुनमा केऽ कात लऽ जा कऽ किछु बुझाबैत छथि ।

.....

१७

आई थुथमा साहेब जेल सॅऽ रिहा भऽ रहल छथि । एक मास तक सश्रम कारावास एक साल सॅऽ कम नहि प्रतीत भेलनि । अथक परिश्रम, ऊपर सॅऽ सूखल–जरल खेनाई । वजन संग उमिर सेहो घटि गेलनि । अपन अनुभव सॅऽ आब ओ वजन कम करऽ हेतु जिमक बजाय जेल जयबाक सलाह देताह । फाटक सॅऽ बाहर आबि एक बेरि शुन्य दिश तकैत छथि तऽ दोसर बेरि अपन घटल पेट दिश । दौड़ैत पहुँचलाह अभि बाबू के निवास पर । एक बारगी सुलेखा ओ योगमाया केऽ सामना करऽ मे सकुचा गेलथि । अत्यंत चिंतित भाव सॅऽ सुलेखा मनटुन द्वारा प्राप्त अभि बाबू केऽ समाचार सॅऽ अवगत कराबैत छथि । जेल सॅऽ रिहा होम’ केर खुशी पड़ा गेलनि । अविलंब कटिहार चलऽ के इच्छा जाहिर कयलनि । सुलेखा आलोक केऽ इंतजार कऽ रहल छलीह । आलोक सांझ तक लंदन सॅऽ पहुँच रहल छलाह तत्पश्चात् सबगोटे रात्रि 10 बजे केऽ फ्लाइट सॅऽ पटना उतरि टैक्सी सॅऽ कटिहार पहुँताह ।

‘धर्मसभा’ मे घमासान मचल अछि । आब गुटबाजी अपन रंग ओ रूप मे परिवर्त्तन ग्रहण कऽ चुकल छल । अभिमन्यु ‘‘धर्मसभा’’ मे व्याप्त गुटबाजी मे सेंध लगा चुकल छलाह । पुरूषक गुट कोनो हालत मे अभिमन्यु के अनशन खत्म कराब’ हेतु उद्यत छल जबकि ‘स्त्री’ गुट अपन भावी पूर्वाग्रह सॅऽ ग्रसित छलीह । हिनका हेतु अभिमन्यु केर शर्त्त अनुसार माफी मांगि लेब सामूहिक आत्महत्या सन प्रतीत होइत छलनि । नाते–रिश्तेदारी अछि, समाज अछि । काल्हि कोन मुँह लऽ सभहक सोझ आयब ? नहि भऽ सकैत

अछि से । हम कोन अपराध अयने छी ? हुनका कहि देला सॅऽ हम डायन भऽ गेलहुँ । ई तऽ हमर खिलाफ षड्यंत्र भेल । माताजी दलील देलनि – ओ तऽ भरसीया–बला के बजा कऽ जांच कराब' हेतु सेहो कहि रहल छथि ।

ललिता : सोझे–सोझ किएक नहि हमरा घर सॅऽ भगा दैत छथि । हमरे नाम पर किएक ओझा–गुणी होयत ?

मनोरमा एहि घमासान मे चुप्पे रहि गेनाय नीक बुझैत छथि । आई घर–दुआर सबहक मध्य बॅटि गेल तऽ चारि टा बेटी केर बिवाह कोना होयत । माताजी कहैत छलीह गरहा बला जमीन बिकला सॅऽ किछु पैसा छौरी सबहक विवाह हेतु फिक्स कऽ देब – ओहू पर आफत । एखन ओहुना बड़की फॅसल छथि । हम किएक माइनजन बनी ।

प्रातःकाल मतगणना समय पर प्रारंभ भेल । प्रतिपलक खबर पर नजरि राखऽ हेतु उपयुक्त परिस्थिति एहि परिवारक कोनो सदस्य लग नहि छलनि । मुख्य कर्त्ता अपन सिद्धांत, अपन संवेदना, अपन दृष्टिकोण आ अपन जिद आओर सबसॅ बेसी पारिवारिक चक्रव्युह मे उलझि गेल छथि । प्रतिपल एक कतरा जिंदगी मुट्ठी केर रेत जकॉ ससरि रहल छलनि । हालॉकि टी.भी. सेट लग एकटक ध्यान हरिकाका के लागल छलनि । प्रारंभिक रूझान मे नृत्यगोपाल यादव 6 हजार मत सॅऽ आगा छथि – जानि कऽ हरिकाका केऽ निराशा बढ़ि गेलनि ।

दिन चढ़ैत साथ सब गोटे दिल्ली सॅऽ पहुँचि जायत छथि । अभि बाबू के हालत देखि सुलेखा सामान फेंकि हिनक सिरमा धऽ लैत छथि । आलोक हॉस्पिटल मे भर्त्ती कराब' हेतु कोनो प्रयास बॉकि नहि रखलक मुदा ओ अड़ल छथि । ई हमर साधना अछि, तप अछि, बीच मे छोड़ि कतहु नहि जायब, जान के परवाह नहि

अछि । सुलेखा अत्यंत मर्माहत छथि, साथहि आक्रोशित सेहो । परिवारक वैयक्तिक नीचता पर एक तरफ आक्रोश छनि तऽ दोसर तरफ अभि बाबू के उत्कट संवेदनशीलता पर । एकसर व्यक्ति कतहुँ मानवीय क्षुद्रता के समाप्त कऽ सकत ? एक जान चलि गेला सँऽ की परिवार ओ समाज सुधरि जायत ? किछु दिन बाद सब अपन–अपन काज मे लागि जयताह । आबहु समय अछि । ऊठू ! अपन हाथें अपन भविष्य निर्माण मे लागल रहू । जे पाछां छूटि गेल, बिसरि जाऊ । कलियुग मे जी रहल छी, मुदा सतयुगक उत्कंठा नहि छोड़ि सकलहुँ । ई तऽ सेह' बात भल – एक जाइत राहड़ि, नगरक बाहरि । मुदा सब बेकार । ओ सब सुनि रहल छथि ऑखि खोलि कऽ । नोर अपन राह बीच–बीच मे ताकि लैत छल, मुदा होंठ पर मुस्कुराहट । ललाट पर कष्टक कालिमा । दोपहर बाद पहिल बेरि मतगणना केर रूझान अभि बाबू पक्ष मे आयल । ओ 1411 मत सँऽ यादवजी सँऽ आगा चलि रहल छलाह । रहि–रहि कऽ अत्यंन्त कम अंतर उलट–फेर सँऽ जारी छल । हर्ष ओ विस्मय अपन पराकाष्ठा संग एहि परिवार पर मचलि रहल छल । थुथमा साहेब हाथ जोड़ि कऽ एक बेरि स्त्रीगण सँऽ आ दोसरि बेरि अभि बाबू सँऽ विनती कऽ थाकि गेलाह । हारि कऽ आलोक संगे डॉक्टर बजाब' हेतु दौड़लाह ।

गोधूलि बेला प्रारंभ छल । सूर्य देवता पश्चिम दिशा मे लाल टुह–टुह भऽ खिड़की सँऽ स्पष्ट ताकि रहल छलाह । जेना कोनो बालक केऽ लाचार हालत देखि पिता असहाय भऽ ऑखि फाड़ि तकैत अछि, मुदा किछु कऽ नहि सकैत अछि । अभि बाबू शुन्य मे ताकि रहल छलाह । सब किछु चौन्हियायल जकां बुझना जाइत छलनि । चेतना वाहक तंत्र काज कऽ रहल छलनि । परिवेशक

हलचल सँऽ संज्ञान अवश्य होईत छलनि ।

शिवमंदिर सँऽ भजन केर स्पष्ट आवाज आबि रहल छल । मगन भऽ सुनि रहल छलाह :

शिव–शंकर भोले दानी, प्रभु सुन लो मेरी कहानी ।

.....

तेरी शरण मे आया देखो एक अनाथ अज्ञानी

शिव शंकर भोले दानी, शिव–शंकर भोले दानी, प्रभु सुन लो मेरी कहानी ।।

दीन–दयाल मेरे दुःख भंजन, तुझसे कृपा की ठानी ।

शिव शंकर भोले दानी, प्रभु सुन लो मेरी कहानी ।।

अपने धरा का हाल तो देखो, दुष्टों की दीवानी ।

जगत पिता हे चरण–शरण दो, दुष्ट भरे जो पानी ।।

शिव शंकर भोले दानी ! शिव शंकर भोले दानी, प्रभु सुन.....।।

बिलख रहा है तेरा अनुचर, आँख मे भरकर पानी ।

शिव शंकर भोले दानी, प्रभु सुन लो मेरी कहानी ।।

मन है तिहारो फूल सा कोमल नहीं कोई पाषाणी ।

शिव शंकर भोले दानी, प्रभु सुन.....

।।

विष की घाणी सन्मुख मेरे, तुम हुए अंतर्धानी ।

शिव शंकर भोले दानी, प्रभु सुन .....

.. ।।

शीश हमारो, चरण तिहारो और न कोई प्राणी ।

तेरे दर से खाली न जाये, भक्त कोई नादानी ।।

शिव शंकर भोले दानी ! शिव शंकर भोले दानी , प्रभु सुन लो मेरी कहानी ।।

किछु पल हेतु एहि लोक केऽ तिलांजली दऽ भक्तिरथ पर सवार भऽ प्रभुलोक मे विचरण कऽ आयल छलाह । सब कष्ट एकाएक विलुप्त भऽ गेलनि । ने कोनो सिकवा नै कोनो शिकायत । बस प्रेम और सिर्फ प्रेम । प्रेम ओ स्नेहक स्थापना हेतु कोनो अनशनक आवश्यकता जतय नहि छल । मन मे प्रभु के एहन दोहरी नीति पर आक्रोश भेलनि । अपन संसार मे तऽ एकदम शांति ओ प्रेम, भक्ति ओ विश्वास केर स्थापना कयने छी आ मनुक्खक लेल ! की बिगाड़ने छल मनुक्ख अहां के ? नरक सॅऽ बदतर जीवन दऽ मनुक्खक प्रतिक्रिया देखि–देखि आनंदित होइत रहैत छी । जाहि पल ओ सुःखक अनुभूति ग्रहण कऽ रहल होइत अछि ओहि पल दुःखक बीजारोपण सेहो करि रहल होयत अछि । जरूर मनुक्ख अहांक गद्दी हथियाबऽ हेतु उद्यत भेल होयत आ अहां हुनकर सम्पूर्ण प्रजाति के दंडस्वरूप कलियुग रूपी कालापानी केर आजीवन सजा सुना देलियनि ।

हरि काका के कोलाहल सुनि ध्यान भंग होईत अछि । आवाज मे रोमांच ओ उत्साह अपन पराकाष्ठा नेने छल । एना दौड़ल छलाह जेना कोनो बिछुड़ल हरिण अपन झुंड के देखि दौड़ैत अछि ।

कतेक साल बाद आई ओ लाठी के घिसिऔलनि । मुदा आब समस्या भेलनि जे सांस फूलऽ के कारण मुँह सँऽ आवाज नहि निकलि रहल छलनि । भऽ सकैत अछि मनक गुबार अतिशीघ्र कहि देबाक जल्दी होइन अथवा खुशी केऽ कारण हलक मे आवाज अटकि गेल होइन । ठामहि बैसिक' किछु क्षण मे सांस पर काबू कऽ धमाका कयलनि – अभि चुनाव जीति गेलाह । करीबी टक्कर मे यादवजी सँऽ 1969 भोंट बेसी भेटलनि ।

मुखमुद्रा विजय मुस्कान सँऽ भरि गेलनि अभि बाबू केऽ । पलक झुका कऽ ईश्वर के धन्यवाद देलनि । महसूस भेलनि सब अरमान पूर्ण भऽ गेल । सांस अटकि गेलनि । शायद एतेक टा खुशी बर्दास्त करऽ हेतु ई जर्जर शरीर असमर्थ हो । दोसर पल रक्तक किछु बूँद मुँह ओ नाक सँऽ बाहर आब' लगलनि । मुदा एहि बेरि साफ करऽ हेतु हाथ अपन स्थान सँऽ नहि हटल । शरीरक मुद्रा अविचल ओ शांत । डॉक्टर आबि चुकल छलाह, आ क्षण भरि मे निराश भऽ वापस भऽ गेलाह । अभिमन्यु तऽ प्रभुलोक के व्यवस्था देखि स्वार्थी भऽ गेलाह । मृत्यूलोक तऽ नरक अछि । नरक सँऽ स्वर्ग प्रस्थान करऽ केर अवसर किएक व्यर्थ जाय देताह । बस प्रस्थान कऽ गेलाह ।

परिवारक करूण रूदन सँऽ सम्पूर्ण ''धर्मसभा'' केऽ अधर्म पिघलि–पिघलि बहि रहल छल । पति के वियोग मे संतप्त सुलेखा ठीक ओहि स्थान पर वेसुध पड़ल छलीह जतय ओ लेटि कऽ प्राण उत्सर्ग कयलनि । सहसा सिरमा मे एक पत्र पाबि उत्सुकतावश पढ़ैत छथि –

प्रिय सुलेखा,

जिंदगी केऽ अंतिम पड़ाव पर आबि कऽ हमरा मात्र

दू तरफ सॅऽ कसक अछि । एक पारिवारिक संतुलन स्थापना केऽ प्रयास मे अपन व्यक्तिगत रिस्ता केऽ असंतुलन, जकर सीधा कुप्रभाव अहां पर पड़ि रहल अछि । दोसर जे राजनीतिक गतिविधि के सूत्रपात हम कयलहुँ ओ रूकि जायत । मुदा अपन सिद्धांत ओ स्वाभिमान रक्षा हेतु प्राण न्योछावर कोनो नया उदाहरण नहि होयत । जिंदगी केऽ कोनो मोड़ पर माया–मोह सॅऽ पूर्ण स्वतंत्र नहि भऽ सकैत छी । मुदा एहि क्रम मे हमर क्रियाकलाप अहांक प्रति अवश्य अन्याय उत्पन्न करैत अछि । जाहि हेतु हम अहां सॅऽ क्षमायाचना कऽ रहल छी । अहां एक मजबूत ओ सक्षम स्त्री छी जे परिस्थिति पर विजय प्राप्त करऽ जानैत अछि । आलोक आब समर्थ भऽ गेल अछि, अपन नीक–बेजाय बूझि सकैत अछि । अहां अपन मार्गदर्शन सॅऽ हमर कमी नहि होम’ देबैक से हम बुझैत छी । हम अहांक संगे हरदम रहब – जे अहां के हमर अधूरा कार्य सम्पन्न करऽ हेतु प्रेरणा प्रदान करैत रहत । अहां सॅऽ एकटा आओर आग्रह अछि – राजनीति केऽ हम सामाजिक गतिविधि बूझैत रहलहुँ । अहां ई सामाजिक कार्य के आगू बढ़ा हमर उपस्थिति के आभाष करैत रहब । चुनाव–प्रक्रिया दौरान अहांक दक्षता सर्वविदित भेल अछि । कोनो विकट परिस्थिति मे हम हार नहि मानलहुँ, बल्कि परिस्थिति सॅऽ लड़ि अपन मार्ग प्रशस्त कयलहुँ । एहि क्रम मे आई वर्त्तमान घड़ी हमर परीक्षा लऽ रहल अछि । एहि मे सफल होम’ हेतु अहां के सहायता अपेक्षित अछि । किएक नहि रहत – विवाहोपरांत हमर परिवारक सब जन एना मुँह फेरि लेलनि जेना कमाऊ पुत्र हेतु विवाह एक

अपराध भऽ गेल । अन्यथा दूर देश नौकरी करब महापाप थिक । सेहो सब बेस रहित अगर दूर रहि धन उपछि–उपछि कऽ घर पर भेजल गेल रहित आ अपन स्थायित्व पर ध्यान नहि देल गेल होयत । मुदा आन के उचित–अनुचित देखबाक क्रम मे अपन उचित–अनुचित देखब सर्वथा जायज अछि । एहन विकट परिस्थिति मे जखन हम अनाथ अनुभव कऽ रहल छलहुँ तऽ सिर्फ और सिर्फ अहां हमर कंधा सॅऽ कंधा मिला साथ देलहुँ । अहां सॅऽ बिलग होम' मे असीम दुःख केर अनुभव भऽ रहल अछि । परञ्च, समय के मांग अछि कि होम' बला अन्याय के जोरदार आओर प्रभावशाली विरोध करी, जकर दिशा परिस्थिति मे सुधार तरफ जाय । हमर निश्चित आशा अछि हमर प्रयास अवश्य फलदायी सिद्ध होयत । अहां सॅऽ एक बेरि फेरि क्षमायाचना अछि । हम अहांक संगे हरदम रहब – जे अहां के हमर अधुरा कार्य सम्पन्न करऽ हेतु प्रेरणा प्रदान करैत रहत ।

अहींक संबल

अभिमन्यु

पत्र पढ़ैत–पढ़ैत सुलेखा के चक्षु सॅ गंगा–जमुना प्रवाहित होयत रहैत छनि मुदा मन मे संबल अवश्य उत्पन्न होयत छनि ।

चारू भ्राता पार्थिव शरीर के कंधा दऽ रहल छलाह । विहंगम दृश्य उत्पन्न भऽ रहल छल – जेना पांचो भाई आपस मे गरा मिल रहल छथि । दुनू भावज विस्फारित नेत्र सॅऽ अभिबाबू के अनशन चौकी केर पायदान दिश ठाढ़ भऽ व्यक्तित्वक निशान ताकि रहल छलीह । एहि क्रम मे ऑखिक सूखल समुद्र मे कखन बाढ़ि आबि गेलनि ज्ञात नहि ।

संजय कुमार कर्ण

मूल रूप सँ लदहो (बिरौल), दरभंगा निवासी। अत्यंत सामान्य ओ सीमित संसाधन मध्य विद्यार्थी जीवन यापन। ल.ना.मिथिला विश्वविद्यालय सँ विज्ञान स्नातक डिग्री उपरांत रक्षा मंत्रालय अधीनस्थ सशस्त्र सेना मुख्यालय, दिल्ली मे सेवा प्रारंभ। सम्प्रति उप-निदेशक पद पर कार्यरत। सामान्य न्याय आओर मानवीय मूल्य प्रति उद्विग्नता द्वारा कानूनक अध्ययन हेतु प्रेरित भऽ दिल्ली विश्वविद्यालय सँ ली मे डिग्री प्राप्त।

समकालीन सामाजिक विसंगति पर अपन लेखनी सँ पाठकगणक ध्यान आकर्षित करऽ के प्रयास प्रथम ध्येय। अत्याधुनिकता केर सर्वाधिक प्रकोप मनुष्य मे संवेदना केर ह्रास अछि। प्रकति ओ मनुष्य के अन्नयोन्याश्रय संबंध तक कुप्रभावित भेल अछि। भौतिकतावादक एहि दौर मे सामाज सुधार आंदोलन के पुर्नस्थापना मे विश्वास। उपन्यास लेखन मे पदार्पण करैत मैथिल समाज मे व्याप्त स्वार्थ, ईर्ष्या आओर अंधविश्वास केर परिणामस्वरूप पारिवारिक विघटन पर वर्त्तमान उपन्यास मे मार्मिकता सँ चिंतन।

वर्त्तमान मे मैथिली ओ हिंदी उपन्यास लेखन मे तल्लीन ।

संपर्क : 9868739967 • ई-मेल : karnsk301@gmail.com

अनुराधा प्रकाशन
1193, पंखा रोड, नांगल राया, निकट डी2ए
जनकपुरी, नई दिल्ली-110046
फोन : 011-28520555, 9213135921, 9873080170
www.anuradhaprakashan.com

ISBN 978-93-85083-42-6
₹ 250.00